पुरुषोत्तम मास विशेषांक
जून 2015
मूल्य - 30/-
वर्ष 5
अंक 9
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
श्री विष्णु साधना
धर्मराज साधना
स्तम्भन साधना
धनप्रदाता-
जैन तंत्र की पद्मावती साधना

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

वर्ष 5	वर्ष 9
मई 2015	पृष्ठ 88
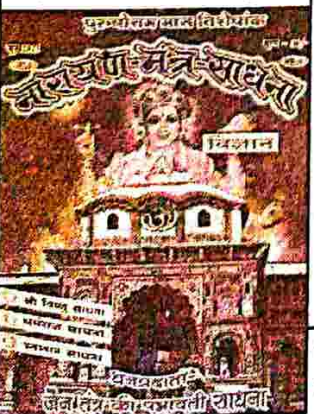
साधना

विशेष

दीक्षा

स्तोत्र

आयुर्वेद

योग

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक श्री अरविन्द श्रीमाली द्वारा अभिनव प्रिन्टर्स-K-37, उद्योग नगर, इण्डस्ट्रियल एरिया रोहतक रोड, दिल्ली-41 से मुद्रित तथा 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' कार्यालय हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रतिः 30/-
वार्षिकः 315/-

:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-27352248, 011-27356700
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन : 0291-2433623, 2432209, 2432010
WWW address ; http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 315/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

प्रेमाञ्जनच्छुरित भक्तिविलोचनेन,
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।
यं श्यामसुन्दरमचिन्त्यगुणस्वरूपम्,
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

प्रेम रूपी अञ्जन से सुशोभित, भक्ति रूपी नेत्र से संत जन अपने हृदय में दिव्य गुण तथा स्वरूप वाले जिस श्याम सुन्दर का दर्शन किया करते हैं, उस आदि पुरुष गोविन्द का मैं भाव पूर्ण हृदय से नमन करता हूँ।

☆ उनकी करुणा ☆

गोवर्धन पर्वत को तो कृष्ण ने उठाया था उन्मत्त इन्द्र के मान भंग के लिए, ग्वाल-बाल भी लाठियां टेके थे। लाठियों और पर्वत का तो कोई सामंजस्य ही नहीं बैठता, फिर भी लाठियां टेकी गईं। ग्वालों के मन में अहं की तुष्टि हुई, कि हमने गोवर्धन को उठाया और इन्द्र को परास्त किया, आश्चर्य तो यह है कि जिसने गोवर्धन को उठाया, वह कृष्ण बिल्कुल शांत है, उसमें कोई गर्वोक्ति नहीं है, हलचल भी नहीं है, इतिहास में एक घटना घटी और अमर हो गई।

जब भी कोई दिव्य चेतना लोक कल्याण हेतु पृथ्वी लोक में अवतरित होती है, तब उनके अनंत कार्यों को आयाम पूर्णता देने के लिए अनेक देवता, किन्नर, गंधर्व आदि मानव रूप में आते हैं उनके सहचर के रूप में, कर्म-पात्र बन कर, लीला पात्र बन कर। अनेक ऋषि-मुनि-तपस्वी भी सान्निध्य से कृतकृत्य होते हैं उस प्रथम पुरुष के साधारण सी लगने वाली मानव सुलभ लीलाओं को देखते हुए।

सही तो यही है कि वह सतत् गमनशील उदात्त पराशक्ति है, नवनवोन्मेष उसका स्वभाव है, जो अपने अनन्त कार्यों को पूर्णता देने के लिए स्वतः ही सक्षम होती है, फिर भी ग्वालों के मन में अहं तो था ही एवं कृष्ण की अंतरंग सेवा में आबद्ध सतत सहचारों के मन में भी अहं या गर्व की विष-बेल पनपी, उनकी मानव लीलाओं को देखकर एवं उनकी शक्ति का आकलन नहीं कर पाने से।

उन्होंने हमें अपना बनाया, अपने श्री चरणों में रह कर सेवा का सुअवसर दिया, लाखों-करोड़ों में हमें चुना, यही हमारा सौभाग्य है, यही उनकी करुणा है, इससे अधिक और कुछ भी नहीं है।

मृत्योर्मा अमृतं गमय

आज का यह प्रवचन अपने आपमें अत्यंत महत्वपूर्ण है, महत्वपूर्ण इसलिये कि संसार के जटिल प्रश्नों में से एक प्रश्न है जिसे हम सुलझाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, और यह प्रश्न हजारों-हजारों वर्षों से भारतीय ऋषियों, महर्षियों, योगियों, तपस्वियों, साधुओं, संन्यासियों और वैज्ञानिकों का मस्तिष्क मंथन करता रहा है कि 'मृत्यु क्या है?' और 'अमृत्यु क्या है? -

क्या मृत्यु से परे भी कोई चीज है? क्या मृत्यु असंभव है? क्या मृत्यु को हम टाल सकते हैं? और क्या कोई युक्ति या साधना या कोई स्थिति या कोई तरकीब है जिससे हम **'मृत्योर्मा अमृतंगमय'** उस उपनिषद् की इस पंक्ति को सही कर सकें चरितार्थ कर सकें। उपनिषद् में तो दो टूक शब्दों में इस पंक्ति को स्पष्ट किया गया है। **'मृत्योर्मा अमृतं गमय'**।

मनुष्य को प्रयत्न करना चाहिये कि मृत्यु से अमृत्यु की ओर अग्रसर हो। उसका लक्ष्य, उसका रास्ता, उसका पथ अमृत्यु की ओर हो। इसका मतलब यह है कि उपनिषद् भी इस बात को स्वीकार करता है कि मृत्यु तो संभव है ही। तभी उसमें कहा है कि मृत्यु से अमृत्यु की ओर तुम्हें अग्रसर होना है। क्योंकि यह मृत्यु तुम्हारे जीवन का हिस्सा है, पार्ट है। तुम चाहो या नहीं चाहो इस मृत्यु का तुम्हें एक न एक बार साथ तो देना ही होगा। परंतु यदि ऋषि ने उपनिषद्कार से इस पंक्ति के आधे हिस्से में मृत्यु शब्द का प्रयोग किया है, तो आधे हिस्से में इस बात का भी प्रयोग किया है कि कोई ऐसी स्थिति तो जरूर है जिससे हम अमृत्यु की ओर अग्रसर हो सके।

कोई ऐसी स्थिति आ सकती है जहां हम अमृत्यु की ओर बढ़ सकें, हमारी मृत्यु नहीं हो, हम पूर्ण रूप से अमर हो सकें, जीवित रह सकें, लम्बे वर्षों तक जीवन जी सकें, स्वस्थ रह सकें। दोनों ही स्थितियां हमारे सामने एक पेचीदा प्रश्न लिये

खड़ी रहती हैं और इस मृत्यु के लिये, भारतीय दर्शन, योग, मीमांसा, शास्त्र, वेद, पुराण इन सभी में मंथन चिंतन किया गया है। वैज्ञानिकों ने भी अपने तरीके से इस पर चिंतन और विचार किया है। मनुष्य वृद्ध क्यों होता है? मनुष्य मृत्यु को प्राप्त क्यों होता है? ऐसी क्या चीज है मनुष्य के शरीर में जिसके बने रहने से वो जीवित रहता है और जिसके चले जाने पर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है? क्योंकि मृत्यु और अमृत्यु के बीच में शरीर के अंदर गुणात्मक अंतर तो नहीं आता, एक सेकण्ड पहले जो जीवित था, उसके हाथ-पांव, आंख, कान-नाक सही सलामत थे और उसके एक सेकण्ड के बाद वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है और उसमें भी उसके हाथ-पांव, आंख, नाक-कान सही सलामत होते हैं। प्रश्न उठता है कि लोग ये बात कहते हैं कि हृदय का धड़कना बंद हो जाता है तो मृत्यु हो जाती है। परंतु ऐसे कई योगी हैं जो कई कई घंटों तक हृदय की धड़कन को रोक देते हैं और चार-छः घंटे हृदय की धड़कन होती ही नहीं तो क्या वो मृत्यु को प्राप्त हो गये? इसलिये यह परिभाषा तो मान्य नहीं हो सकती कि हृदय की धड़कन बंद होने से आदमी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। हृदय की धड़कन तो कई कारणों से बंद हो सकती है। जो हमारे यंत्रों के माध्यम से सुनाई नहीं दे सकती। प्रश्न यह नहीं है। प्रश्न यह है कि मृत्यु यदि हो जाती है तब तो वापिस पुनः जन्म स्वाभाविक है। हमारे शास्त्र इस बारे में दो टूक शब्दों में कहते हैं कि जो पैदा होता है उसकी मृत्यु होती ही है। चाहे वह पशु-पक्षी हो, चाहे वह क़ीट-पतंग हो, चाहे मनुष्य हो, चाहे वनस्पति हो, पेड़-पौधे हों। जो उत्पन्न होगा, वह युवा भी होगा, वृद्ध भी होगा, मृत्यु को प्राप्त भी होगा। क्योंकि मृत्यु के नींव पर ही, वापिस नये जीव का जन्म होता है। यदि मृत्यु हो ही नहीं तो यह देश, यह समाज, यह राष्ट्र अपने आप में कितना दुःखी, परेशान हो जायेगा, संतप्त हो जायेगा, इसकी कल्पना की जा सकती है। कल्पना की जा सकती है कि हजारों-हजारों, करोड़ों-करोड़ों, वृद्ध घूमते नजर आयेंगे, बीमार नजर आयेंगे, सिसकते हुए, दुःखी, परेशान, पीड़ित नजर आयेंगे। कफ, खांसी, थूक से संतप्त नजर आयेंगे और नई पीढ़ी को खड़ा होने के लिये पृथ्वी पर कहीं जमीन नजर नहीं आयेगी। कहां खड़े होंगे? क्या करेंगे? किस प्रकार की स्थिति बनेगी? अगर सारे व्यक्ति ही जीवित रहेंगे तब तो यह राष्ट्र, यह पूरा देश और पूरा विश्व अपने आपमें असक्त वृद्ध, कमजोर और दुर्बल सा दिखाई देने लग जायेगा। उसमें कोई नवीनता नहीं होगी। कुछ हलचल नहीं होगी, कुछ तूफान नहीं होगा, कोई जोश नहीं होगा,

नवजवानी नहीं होगी, यौवन नहीं होगा यह सब कुछ होगा ही नहीं क्योंकि उन जवानों को पैदा होने के लिये, उन बालकों को पैदा होने के लिये जगह की कमी पड़ जायेगी। कहां से इतनी वनस्पति आयेगी? कहां से इतना खाद्य पदार्थ आयेगा? कहां से उनको जीवित रखने की क्रिया सम्पन्न हो पायेगी? कहां से उनको धूप-पानी-भोजन की व्यवस्था हो पायेगी? इसलिये मृत्यु की दीवार पर एक अमृत्यु का पौधा रोपा जा सकता है। मृत्यु की भुक्ति पर जन्म का एक सवेरा होता है, यह प्रश्न एक अलग है कि क्या मृत्यु के बाद भी हमारा तत्व रहता है कि नहीं। यह मृत्यु के परे क्या चीज है? यह विषय एक अलग विषय है। क्योंकि यदि मृत्यु हमारे हाथ में नहीं है, तो फिर जन्म भी हमारे हाथ में नहीं है। दोनों स्थितियों में हम लाचार है, बेबस हैं। हम किस समय मृत्यु को प्राप्त हो जायेंगे यह हमारे हाथ में नहीं हैं हमारे पास ऐसी कोई साधना सिद्धि या विज्ञान नहीं है, जिसके माध्यम से हम दो टूक शब्दों में कह सकेंगे कि हम इतने दिन तक जीवित रहेंगे ही। मृत्यु हमें स्पर्श नहीं कर सकेगी, हां यह अलग बात है कि कुछ विशिष्ट साधनाएं ऐसी है कुछ अद्वितीय साधनाएं ऐसी हैं जिसके माध्यम से इच्छामृत्यु प्राप्त की जा सकती है। चाहे जितने समय तक जीवित रहा जा सकता है। परंतु वह तो एक रेयर है वह तो एक विशिष्टता है इसलिये मैंने कहा कि मृत्यु पर हमारा बस नहीं है। मृत्यु पर हमारा नियंत्रण नहीं है और इस मृत्यु पर वशिष्ठ, अत्रि, कणाद, विश्वामित्र, राम और कृष्ण का भी कोई अधिकार नहीं रहा है। उनको भी मृत्यु को वरण करना ही पड़ा, मगर मृत्यु के बाद भी उस प्राणी का अस्तित्व इस भूमण्डल पर और पितृलोक में बना रहता है। एक विरल रूप में, एक सांकेतिक रूप में, एक सूक्ष्म रूप में और वह प्राणी निरंतर इस बात के लिये प्रयत्नशील रहता है, जिसकी मृत्यु हो चुकी है और जिसका केवल प्राण ही इस वायुमण्डल में व्याप्त है। जिसका प्राण ही सूक्ष्म शरीर धारण किये हुए है, यत्र-तत्र विचरण करता रहता है। इस बात के लिये निरंतर प्रत्यनशील रहता है कि वापिस वह कैसा जन्म लें।

जन्म लेने के लिये बहुत धक्का - मुक्की है, बहुत जोश खरोश है क्योंकि करोड़ों-करोड़ों प्राणी इस वायुमण्डल में विचरण करते रहते हैं और जन्म लेने की स्थिति बहुत कम है। कुछ ही गर्भ स्पष्ट होते हैं, जहां जन्म लिया जा सकता है। उन करोड़ों व्यक्तियों में, उन करोड़ों प्राणियों में आपस में रेलम-पेल होती रहती है, धक्का-मुकी होती रहती है, एक-दूसरे को ठेलते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक जीवात्मा इस बात के लिये प्रयत्न करता रहता है कि यह जो गर्भ खुला है, इस गर्भ में मैं जन्म ले लूं, इसमें प्रवेश कर लूं और इस धक्का-मुकी में और इस जोर-जबरदस्ती में दुष्ट आत्माएं ज्यादा सुविधाएं प्राप्त कर लेती हैं। ये ज्यादा पहले जन्म ले लेती हैं। जो चैतन्य हैं, सरल हैं, जो निष्प्राण हैं, जो कपट रहित हैं, जो धक्का-मुकी से परे हैं वे सब पीछे खड़े रहते हैं। वे इस
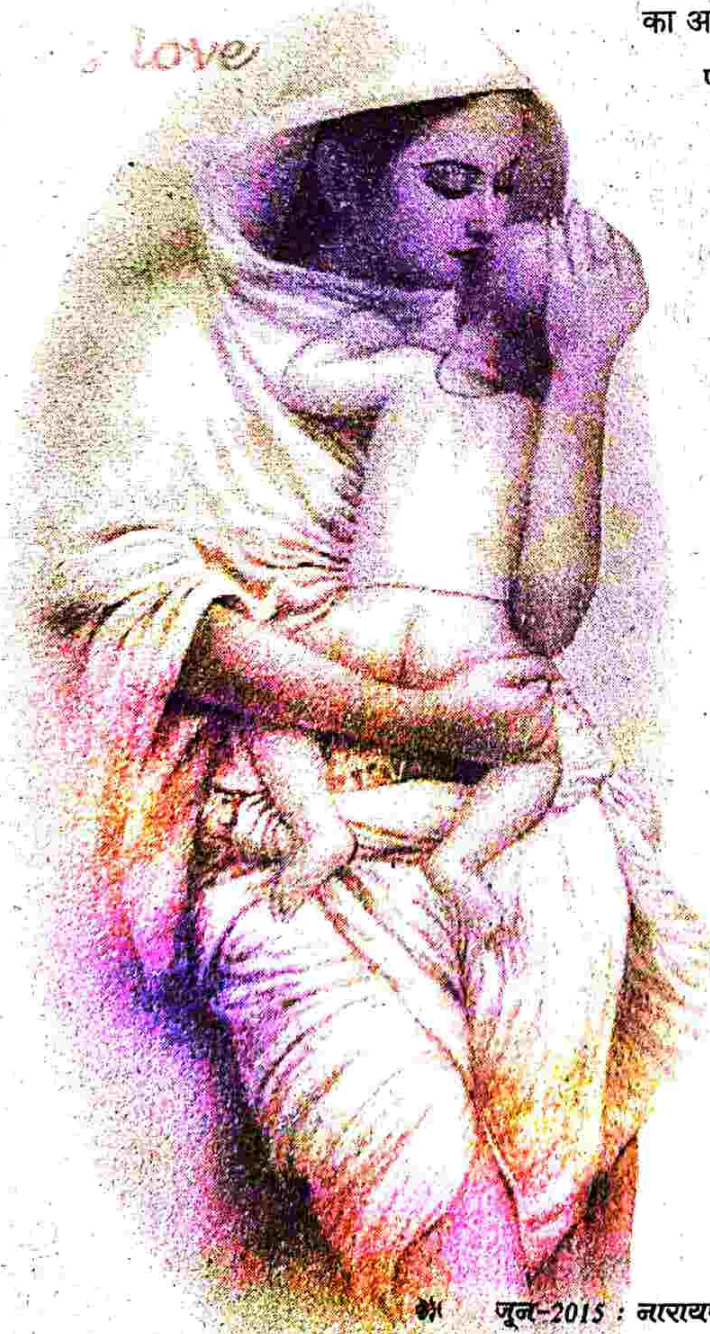
प्रकार से गुंडागर्दी नहीं कर सकते, धक्का-मुक्की नहीं कर सकते। इस प्रकार से जबरदस्ती किसी गर्भ में प्रवेश नहीं कर सकते। वे तो इंतजार करते रहते हैं इसीलिये इस पृथ्वी पर दुष्ट और पापी व्यक्तियों का जन्म ज्यादा होने लगा है। क्योंकि उन सरल और निष्प्रह ऋषि तुल्य योगियों, विचारकों और विद्वानों, कपट रहित प्राणियों का जन्म होना कठिन सा होने लगा है।

तो मैंने कहा कि यह हमारे बस में नहीं है, मृत्यु हमारे बस में नहीं है और जन्म भी हमारे बस में नहीं है परंतु जो उच्च कोटि की साधनाएं सम्पन्न करते हैं, जो **'मृत्योंमा अमृतंगमय'** साधना को सम्पन्न कर लेते हैं। उनके हाथ में होता है कि वह किस क्षण मृत्यु को प्राप्त हों, कहां मृत्यु को प्राप्त हों, किस स्थिति में मृत्यु को प्राप्त हों और किस तरीके से मृत्यु को वरण करें। **क्योंकि मृत्यु तो जीवन का श्रृंगार है। मृत्यु भय नहीं है, मृत्यु किसी प्रकार से कष्टदायक नहीं है। मृत्यु तो एक प्रकार से निद्रा है जिस प्रकार से रोज रात को हम सोते हैं और नींद में, नींद के आगोश में होते हैं, उस समय हमें कोई होश नहीं होता है, कोई ज्ञान नहीं होता है, कोई चेतना नहीं रहती है, हम कहां हैं? किस प्रकार से हैं? हमारे कपड़ों का हमें ध्यान नहीं रहता, हम नंगे है या सही है इसका भी हमें ध्यान नहीं रहता और यदि हम नींद में होते हैं और कोई दुष्ट व्यक्ति चाकू लेकर हमारे सिहराने खड़ा हो जाता है और वह हमें चाकू घोप देता है तब भी हमें होश नहीं रहता ज्ञान नहीं रहता कि कोई हमें मारने के लिये उदित हुआ है। इसका मतलब यह हुआ हम नित्य मृत्यु को प्राप्त होते हैं।**

निद्रा अपने आपमें मृत्यु है और नित्य वापिस सुबह जन्म लेते हैं, नित्य रात्रि मृत्यु को प्राप्त करते हैं। मृत्यु का मतलब है अपने आपमें भूल जाने की क्रिया अपने अस्तित्व को भूल जाने की क्रिया, अपने प्राणों को भूल जाने की क्रिया, अपनी चैतन्यता को भूल जाने की क्रिया। मगर यह भूल जाने की क्रिया कुछ घण्टों की होती है, जिसको हम नींद कहते हैं और वह भूल जाने की क्रिया काफी लम्बे अरसे तक की होती है। इसलिये उसें मृत्यु कहते हैं। इस निद्रा में और मृत्यु में कोई विशेष अंतर नहीं है और इसीलिये मार्कण्डेय पुराण में स्पष्ट कहा गया है।

या देवी सर्व भूतेषु, निद्रा रूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

क्योंकि निद्रा अपने आपमें मृत्यु का पूर्वाभ्यास है, मैंने जैसे बताया कि कुछ विशिष्ट साधनाएं है। जिसके माध्यम से हम इस मृत्यु पर नियंत्रण प्राप्त कर सकते हैं। विजय प्राप्त करना एक अलग चीज है, नियंत्रण प्राप्त करने का मतलब है कि जहां चाहें, जिस उम्र में चाहें मृत्यु को वरण करें।

यदि हम चाहे सौ साल की आयु प्राप्त करें तो निश्चित ही सौ साल की आयु प्राप्त कर सकते हैं। 120 साल, 200 साल, 500 साल, हम जीवित रह सकते हैं। इस तरह पूर्ण आयु भी प्राप्त कर सकते हैं। यह हमारे हाथ में है। यदि हम चाहें तो उन साधनाओं के माध्यम से, जीवन को पूर्णता की ओर अग्रसर कर सकते हैं और जिस प्रकार से मृत्यु, हमारी साधनाओं के माध्यम से हमारे हाथ में रहती है, हमारी इच्छाओं पर निर्भर रहती है। ठीक उसी प्रकार से मृत्यु के बाद में भी हमारे पास हमारा अस्तित्व, हमारी चैतन्यता बनी रहती है कि हम इस ब्रह्माण्ड में कहां हैं प्राणियों के किस लोक में हैं, भू-लोक में हैं, पितृ लोक में हैं, राक्षस लोक में

हैं, गंधर्व लोक में हैं किस लोक में हैं? और इन सारे लोकों में हम एक सूक्ष्म अंगूठे के आकार के प्राणी के रूप में बने रहते है।

इसलिये प्राणियों को अंगुष्ठरुपा कहा गया है। यानि यह पूरा शरीर एक अंगूठे के आकार का बन जाता है और ऐसे अंगूठे के आकार के प्राणी एवं जीवात्माएं करोड़ों-करोड़ों इस आत्म मण्डल में विचरण करती रहती हैं। जहां हमारी दृष्टि नहीं जाती और यदि हम इस मृत्यु लोक से थोड़ा सा ऊपर उठ कर देखें तो करोड़ों आत्माएं जो मृत्यु को प्राप्त हो चुकी हैं बराबर भटकती रहती हैं और उन सबका एक मात्र लक्ष्य यही होता है कि वह वापिस जन्म लें। मगर ज़न्म लेना तो उनके हाथ में है ही नहीं। जैसा कि मैंने बताया कि वहां पर भी उतनी ही जोर जबरदस्ती है, कोई ऐसा संकेत नहीं है, कोई ऐसी एक नियंत्रण रेखा नहीं है, कोई ऐसा सिस्टम नहीं है कि एक के बाद एक जन्म लेता रहे, ऐसा कोई संभव नहीं है। जिसको जो स्थिति बनती है वो वैसे जन्म ले लेता है। ठीक उसी प्रकार से कि जहां बलवान होते हैं वे किसी भी जमीन पर कब्जा कर लेते हैं और जो बेचारा जमीन का मालिक होता है वो टुकुर-टुकुर ताकता रहता है। ठीक उसी प्रकार से जो दुष्ट ताकतवर आत्माएं होती हैं वे ठेलम-ठेल करके, धक्का-मुक्की करके, जो गर्भ खुलता है उसमें प्रवेश कर लेती हैं और जन्म ले लेती हैं और जो देवआत्माएं होती हैं, सीधे सरल ऋषि तुल्य व्यक्तित्व होते हैं वह चुपचाप खड़े रहते हैं, 2 साल, 5 साल, 10 साल, 20 साल, उनका जन्म होना जरा कठिन होने लगा है। इसलिये इस पृथ्वी पर दुष्ट आत्माएं ज्यादा जन्म लेने लगी है। इसलिये इस पृथ्वी पर अधर्म ज्यादा फैला है, इसलिये इस पृथ्वी पर व्यभिचार ज्यादा फैला है, इसं पृथ्वी पर छल-कपट, झूठ ज्यादा फैला हुआ है। ये इसलिये हो रहा है क्योंकि इस पृथ्वी पर दुष्ट और पापी आत्माएं ज्यादा प्रमाण में जन्म ले रही हैं। उनका जन्म ज्यादा होने लगा है।

क्या हम इस स्थिति को अपने-आप में टाल सकते हैं। यह तो अपने आप में पेचीदा और बहुत दुःखदायी स्थिति है कि हमने अपने जीवन को इतने सरल स्तर पर व्यतीत किया और इस पूरे जीवन को व्यतीत करने के बाद भी हमें कई वर्षो तक इस आत्मा में भटकना पड़ता है और वापिस जन्म नहीं ले पाते। जबकि हम चाहते है कि हमारा जन्म हो और जन्म लेने के बाद फिर हम ईश्वर चिंतन करें, जन्म लेने के बाद फिर हम साधनाएं करें, फिर हम आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करे, फिर हम गुरु चरणों में बैठें, हम फिर इस मृत्यु लोक के प्राणियों की सेवा करें, उनको सहयोग करें, उनकी सहायता करें। मगर यह तब हो सकता है जब आप जन्म लें। यदि हम जन्म ही नहीं ले सकते, तब यह आध्यात्मिक चिंतन और साधना, ये सब हमारे लिये दुराग्रह बन गये हैं। इसलिये कुछ विशिष्ट आत्माएं, यदि इस जीवन में ही साधनाएं सम्पन्न कर लेती है तो उनको अपनी चेतना का पूरा ज्ञान रहता है। उनको ज्ञान रहता है कि मैं कहां था, किस रूप में था, पहले जीवन में कौनसी साधनाएं सम्पन्न की थी, कहां जन्म लिया था, किस प्रकार से जन्म लिया था? और उसको उस साधना की वजह से ही यह भी चैतन्यता रहती है कि मुझे जल्दी से जल्दी जन्म लेना है। उसे इस बात का भी ध्यान रहता है कि मैं उच्चकोटि के गर्भ को ही चुनूं। अभी तक उन प्राणियों ने या मैं यूं कहूं कि मृत्यु लोक के जो नर और नारी हैं, पति-पत्नी हैं उनके पास ऐसी कोई शक्ति, ऐसा कोई सामर्थ्य
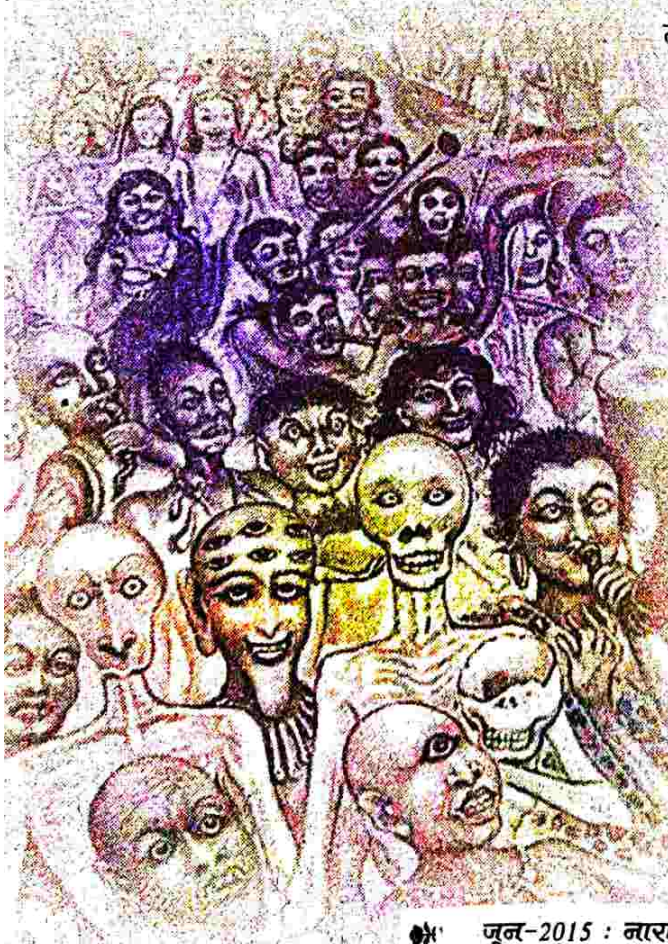
नहीं है कि वह उत्तम कुल के प्राणी को ही जन्म दें या किसी विशिष्ट योगी को ही अपने गर्भ में प्रवेश दें। उनके पास कोई साधना नहीं है। उस समय, जिस समय गर्भ खुला रहता है उस समय कोई भी दुष्ट आत्मा या अच्छी आत्मा गर्भ में प्रवेश कर जाती है। उस गर्भ को धारण करना उसकी मजबूरी हो जाती है। ये हमारे जीवन की बड़ी विडम्बना है, यह हमारे जीवन की न्यूनता है, ये हमारे ज़ीवन.की कमी है। इसलिये यह बहुत पेचीदा स्थिति है क्योंकि मृत्यु पर हमारा नियंत्रण नहीं है। हम जिस प्रकार के प्राणियों को हमारे गर्भ में धारण करना चाहते हैं, उस पर भी हमारा नियंत्रण नहीं है। जो भी दुष्ट और पापी आत्मा हमारे गर्भ में प्रवेश कर लेती है, उसी को हमें गर्भ में प्रवेश देना पड़ता है। उसी को पैदा करना पड़ता है, उसी को बड़ा करना पड़ता है और बड़ा होने के बाद वह उसी प्रकार से अपने माँ-बाप को गालियां देता है, समाज विरोधी कार्य करता है और अपना नाम और अपने माँ-बाप क नाम कलंकित कर देता है। इतना कष्ट सहन करने के बाद दुःख देखने के बाद, गर्भ में नौ महीने धारण करने के बाद, उसको जन्म देने के बाद, उसकी पूरी परवरिश करने के बाद भी हमें यही दुःख भोगना है तो यह हमारे जीवन की विडम्बना है, यह हमारे जीवन की कमी है और इस पर मनुष्य चिंतन नहीं करता, विचार नहीं करता, विज्ञान इस प्रश्न को नहीं सुलझा रहा है। विज्ञान इस प्रश्न को सुलझा भी नहीं सकता।

इस प्रश्न को सुलझाने के लिए ज्ञान का सहारा लेना पड़ेगा, साधना का सहारा लेना पड़ेगा, आराधना का सहारा लेना पड़ेगा। यहां ये तीन प्रश्न हमारे सामने खड़े होते हैं। एक प्रश्न तो यह कि क्या हम जितने समय तक चाहें जीवित रह सकते हैं और जीवित रहने का मतलब यह है कि क्या स्वस्थ जीवित रह सकते हैं?

जीवित रहने का तात्पर्य रोग रहित जीवन हैं और यदि हम जीवित हैं, मरे हुए से हैं, बीमार हैं, अपंग हैं, लाचार हैं, खाट पर पड़े हुए हैं और दूसरों पर आश्रित हैं तो वह मूल में जीवन नहीं है। वह जीवन मृत्यु के समान है। जीवित होने का तात्पर्य, स्वस्थ तन्दुरूस्त और कायाकल्प से युक्त जीवन हो, बलवान हो, पौरुषवान हो, क्षमतावान हो और इसका उत्तर मेरे पास यह है कि हम निश्चय ही स्वस्थ जीवित रह सकते हैं। जितने समय तक चाहें जीवित रह सकते हैं। 50 साल, 60 साल, 80 साल, 100 साल, 200 साल, 300 साल, 500 साल, हम जीवित रह सकते हैं और निश्चित रूप से जीवित रह सकते हैं। गारण्टी के साथ रह सकते हैं। स्वस्थ-सुन्दर, तन्दुरस्ती के साथ और पूर्ण चैतन्यता के साथ और पूर्ण यौवन स्फूर्ति के साथ, **मगर इसके लिये मृत्योंमा अमृतंगमय साधना सम्पन्न करना आवश्यक है।**

यह जो **मृत्योंमा साधना** है। उस साधना को सम्पन्न करने से शरीर में एक गुणात्मक रूप में अंतर आ जाता है। एक परिवर्तन आ जाता है जिस प्रकारसे एक बैटरी जो चार्ज की हुई बैटरी है हम यूज करते हैं। कुछ समय बाद उस बैटरी के अंदर की पॉवर समाप्त हो जाती है और जब समाप्त हो जती है तो उसे वापिस चार्ज करना पड़ता है। चार्ज करने के बाद वह बैटरी वापिस उसी प्रकार से उपयोगी बन जाती है। ठीक उसी प्रकार से शरीर की शक्ति दिन-प्रतिदिन क्षीण होती रहती है और क्षीण होते-होते एक स्थिति ऐसी आती है कि शरीर की बैटरी समाप्त हो जाती है। जिसको मृत्यु कहते हैं और यदि हम उसको वापिस चार्ज करने की क्षमता प्राप्त कर सकें, कोई ऐसा ज्ञान, कोई ऐसी चेतना, कोई ऐसी साधना हो, जिससे हम वापिस

अपने आप को चार्ज कर सकें। फिर हम 60-70 साल वापिस जी सकते हैं। जब ये बैटरी समाप्त हो जाये, फिर उसे चार्ज कर लें, फिर हम 60-70 साल जीवित रह सकते हैं। जिस प्रकार से बैटरी डिस्चार्ज होती है। ठीक उसी प्रकार से शरीर की शक्ति शनैः शनैःक्षीण होती रहती है और क्षीण होते-होते एक स्टेज ऐसी आती है कि वह बैटरी, शरीर की बैटरी समाप्त हो जाती है। जिसको हम मृत्यु कहते हैं।

मृत्योर्मा अमृतंगमय साधना जीवन की श्रेष्ठ, अद्भुत और उत्मत्त साधना है। जिसे योगियों ने, ऋषियों ने स्वीकार किया है। सिद्धाश्रम अपने आपमें अति-दुर्लभ और महत्वपूर्ण संस्थान है जो आध्यात्मिक जीवन का एक केन्द्र बिन्दु है। और जहां से पूर्ण विश्व का आध्यात्मिक जीवन संचलित होता है, क्योंकि विश्व जब तक जीवित है, जब तक भौतिकता और आध्यात्मिकता का बराबर सुखद संबंध रहे, बैलेन्स रहे। ज्योंहि यह बैलेन्स बिगड़ता है तो यह विश्व अपने आपमें प्रलय की स्टेज में चला जाता है। प्रलय हो जाता है, सब कुछ समाप्त हो जाता है। जिस समय भौतिकता बहुत अधिक बढ़ जायेगी। चारों तरफ बम गिरेंगे प्रत्येक देश एक दूसरे पर आक्रमण करेगा, एक देश दूसरे देश पर परमाणु बम गिरायेंगे और कोई भी देश बचेगा नहीं। न बम गिराने वाला और न बम झेलने वाला और इसी को प्रलय कहते हैं। और यदि आध्यात्मिकता का ही बाहुल्य हो जाये और भौतिकता जीवन में रहे ही नहीं तब भी प्रलय हो जायेगा। इसलिये इन दोनों का समन्वय होना जरूरी है। मगर इस भौतिकता के लिये कुछ प्रयत्न नहीं करना पड़ता, झूठ के लिये, हिंसा के लिये, छल के लिये, कपट के लिये कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता, वह तो एक सामान्य सी बात है।

मनुष्य की दुःप्रवृतियां तो अपने आप में जन्म लेती है उनको बैलैन्स करने के लिये सिद्धाश्रम अपने आपमें कुछ विशिष्ट योगियों को, कुछ विशिष्ट महात्माओं को इस मृत्यु लोक में उन प्राणियों के बीच भेजता है। वे चाहे राम हो, वे चाहे कृष्ण हो, वे चाहे बुद्ध हो, वे चाहे महावीर शंकराचार्य हो, चाहे ईसामसीह हो, चाहे सुकरात हो वे अपने ज्ञान के संदेश के माध्यम से, अपनी चेतना के संदेश के माध्यम से अपनी पवित्रता, अपनी विद्वता के माध्यम से उन लोगों के अंदर ज्ञान और चेतना पैदा करते हैं। यद्यपि इस तरह की चेतना पैदा करने वालों को बहुत सी गालियां मिलती हैं। क्योंकि वे अंधे हैं, वे भौतिकताओं से ग्रस्त हैं और उनके पास झूठ, छल और कपट के अलावा और कोई रास्ता नहीं है और वो जब इस प्रकार की बातें सुनते हैं तब वो सोचते हैं कि उनके अधिकारों पर हनन है। यह व्यक्ति हमारे जीवन की पूरी जमा पूंजी को समाप्त कर रहा है। हमारे स्वार्थों पर चोट कर रहा है, एक प्रकार से उन्हें अपने गुरूर का हनन होते हुए दिखाई देता है। इसलिये उसको गालियां दी जाती है। मगर उनके समाप्त कर देने से वह समाप्त नहीं हो जाता। देह तो टूट जाती है, देह तो गिर जाती है। मगर अंगुष्ठ मात्र के प्राण पुनः नई देह धारण करके उस सिद्धाश्रम में जन्म लेते हैं या सिद्धाश्रम में वापिस संचालित करने लग जाते हैं। इसके लिये तो कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता। यह तो इसी प्रकार से है जैसे कुर्ता पहना और यदि कुर्ता घिस गया है या पुराना हो गया है, मैंने उस कुर्ते को उतार दिया और दूसरा कुर्ता धारण कर लिया। इस कपड़े बदलने से कोई बहुत बड़ा अंतर

नहीं आया। ठीक उसी प्रकार से यदि यह शरीर घिस जाता है, यह कमजोर पड़ जाता हैं, तो शरीर की नाड़ियां, अंग-प्रत्यंग शिथिल हो जाते हैं, तो इस शरीर को उस कुर्ते की तरह छोड़ देते हैं और दूसरा नया शरीर धारण कर लेते हैं। ऐसा का ऐसा ही शरीर, ऐसी की ऐसी आंखें और नाक, हाथ-पाँव, लम्बाई, चौड़ाई, ज्यों की त्यों अपने आपमें स्वत: ही प्राप्त हो जाती है। जिस प्रकार से अपने शरीर की ऊपर की चमड़ी किसी चोट से छिल जाती है, उसी जगह अपने आप स्वत: दूसरी चमड़ी आ जाती है। उसी प्रकार से यह देह गिरती है, उसी जगह दूसरी देह स्वत: अपने आप में आ जती है। यह तो साधना के बल पर संभव है और इसीलिये उस सिद्धाश्रम में योगियों को 100, 200, 500, 1000 वर्षों की आयु प्राप्त है। वे इस समय भी सिद्धाश्रम में विद्यमान हैं।

कोई भी अपनी आंखों से उस सिद्धाश्रम के योगियों को देख सकता है, अनुभव कर सकता है, उनके पास बैठ सकता है, उनके प्रवचन सुन सकता है, उनके ज्ञान और चेतना को अपने हृदय में उतार सकता है और कोई भी व्यक्ति आज भी यदि चाहे राम के पास बैठ करके, युद्ध कला के बारे में सीख सकता है, कृष्ण के पास बैठ करके गीता का संदेश सुन सकता है और शंकराचार्य के पास बैठ करके शांकरभाष्य को वापिस उनके मुख से सुन सकता है। यह तो कोई कठिन नहीं है, यह तो कोई असंभव नहीं है, यह तो आपको उस स्टेज पर पहुंचने की जरूरत है, आपकी क्षमता उस स्टेज पर पहुंचने की हो, आपके पास एक समर्थ और योग्य गुरु हो।

समर्थ और योग्य गुरु का मतलब यह है कि उसको ऐसी सिद्धियां प्राप्त हो, ऐसी समर्थता प्राप्त हो और जो ले जा सके आपको अपने साथ सिद्धाश्रम में, दिखा सके सिद्धाश्रम के योगियों को, उनके पास बैठा सके, उनका खुद भी सम्मान हो, वह खुद भी अपने आपमें ऊंचाई पर पहुंचा हुआ हो। ऐसा नहीं है कि ऐसा गुरु इस पृथ्वी पर है ही नहीं, है यह अलग बात है **कि हमारी बुद्धि ऐसे व्यक्ति के पास बैठते हुए भी आलोचना, झूठ और छल-कपट में लिप्त रहती हैं। एक-एक क्षण हम दूसरे कार्यों में व्यतीत कर देते हैं। मगर उन गुरु को हम न पहचान पाते हैं, न उनके पास बैठ करके उस आनन्द को प्राप्त कर पाते हैं। हमें प्रश्न करने चाहिए, वो तो प्रश्न हम करते ही नहीं, जो कुछ हमें सीखना चाहिए वो तो हम सीखते ही नहीं, जो कुछ सेवा हमें करनी चाहिए वो हम करते ही नहीं, जो कुछ हमें उनके सान्निध्य में अनुभव प्राप्त करना चाहिए, वो आनन्द हम नहीं प्राप्त कर पाते ये हमारे जीवन की कमी है, ये हमारी दुर्बुद्धि है, ये हमारा दुर्भाग्य है।**

प्रत्येक युग में और प्रत्येक परिस्थिति में सिद्धाश्रम के इस प्रकार के योगी, अलग-अलग नामों में, अलग-अलग रूपों में इस पृथ्वी तल पर अवतरित हुए हैं, विचरण किये हैं और आम लोगों की तरह रहे हैं। उन्होंने कुछ विशिष्टता रखी नहीं, इसलिए विशिष्टता नहीं रखी क्योंकि आम आदमी, आम आदमी को समझा सकता है। समाज का एक भाग बनकर के समाज के लोगों को अपनी ज्ञान चेतना दे सकता है। ईसा मसीह एक सामान्य व्यक्ति बनकर के अपने उन अनुयायियों को ज्ञान-चेतना शिक्षा-दीक्षा दे सकें। कृष्ण एक सामान्य मानव बनकर के, सारथी बनकर के अर्जुन को और दूसरे लोगों को दीक्षा दे सकें। भीष्म पितामह उन्हें पहचान सकें। वे पहचान सकें कि वे अपने आप में एक अद्वितीय पुरुष है। पर आम आदमी तो उनको नहीं पहचान सकता, गीता जैसा ज्ञान, चिंतन उच्चकोटि की चेतना देने वाला व्यक्ति एक सामान्य व्यक्ति नहीं हो सकता। मगर उन्हें कितनों ने पहचाना, कितने लोगों ने पहचाना, नहीं पहचाना वो अपने आपमें एक मौका चूक गये और जिन्होंने पहचाना वो अपने आपमें अद्वितीय बन गये।

और उसके बाद फिर सिद्धाश्रम से बुद्ध आये, महावीर आये, फिर शंकराचार्य आये। जीवन में इस प्रकार के

महापुरुष पृथ्वी तल पर तो अवतरित होते ही रहते हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारी पीढ़ी में इस प्रकार के युगपुरुष विद्यमान हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि इस पीढ़ी में इन युगपुरुषों के साथ हमें कुछ दिन रहने का मौका मिला, यह हमारा और हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है कि हम उनसे परिचित हैं और यह भी सौभाग्य है कि हम उनके साथ रह सकते हैं। **मगर यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम चाहते हुए भी उनके पास नहीं बैठ पाते, क्योंकि चारों तरफ की व्यस्तताएं मजबूरियां, परेशानियां, बाधाओं से हम इतने अधिक घिर जाते हैं कि उन्हीं को प्राथमिकता दे देते हैं। उन सारे बंधनों-बाधाओं-परेशानियों को तोड़ करके उस जगह पहुंचने की क्षमता नहीं रख पाते, यह हमारे जीवन की कमी है। यह हमारे जीवन की विडम्बना है। यह हमारे जीवन की दैन्यता है और जब तक की यह न्यूनता रहेगी तब तक हम उस आनन्द को, उस क्षण को प्राप्त नहीं कर सकेंगे** और हमारे पास पछतावे के अलावा कुछ नहीं रहेगा और फिर तुम अहसास करोगे कि वास्तव में ही तुम्हारे पास एक सुनहरा सा मौका था, एक अद्वितीय अवसर था और तुम चूक गये। इसलिये जो मैं स्पष्ट कर रहा था वो बात यह है कि उस मृर्त्योमा साधना के माध्यम से आज भी हजारों-हजारों योगी, संन्यासी कई-कई वर्षों की आयु प्राप्त करके बैठे हैं और हम अपनी आंखों से उनको देख सकते हैं। उन पांच सौ साल आयु प्राप्त योगियों को भी, उन हजार साल प्राप्त योगियों को भी और पांच सौ साल की आयु प्राप्त करने के बावजूद भी उनके शरीर में कोई अंतर नहीं आया और उन्हें देखने से ऐसा लगता है कि ये तो केवल पचास और साठ साल के व्यक्ति हैं। ऐसा लगता है कि अभी तो इनका यौवन बरकरार है, इनमें ताकत है, इनमें क्षमता है, इनमें पौरुषता है, इनमें पूर्णता है और यह सब कुछ मृर्त्योमा अमृतंगमय साधना के माध्यम से ही संभव है।

जैसा कि मैंने अभी आपके सामने स्पष्ट किया कि हम मृर्त्योमा अमृतं गमय साधना से मनोवांछित आयु प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही साथ एक और तथ्य की ओर हमारा ध्यान जाना चाहिए कि हममें यह क्षमता हो कि हम श्रेष्ठ गर्भ को धारण कर सकें। एक मां तीन चार पुत्रों या बालकों को जन्म दे सकती है ओर यदि उनमें से भी दुष्ट और दुबुद्धि आत्मा वाले बालक जन्म ले लेते हैं। तो मां-बाप को बहुत दु:ख और वेदना होती है कि उन्होंने जितना दु:ख और कष्ट उठाया, उसके बावजूद भी उन्हें जो फल मिलना चाहिए था वह नहीं मिल पाया। इसकी अपेक्षा आप यह कल्पना करें कि एक बालक उत्पन्न हो, मगर वह अद्वितीय हो। ज्ञान के क्षेत्र में सिद्धहस्त हो, पूर्ण हो, महान हो, चाहे विज्ञान के क्षेत्र में हो, चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो, चाहे गणित के क्षेत्र में हो, चाहे रसायन विज्ञान के क्षेत्र में हो। जिस भी क्षेत्र में हो विश्व विख्यात हो, अद्वितीय हो, श्रेष्ठतम हो ऐसा बालक जन्म दें। यह तो प्रत्येक मां-बाप कल्पना करता है। प्रत्येक मां-बाप चाहता है कि एक ही उत्पन्न हो मगर सूर्य के समान हो, एक ही उत्पन्न हो मगर चन्द्रमा के समान तेजस्वी हो। हजार-हजार तारों को भी जन्म देने से उतना अंधियारा नहीं छट सकेगा, जितना एक चन्द्रमा को जन्म देने से उस अंधियारे को हम दूर कर सकते हैं। मगर जैसा मैंने यह बताया कि यह आपके बस की बात नहीं है। आप तो गर्भ को खोल सकते हैं, गर्भ में कौन सी दुष्ट आत्मा प्रवेश कर जायेंगी यह आपके अधिकार क्षेत्र के बाहर की बात है और आपके
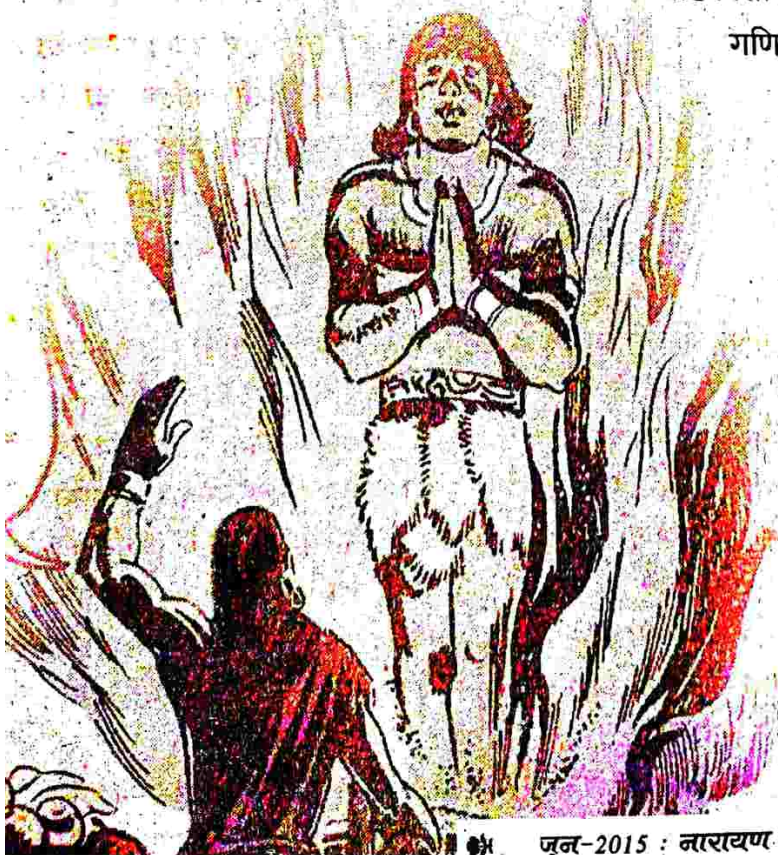
अधिकार क्षेत्र से यह बाहर है यह आपकी सबसे बड़ी विडम्बना है और जैसा कि मैंने अभी बताया कि उन आत्माओं में भी होड़ मची रहती है, एक दूसरे को धकियाते हुए, एक-दूसरे को ठेलते हुए, आगे बढ़ते हुए जो ताकतवान है, जो क्षमतावान है, जो दुष्ट है वे आगे बढ़कर के और दूसरों को पीछे ढकेल करके उस समय खुले हुए गर्भ में प्रवेश कर जाते हैं और जो योगी है, जो श्रेष्ठ है, जो संत है जो विद्वान है, जो सरल है, जो टुकुर तांकते रहते हैं कि कभी हमारा अवसर आये और हम किसी गर्भ में प्रवेश करें। इसीलिये मां-बाप के पास में ऐसी कोई स्थिति नहीं है जिसकी वजह से श्रेष्ठ बालक को या श्रेष्ठ आत्मा को अपने गर्भ में प्रवेश दे सकें। मगर उसके लिये भी एक साधना है, एक अद्वितीय साधना है **जिसको गमय साधना कहा गया है, जिसको पूर्णत्व साधना कहा गया है।** और इस गमय साधना के माध्यम से यदि माँ गर्भ धारण करने से पूर्व, इस गमय साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न कर लेती है तो उसके गर्भ में एक विशिष्टता प्राप्त हो जाती है और वह विशिष्टता यह प्राप्त होती है कि दुष्ट आत्मा उसके गर्भ में प्रवेश कर ही नहीं पाती। वह उच्चकोटि की आत्माओं को ही अपने गर्भ में निमंत्रण देती है और वहां चाहे कितने ही झेलम-झेल हो, धक्के हो या एक-दूसरे को धकियाते हों मगर ज्योंही एक शुद्ध और पवित्र आत्मा पास में से गुजरती है, गर्भ खुल जाता है और उच्चकोटि की आत्मा उस गर्भ में प्रवेश कर जाती है। इस प्रकार से उस मां-बाप के हाथ में यह होता है कि साधना के माध्यम से अपने गर्भ में एक श्रेष्ठ आत्मा को ही स्थान दें और श्रेष्ठ आत्मा जब गर्भ में प्रवेश करती है तो मां के चेहरे पर एक अपूर्व आभा और तेजस्विता आ जाती है। एक ललाई आ जाती है, एक अहसास होने लग जाता है कि वास्तव में ही किसी श्रेष्ठ आत्मा ने इस गर्भ में प्रवेश किया है, चेहरे पर तेजस्विता आ जाती है और प्रसन्नता से हृदय झूम उठता है और उसके नौ महीने किस प्रकार से व्यतीत होते उसको पता ही नहीं चलता और वह जब जन्म देती है तो श्रेष्ठ आत्मा को जन्म देती है जो कि आगे चलकर के अपने क्षेत्र में अद्वितीय व्यक्तित्व बन सकता है और अपने क्षेत्र में

उच्चकोटि का बनकर के मां-बाप के नाम को रोशन कर सकता है और वह मां हजारों-हजारों वर्षों तक के लिये धन्य हो जाती है। आने वाली पीढ़ियां उसकी कृतज्ञ हो जाती हैं। वह मां-बाप अपने आपमें एक सौभाग्य अनुभव करने लग जाते हैं। यदि इस गमय साधना को सम्पन्न करके इस तरह का श्रेष्ठ गर्भ प्राप्त कर सकें और यह साधना अपने आपमें कोई पेचीदा नहीं है, कोई कठिन नहीं हैं आवश्यकता यह है कि हमें इस साधना को सम्पन्न करना चाहिये। आवश्यकता इस बात की है कि इस तरह की साधना सम्पन्न कर देने की क्षमता वाला कोई गुरु आपके सामने हो। आवश्यकता यह है कि वह पति और पत्नी इस बात का दृढ़ निश्चय करें कि हमें गुरु के पास जा करके इस तरह की साधनाओं को सम्पन्न करना ही है और उसके बाद ही गर्भ धारण करना है और गुरु उस गमय साधना को सम्पन्न करवाता है तो यह भी बता देता है कि इस साधना को सम्पन्न करने के बाद किस तारीख को कितने बज कर कितने मिनट पर समागम करने से उच्चकोटि की आत्मा का प्रवेश तुम्हारे गर्भ में हो सकता है। ठीक उस समय तुम्हारा गर्भ खुला होना चाहिए, ठीक उसी समय उस आत्मा का प्रवेश होगा। गमय साधना का तात्पर्य यही है। और यह अपने आप में महत्वपूर्ण विचार है, चिंतन है।

वसुदेव-देवकी को जब नारद मिले। तब उन्होंने उनसे एक ही बात कही थी कि मेरे गर्भ से एक उच्चकोटि का बालक जन्म लें। तो नारद ने स्पष्ट रूप से कहा कि तुम्हें गमय साधना सम्पन्न करनी है, चाहे तुम जेल में ही हो। इस साधना को सम्पन्न करके, इस तिथि को इतने बज कर इतने मिनट पर तुम्हें समागम करना है, गर्भ खोलना है और एक उच्चकोटि का महा मानव तुम्हारे गर्भ में जन्म ले सकेगा और जन्म लेगा तो अपने आप तुम्हें स्वप्न में स्पष्ट होगा कि कौन जन्म ले रहा है, वह स्वयं तुम्हें इस बात का संकेत दे देगा। तुम्हारे चेहरे पर एक आभा आ जायेगी, चेहरे पर मुस्कुराहट आ जायेगी, तुम्हारे सारे शरीर में एक अपूर्व तेजस्विता प्रवाहित होने लगेगी और ठीक ऐसा ही हुआ।
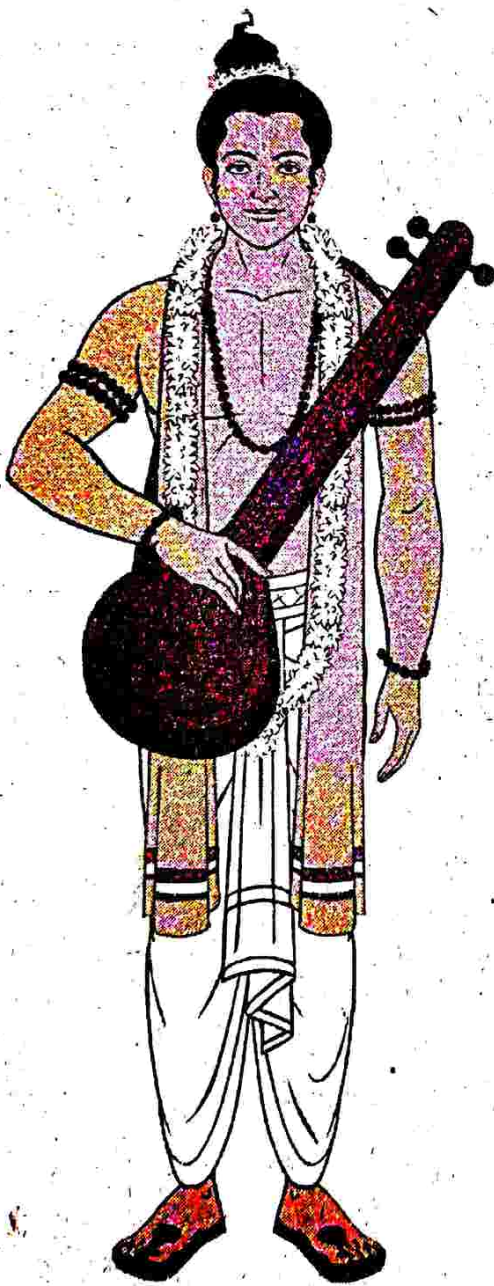
यदि उस समय गमय साधना जीवित थी, तो गमय साधना आज भी जीवित है। आवश्यकता इस बात की है कि हम उस समय साधना को समझें। आवश्यकता इस बात की है कि इस प्रकार की साधनाओं पर विश्वास करें। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसा गुरु हमें मिले, जिसे इस प्रकार की साधना ज्ञात हो। वह चाहे हरिद्वार में हो, चाहे मथुरा में हो, चाहे काशी में हो, चाहे कांची में हो और हम उस गुरु के सान्निध्य में जायें। अत्यंत विनम्रता पूर्वक अपनी इच्छा व्यक्त करें। उनसे प्रार्थना करें कि वह गमय साधना सम्पन्न करायें और पूर्ण गमय साधना सम्पन्न होने के बाद वे उन क्षणों को स्पष्ट करें, दो या चार या छः क्षणों को कि उन-उन क्षणों में समागम करने से, गर्भ खोलने से तुम्हारे जीवन में, तुम्हारे गर्भ में उच्चकोटि का महामानव जन्म ले सकेगा।

इसीलिये जीवन की यह महत्वपूर्ण स्थिति है, यदि हमें उच्चकोटि के बालकों को जन्म देना है, यदि इस पृथ्वी को बचाना है, यदि इसमें असत्य के ऊपर सत्य की विजय देनी है, यदि अधर्म पर धर्म को स्थान देना है, यदि इस पूरी पृथ्वी को सुन्दर, आकर्षक और मनमोहक बनाना है, ज्यादा सुखी, ज्यादा सफल और सम्पन्न करना है तो यह जरूरी है और ऐसा होने से उन बालकों का जन्म हो

सकेगा जो कि वास्तव में अद्वितीय है। हम कल्पना करें कि एक समय ऐसा था जब वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, कणाद, पुलस्त्य, गौतम सैकड़ों-सैकड़ों ऋषि जन्म लिये हुए थे। अब क्या समय हो गया है? एक भी वशिष्ठ पैदा नहीं हो रहा है, एक भी विश्वामित्र पैदा नहीं हो रहा है, एक भी कृष्ण पैदा नहीं हो रहा है, एक भी वासुदेव पैदा नहीं हो रहा है, एक भी शंकराचार्य पैदा नहीं हो रहा है, एक भी ईसा-मसीह पैदा नहीं हो रहा है। इसका कारण क्या है? कारण यह है कि हम अपनी परम्पराओं से टूट गये। पूर्वजों के ज्ञान से हम वंचित हो गये। हमें इस बात का ज्ञान नहीं रहा कि हम किस प्रकार से विश्वामित्र, वशिष्ठ जैसे पैदा कर सकते हैं, अत्रि-कणाद को जन्म दे सकते हैं, राम और कृष्ण को अपने गर्भ में स्थान दे सकते हैं। क्योंकि हमारे पास गमय साधना का ज्ञान नहीं और ऐसे गुरु नहीं जो गमय साधना सम्पन्न करा सकें। उन क्षणों का, उस ज्योतिष का उनको एहसास नहीं की वे किस क्षण विशेष में उच्चकोटि की आत्मा को गर्भ में जन्म ले सकें। यह आज के युग में प्रत्येक स्त्री और पुरुष के लिये आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो गया है और यदि आप वृद्ध हो गये हैं तो आपके पुत्र है, पुत्र वधू है उनके गर्भ से उच्चकोटि का बालक जन्म लेने की क्रिया सम्पन्न करवा सकते हैं। आपके पुत्र-पौत्र वधू है उनको इस प्रकार से शिक्षा, चेतना, ज्ञान दे सकते है कि इस प्रकार की योग्यतम बालक को जन्म दें। ऐसा संभव हो सकता है और मेरा तीसरा प्रश्न आपके सामने रखा था कि हमने जन्म लिया, हम बड़े हुए, हमने अपने जीवन में जो कुछ भी कार्य करना था वो किया और हम मृत्यु को प्राप्त हुए। सैकड़ों-हजारों लोग मृत्यु को प्राप्त हुए, मगर मृत्यु के परे और मृत्यु के बाद उनका अस्तित्व, उनके प्राणों का अस्तित्व तो विद्यमान रहता ही है। जैसा कि मैंने बताया अंगुष्ठ रूप के आकार की आत्मा इस पितृ लोक में बराबर विचरण करती रहती है और उन लाखों करोड़ों आत्माओं में तुम्हारी एक आत्मा होती है। उन लाखों-करोड़ों की भीड़ में तुम भी एक गुमनाम सी आत्मा लिये खड़े होते हो। कोशिश करते रहते हो कि कोई गर्भ मिले और जन्म लें, मगर आप सरल है आप सीधे, आप भले हैं। आपने अपने जीवन को एक शुद्धता के साथ व्यतीत किया है, आप में छल नहीं है, कपट नहीं है, झूठ नहीं है, धक्का-मुक्की नहीं है, दुष्टता नहीं है इसलिये आप वहां पर भी इस प्रकार की स्थिति पैदा नहीं कर सकते। धक्के नहीं मार सकते, जबरदस्ती किसी गर्भ में प्रवेश नहीं कर सकते, प्रश्न उठता है कि क्या कोई ऐसी विधि, कोई ऐसी तरकीब है, कोई स्थिति है जिसकी वजह से श्रेष्ठ गर्भ में हम जन्म ले सकें। यहां मैंने एक श्रेष्ठ गर्भ शब्द का प्रयोग किया, श्रेष्ठ गर्भ तो बहुत कम होते हैं, दुष्ट गर्भ बहुत है, हजारों हैं, जो झूठ बोलने वाले पिता हैं, जो कपट करने वाले पिता हैं, दुष्ट आत्माएं माताएं हैं, व्यभिचारणी माताएं हैं, जिनका जीवन अपने आपमें दुष्टता के साथ व्यतीत होता है ऐसे गर्भ तो हजारों है, लाखों हैं मगर जो सदाचारी हैं, पवित्र हैं, दिव्य हैं, शुद्ध हैं, देवताओं का पूजन करने वाले हैं, जो आध्यात्मिक चिंतन में सतत् रत रहने वाले हैं। ऐसे स्त्री पुरुष तो बहुत

कम हैं पृथ्वी पर, गिने-चुने हैं। बहुत कम हैं जो पति-पत्नी दोनों साधनाओं में रत हैं, आराधनाओं में व्यतीत करते हों ऐसे पति-पत्नी बहुत कम है जो नित्य अपना समय भगवान की चर्चाओं में व्यतीत करते हों। जो झूठ और असत्य से, छल और कपट से परे रहते हो। जिनका जीवन अपने आपमें सात्विक हो, जो अपने आपमें देवात्मा हो, जो अपने आपमें पवित्र हों, दिव्य हों, ऐसे स्त्री और पुरुष श्रेष्ठ युगल कहे जाते हैं और यदि ऐसी स्त्री और पुरुष के गर्भ में हम जन्म लें, तो अपने आपमें अद्वितीयता होती है, क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि देवकी के अलावा श्रीकृष्ण भगवान किसी और के गर्भ में जन्म ले सकते थे? क्या हम सोच सकते हैं कौशल्या के अलावा किसी के गर्भ में इतनी क्षमता थी कि भगवान राम को उनके गर्भ में स्थान दे सकें? नहीं। इसके लिये पवित्रता, दिव्यता, श्रेष्ठता, उच्चता जरूरी है। मगर प्रश्न यह उठता है कि क्या हम मृत्यु को प्राप्त होने के बाद, क्या हमारी चेतना बनी रह सकती है और क्या मृत्यु को प्राप्त होने के बाद ऐसी स्थिति, कोई ऐसी तरकीब, कोई ऐसी विशिष्टता है कि हम श्रेष्ठ गर्भ का चुनाव कर सकें? वह चाहे किसी शहर में हो, वह चाहे किसी प्रांत में हो, वह चाहे किसी राष्ट्र में हो, जहां जिस राष्ट्र में चाहे, भारतवर्ष में चाहे, जिस शहर में चाहे, जिस स्त्री या पुरुष के गर्भ में जन्म लेना चाहे, हम जन्म ले सकें, कोई ऐसी स्थिति है? यह प्रश्न हमारे सामने सीधा, दो टूक शब्दों में स्पष्ट खड़ा रहता है और इस प्रश्न का उत्तर विज्ञान के पास नहीं है।

हमारे पास नहीं है मृत्यु को प्राप्त होने के बाद, हम विवश हो जाते हैं, मजबूर हो जाते हैं, लाचार हो जाते हैं, यह कोई स्पष्ट नहीं है कि हम दो साल बाद, पांच साल बाद, दस साल बाद, पन्द्रह या बीस साल बाद, पचास साल बाद उस पितृ लोक में भटकते हुए कहीं जन्म ले लें। हो सकता है हम किसी गरीब घराने में जन्म ले लें, कसाई के घर में जन्म ले लें, हम किसी दुष्ट आत्मा के घर में जन्म ले लें, हम किसी व्यभिचारी के घर में जन्म ले लें और हम किस ऐसी मां के गर्भ में जन्म ले लें कि भ्रूण हत्या हो जाये, गर्भपात हो जाये, हम पूरा जन्म ही नहीं ले सकें। आप कल्पना करें कि कितनी विवशता हो जायेगी हमारे जीवन की और हम इस जीवन में ही उस स्थिति को भी प्राप्त कर

सकते हैं कि हम मृत्यु के बाद भी उस प्राणी लोक में, जहां करोड़ों प्राणी हैं, करोड़ों आत्माएं हैं उन आत्माओं में भी हम खड़े हो सकें और हमें इस बात का ज्ञान हो सके कि हम कौन थे कहां थे किस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न की और क्या करना है? और साथ ही साथ इतनी ताकत, इतनी क्षमता, इतनी तेजस्विता आ सके कि सही गर्भ का चुनाव कर सकें और फिर ऐसी स्थिति बन सके कि तुरंत हम उस श्रेष्ठ गर्भ में प्रवेश कर सकें और जन्म ले सकें। चाहे उसमें कितनी भीड़, चाहे कितनी ही दुष्ट आत्माएं हमारे पीछे हो। हम उसके बीच में से रास्ता निकाल करके उस श्रेष्ठ गर्भ का चयन कर सकें और ज्योंहि गर्भ खुले उसमें हम प्रवेश कर सकें। इसको अमृत साधना कहा गया है और यह अपने आपमें अद्वितीय साधना है, यह विशिष्ट साधना। इसका मतलब है कि इस साधना को सम्पन्न करने के बाद हमारा यह जीवन हमारे नियंत्रण में रहता है, मृत्यु के बाद हम प्राणी बनकर के भी, जीवात्मा बनकर के भी हमारा नियंत्रण उस पर रहता है और उस जीवात्मा के बाद गर्भ में जन्म लेते हैं, गर्भ में प्रवेश करते हैं। तब भी हमारा नियंत्रण बना रहता है। यह पूरा हमारा सर्कल बन जाता है कि हम हैं, हम बढ़ें, हम मृत्यु को प्राप्त हुए, जीवात्मा बनें फिर गर्भ में प्रवेश किया। गर्भ में प्रवेश करने के बाद जन्म लिया और जन्म लेने के बाद खड़े हुए। ये पूरी एक स्टेज, एक पूरा वृत्त बनता है। पूरे वृत्त का हमें भान रहता है और कई लोगों को ऐसे वृत्त का भान रहता है, ज्ञान रहता है कि प्रत्येक जीवन में हम कहां थे। किस प्रकार से हमने जन्म लिया? ऐसे कई अलौकिक घटनाएं समाज में फैलती हैं जिसको पूरे जन्म का ज्ञान रहता है। मगर कुछ समय तक रहता है।

प्रश्न तो यह है कि हम ऐसी साधनाओं को सम्पन्न करें जो कि हमारे इस जीवन के लिये उपयोगी हो और मृत्यु के बाद हमारी प्राणात्मा इस वायुमण्डल में विचरण करती रहती है तो प्राणात्मा पर भी हमारा नियंत्रण बना रहे। साधना के माध्यम से वह डोर टूटे नहीं, डोर अपने आप जुड़ी रहे और जल्दी से जल्दी उच्चकोटि के गर्भ में हम प्रवेश कर सकें। ऐसा नहीं हो कि हम जन्म लेने के लिये 50 वर्षों तक इंतजार करते रहें। हम चाहते हैं कि हम वापिस जल्दी से जल्दी जन्म लें, हम चाहते हैं कि इस जीवन में जो की गई साधनाएं हैं वह सम्पूर्ण रहें और जितना ज्ञान हमने प्राप्त कर लिया उसके आगे का ज्ञान हम प्राप्त करें क्योंकि ज्ञान का तो एक अथाह सागर हैं, अनंत हैं, अनन्त पथ हैं। इस जीवन में हम पूर्ण साधनाएं सम्पन्न नहीं कर सकें, तो अगले जीवन में हमने जहां छोड़ा है उससे आगे बढ़ सकें, क्योंकि ये जो इस जीवन का ज्ञान है वह उस जीवन में स्मरण रहता है। यदि उस प्राणात्मा या जीवात्मा पर हमारा नियंत्रण रहता है, गर्भ पर हमारा नियंत्रण रहता है, गर्भ में जन्म लेने पर हमारा नियंत्रण रहता है। जन्म लेने के बाद गर्भ से बाहर आने की क्रिया पर हमारा नियंत्रण रहता है इसलिये इस अमृत साधना का भी हमारे जीवन में अत्यंत महत्व है क्योंकि अमृत साधना के माध्यम से

हम जीवन को छोड़ नहीं पाते, जीवन पर हमारा पूर्ण अधिकार रहता है। जिस प्रकार की सिद्धि को चाहे उस सिद्ध को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रत्येक स्त्री और पुरुष को अपने जीवन काल में जब भी अवसर मिले, समय मिले अपने गुरु के पास जाना चाहिये। मैं गुरु शब्द का प्रयोग इसलिये कर रहा हूँ, जिसको इस साधनाका ज्ञान हो वह गुरु। हो सकता है ऐसा गुरु आपका भाई, हो, आपकी पत्नी हो आपका पुत्र हो सकता है यदि उनको इस बात का ज्ञान है और यदि नहीं ज्ञान है जिस किसी गुरु के पास इस प्रकार का ज्ञान हो उसके पास हम जायें। उनके चरणों में बैठें, विनम्रता के साथ निवेदन करें कि हम उस अमृत साधना को प्राप्त करना चाहते हैं। क्योंकि इस जीवन को तो हम अपने नियंत्रण में रखें ही, इसके बाद हम जब भी जन्म लें, तो उस प्राणात्मा या जीवात्मा पर भी हमारा नियंत्रण बना रहे ओर हम जल्दी से जल्दी उच्चकोटि के गर्भ को चुनें, श्रेष्ठतम गर्भ को चुने, अद्वितीय उच्चकोटि की माँ को चुने, उस परिवार को चुने जहां हम जन्म लेना चाहते है। उस गर्भ में जन्म ले सकें। हम एक उच्चकोटि के बालक बनें क्योंकि साधना से उच्चकोटि के माँ-बाप का चयन भी कर सकते हैं और यदि हम चाहें अमुक माँ-बाप के गर्भ से ही जन्म लेना है, तब भी ऐसा हो सकता है। यदि हम चाहे उस शहर के उस माँ-बाप के यहां हमें जन्म लेना है यदि वह गर्भ धारण की क्षमता रखते हैं तो वापिस उसमें प्रवेश करके जन्म ले सकते हैं। ऐसे कई उदाहरण बने हैं। जिस माँ के गर्भ से जन्म लिया और किसी कारणवश मृत्यु को प्राप्त हो गये, तो उस माँ के गर्भ से वापिस भी जन्म लेने की स्थिति भी बन सकती है। खैर ये तो आगे की स्थिति है, इस समय तो यह स्थिति है कि हम इस अमृत साधना के माध्यम से अपने वर्तमान जीवन को अपने नियंत्रण में रखें इस मृत्यु के बाद जीवात्मा की स्थिति पर नियंत्रण रखें। हम जो गर्भ चाहे, श्रेष्ठतम गर्भ में प्रवेश कर सकें, पूर्णता के साथ कर सकें और जन्म लेने के बाद विगत जन्म का स्मरण हमें पूर्ण तरह से रहे। जैसे कि उस जीवन में जो साधना की है उस साधना को आगे बढ़ा सकें। उस जीवन में जिस गुरु के चरणों में रहे हैं, उस गुरु के चरणों में वापिस जल्दी से जल्दी जा सकें, आगे की साधना सम्पन्न कर सकें। ये चाहे स्त्री हो, पुरुष हो, साधक हो, साधिका हो प्रत्येक के जीवन की यह मनोकामना है कि वह इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। मैंने अपने इस प्रवचन में तीन साधनाओं का उल्लेख किया। **मृर्त्योमा साधना, अमृत साधना और गमय साधना और इन तीन साधनाओं को मिलाकर के 'मृर्म्योमा अमृतं गमय' शब्द विभूषित किया गया है।**

इसलिये ईशावास्योपनिषद् में और जिस उपनिषद् में इस बात की चर्चा है वह केवल एक पंक्ति नहीं है, मृर्त्योमा अमृतगमयं।

मृत्यु से अमृत्यु की ओर चले जायें, हम किस प्रकार से जाये, किस तरकीब से जाये इसलिये उन तीनों

साधनाओं के नामकरण इसमें दिये हैं, इसको स्पष्ट किया। इन तीनों साधनाओं को सामंजस्य से करना, इन तीनों साधनाओं को समझना हमारे जीवन में जरूरी है, आवश्यक है और हम अपने जीवन काल में ही इन तीनों साधनाओं को सम्पन्न करें, यह हमारे लिये जरूरी है, उतना ही आवश्यक है और जितना जल्दी हो सके अपने गुरु के चरणों में बैठे, जितना जल्दी हो सके उनके चरणों में अपने आपको निवेदित करें। अपनी बात को कहें। उनको स्पष्ट करें कि हम क्या चाहते हैं और वो समय दे, वह जो परीक्षा लें, वह परीक्षा हम दें। वह जिस प्रकार से हमारा उपयोग करना चाहें, हम उपयोग होने दें। मगर हम उनके चरणों में लिपटे रहें क्योंकि हमें उनसे प्राप्त करना है। अद्‌भुत ज्ञान, अद्वितीय ज्ञान, श्रेष्ठतम ज्ञान। बहुत कुछ खोने के बाद बहुत कुछ प्राप्त हो सकता है। यदि आप कुछ खोना नहीं चाहें और बहुत कुछ प्राप्त करना चाहें तो ऐसा जीवन में संभव नहीं हो सकता। अपने जीवन को दांव पर लगा करके, प्राप्त किया जा सकता है। यदि आप जीवन को बचा रहे हैं, तो जीवन को बचाते रहें और बहुत कुछ प्राप्त करना चाहे तो ऐसा संभव नहीं हो सकता। इसीलिये इस उपनिषद्‌कार ने इस मृत्योंमा अमृतं गमयं से संबंधित कुछ विशिष्ट मंत्रों का प्रयोग किया। यद्यपि इसकी साधना प्रद्धति अपने आप में बहुत सरल है, सही है कोई भी स्त्री या पुरुष इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। यद्यपि इस साधना के लिये गुरु के चरणों में पहुंचना अनिवार्य है, क्योंकि इसकी पेचीदगी गुरु के द्वारा ही समझी जा सकती है। उनके साथ, उनके द्वारा ही मंत्रों को प्राप्त किया जा सकता है। **परंतु मैं उन मंत्रों का उल्लेख आपके सामने कर रहा हूँ जो मृत्योंमा अमृतं और गमय तीनों साधनाओं से संबंधित है। यदि नित्य इन मंत्रों को हम एक बार श्रवण करते हैं तब भी हमारे जीवन की चैतन्यता बनती है, तब भी हम जीवन के उत्थान की ओर अग्रसर होते हैं, तब भी हम पूर्णता की ओर अग्रसर होते हैं, तब ही हम मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का साहस और क्षमता प्राप्त कर सकते है और तभी हम मृत्यु से अमृत्यु से ओर अग्रसर होते हैं, जहां मृत्यु हम पर झपट्टा नहीं मार सकती, जहां मृत्यु हमको दबोच नहीं सकती, जहां मृत्यु हमें मार नहीं सकती,समाप्त नहीं कर सकती और हम जितने वर्ष चाहे जितने युगों चाहे जीवित रह सकते है। उन मंत्रों को आपके सामने उच्चारण कर रहा हूँ, उन मंत्रों को बार-बार सुनना ही चाहिए, नित्य सुनना चाहिए। एक बार, पांच बार, ग्यारह बार, इक्कीस बार, एक सौ एक बार जितना आपको समय मिलें। मगर नित्य इसको श्रवण करने से ही अपने आपमें सफलता मिल जाती है।**

पूज्यपाद सद्‌गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

तंत्र कोई क्रिया धर्म या पद्धति नहीं है, अपितु व्यवस्थित रूप से मंत्र साधना और सिद्धि प्राप्त करने का एक प्रकार है। **ब्राह्मण ग्रन्थों में तंत्र जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण बौद्ध और जैन ग्रंथों में भी है, बल्कि जैन धर्म में तो तंत्र को प्रमुखता दी गई है।**

जैन ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि उन्होंने मानसिक शांति एवं आत्मा की पवित्रता पर जितना जोर दिया है, उतना ही तंत्र साधना पर भी महत्व प्रदर्शित किया है। श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों ही सम्प्रदायों ने तंत्रात्मक मंत्र पद्धति को विशेष महत्व दिया है।

पद्मावती साधना मूलतः जैन साधना है, यद्यपि इसका उल्लेख **'मंत्र महार्णव'** एवं अन्य तांत्रिक मांत्रिक ग्रंथों में भी आया है, परंतु इसका सांगोपांग विस्तार से विवेचन जैन ग्रंथों में ही पाया जाता है। जैन समाज में दीपावली की रात्रि को देवी पद्मावती की साधना पूजन तो प्रत्येक व्यक्ति करता ही है वस्तुतः रहस्य की बात यही है कि **पद्मावती साधना एवं पूजन पद्धति के प्रभाव से ही आज जैन सम्प्रदाय के लोग समाज में उच्च पदों पर आसीन हैं अथवा बड़े-बड़े उद्योगों व व्यापारों में संलग्न हैं। प्रतिष्ठा और सम्पदा तो जैसे इन्हें विरासत से ही मिलती है।**

जैन धर्म मूलतः अहिंसा, शांति, प्रेम, सदाचार और मूलतः अध्यात्म ज्ञान का प्रेरक धर्म रहा है, परंतु इसके उपरान्त भी पद्मावती साधना के महत्व को जैन मुनियों ने मुक्त कण्ठ से स्वीकारा है और इसके बारे में कहा है कि पद्मावती साधना तो अत्यंत उच्चकोटि की साधना है जिसे प्रत्येक गृहस्थ को सम्पन्न करनी ही चाहिए, चाहे वह किसी भी जाति का हो, धर्म का हो देवी की कृपा तो उसे प्राप्त होती ही है।

एक उच्चकोटि के जैन उद्योगपति से बातचीत करने के प्रसंग में उन्होंने स्पष्ट किया कि दीपावली की रात्रि को हम लक्ष्मी पूजन अवश्य करते हैं और पंडित बुलाते भी हैं, परंतु पंडित जी के जाने के बाद अर्द्धरात्रि को बिल्कुल गोपनीय ढंग
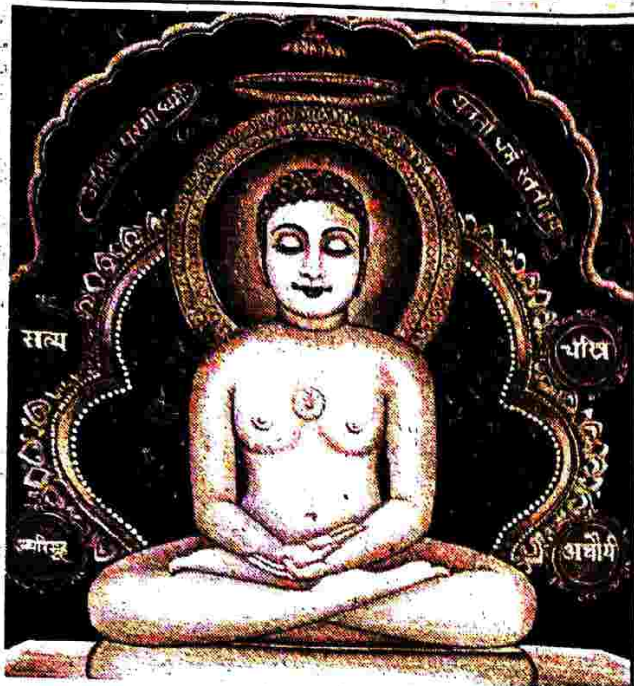
से पद्मावती साधना और पद्मावती पूजन विधि-विधान के साथ करते हैं और इसी साधना के बल पर हमारा सारा समाज इतना अधिक समृद्ध और व्यापारिक दृष्टि से पूर्ण है।

इस साधना को कोई भी जाति या वर्ग का साधक सम्पन्न कर सकता है, परंतु मैंने अनुभव किया है कि व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति एवं सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करने में मैं इससे श्रेष्ठ न तो अन्य कोई मंत्र है और न कोई साधना विधि ही। इसका प्रभाव और चमत्कार तुरंत प्राप्त होता है और इससे शीघ्र सिद्धि अनुभव होती है।

नीचे इस साधना से संबंधित अलग-अलग मंत्र व विधान प्रस्तुत हैं। साधक स्नान आदि कर अपने सामने गुरु चित्र रखकर गुरु मंत्र की चार माला अवश्य सम्पन्न करें। ये साधनाएं किसी भी अमावस्या को शुरु की जा सकती हैं।

1. आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए

साधक पीली धोती धारण कर उत्तर की ओर मुख कर बैठें। अपने सामने **'पद्मावती यंत्र'** स्थापित करें। यंत्र का पीले पुष्प या पीले अक्षत से पूजन करें। फिर **'हल्दी की माला'** या **'पीली हकीक माला'** से निम्न मंत्र की 21 माला नित्य 10 दिन तक करें -

।। ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावती सर्वकल्याण रुपे
रां रीं द्रां द्रीं द्रौं नमः।।

Om Hreem Shreem padmaavatee Sarvakalyaann Roope
Raam Reem Draam Dreem Droum Namah

प्रयोग समाप्ति पर समस्त सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

पदमावती यंत्र एवं हल्दी माला- 570/-

2. राज्य भय दूर करने के लिए

यह प्रयोग राज्य पक्ष की तरफ से आ रही बाधा को समाप्त करने के लिए किया जा सकता है। यह प्रमोशन में आ रही अड़चन हो सकती है, आय कर संबंधी समस्या हो सकती है, ट्रांसफर आदि की स्थिति हो सकती है। अन्य कई प्रकार की अड़चनें हो सकती हैं। ऐसी बाधाओं पर नियंत्रण करने के लिए यह प्रयोग श्रेष्ठ है।

साधक सफेद धोती धारण कर पूर्व या उत्तर की ओर मुख कर बैठें। एक सफेद वस्त्र अथवा भोजपत्र पर केशर अथवा कुंकुम से निम्न मंत्र अंकित कर दें। भोजपत्र के ऊपर **'पद्मावती यंत्र'** स्थापित करें। यंत्र का सफेद पुष्पों से पूजन करें। इसके बाद **'कमलगट्टे की माला'** से निम्न मंत्र की 10

मनोविकारों से बचें

एक सन्त थे। उनके पास प्रतिदिन एक व्यक्ति आया करता और ईश्वर के दर्शन करने के उपाय पूछता। सन्त हमेशा यह कहकर टाल देते थे कि समय आने दो बताऊंगा। एक बार व्यक्ति के बहुत आग्रह करने पर वे बोले-'सामने पहाड़ की जो ऊंची चोटी है वहां तक तुम सिर पर छः पत्थर लेकर चढ़ो। तब मैं तुम्हें ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताऊंगा।' व्यक्ति मान गया। सन्त ने उसे अपने पीछे चलने का संकेत किया सिर पर पत्थर लेकर चढ़ता व्यक्ति थक चुका था। उसने कहा-'भगवान्! अब और नहीं चला जाता मैं थक चुका हूँ।' सन्त ने कहा 'ठीक है। एक पत्थर फेंक दो।' यह क्रम तब तक चलता रहा जब तक व्यक्ति के सिर से छहों पत्थर न फिकवा दिए गए। तब जाकर व्यक्ति ऊपर चोटी तक पहुंचने में सफल हो पाया।

चोटी पर पहुंचकर सन्त ने उसे समझाया 'भाई! जिस प्रकार तुम सिर पर भारी पत्थर लेकर चढ़ने में असफल रहे उसी प्रकार जीवन में मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर जैसे मनोविकारों का बोझ ढोकर ईश्वर दर्शन नहीं कर पाता। ईश्वर-दर्शन हेतु इन सभी मनोविकारों का बोझ उतारना अनिवार्य है।' उदाहरण से यह बात व्यक्ति की समझ में आ गई।

माला नित्य 12 दिन तक करें –

// ॐ ह्रीं पद्म वज्रे नमः://

Om Hreem Padma Vajre Namah

प्रयोग समाप्ति पर समस्त सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री – 510/-

3. नौकरी प्राप्ति के लिए

साधक सफेद धोती धारण कर पूर्व या उत्तर की ओर मुख कर बैठें। एक सफेद वस्त्र अथवा भोजपत्र पर केशर अथवा कुंकुम से निम्न मंत्र अंकित कर दें। भोजपत्र के ऊपर **'पद्मावती यंत्र'** स्थापित करें। फिर **'स्फटिक माला'** से निम्न मंत्र की 9 माला नित्य 12 दिन तक करें –

मंत्र

// ॐ ह्रीं पद्मे राज्य प्राप्ति
ह्रीं क्लीं कुरु कुरु नमः://

Om Hreem Padme Raajya Praapti
Hreem Kleem
Kuru Kuru Namah

प्रयोग समाप्ति पर समस्त सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री – 510/-

ह्रीं जैन ग्रंथों के साबर प्रयोग

पूरे जैन साहित्य में सैकड़ों उदाहरण दिए हैं, जिससे यह पता चलता है कि उच्चकोटि के योगियों और मुनियों ने साबर मंत्रों के माध्यम से समाज का दुःख दूर किया है, कई बार इन प्रयोगों को आजमाया है और हर बार ये प्रयोग सफल सिद्ध हुए हैं। यहां दो प्रयोग दिए जा रहे हैं–

व्यापार लाभ जैन साबर प्रयोग

व्यापार वृद्धि, बिक्री बढ़ाने और निरंतर लाभ होने के लिए इस प्रयोग को प्रामाणिक बताया है। यह 3 दिन का प्रयोग है, मंत्र जपतेसमय शरीर पर मात्र एक सफेद धोती के अलावा अन्य कुछ न पहिनें तथा अपना मुंह पूर्व की ओर रखें। बुधवार के दिन किसी पात्र में **'पदमावती गुटिका'** रख दें और उसके सामने **'विजय माला'** से 21 माला मंत्र जप करें –

व्यापार वृद्धि साबर जैन मंत्र

// ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा
अनाहत विधोयं अर्हं नमः://

Om Hreem Shreem Arham A Si Aa U
Saa Anaahat Vidhoyam Arham Namah

प्रयोग समाप्ति पर माला को गले में धारण कर लें और यह सिद्ध की हुई गुटिका दुकान में अथवा जहां रुपये पैसे रखते हों, वहां रख दें। यह प्रयोग प्रत्येक व्यापारी को करना ही चाहिए।

साधना सामग्री पैकेट – 330/-

मुकदमा निवारण हेतु जैन साबर प्रयोग–

नहीं चाहते हुए भी कई बार मुकदमों में उलझना पड़ता है। मुकदमे के दिन **'विजय यंत्र'** के सामने निम्न मंत्र का 108 बार जप करके जाएं तो निश्चय ही निर्णय उसके पक्ष में होता है–

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रेश्वरी कार्यसिद्ध
विजयं देहि देहि स्वाहा।।

Om Hreem Shreem Kleem Chakreshwaree
Kaaryasiddh Vijayam Dehi Dehi Swaahaa

उस दिन जो भी बहस होती है, वह उसके ही पक्ष में होती है, इस तरह उसके मुकदमें में जीतने के आसार बढ़ जाते हैं। विरोधी पक्ष या तो परास्त हो जाता है या फिर समझौता कर लेता है। कार्य सिद्धि के बाद यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री– 240/-

भगवान विष्णु अपरिमित गुणों के आकार हैं तथा मूर्तिमान सद्गुण हैं तथापि उनके अनंत गुणों में भक्त वत्सलता गुण सर्वोपरि है। चतुर्विध भक्त जिस भावना से शरण ग्रहण करते हैं जिस कामना से उनका भजन करते हैं वे उनकी उस-उस कामना-भावना को परिपूर्ण करते हैं।

सृष्टि का प्रारंभ भगवान विष्णु से माना गया है और संसार विष्णु की ही माया लीला का स्वरूप है, भगवान विष्णु का सगुण स्वरूप भी है और निर्गुण स्वरूप भी, माया रूपी स्वरूप में वे लक्ष्मी के साथ अपने भक्तों को अभीष्ट फल प्रदान करते हैं।

मुझे याद है कि बचपन में जिस गुरुकुल में हम जाते थे, वहां आचार्य प्रातः और सायंकालीन संध्या करते थे तो हम सब बालक वहां बैठते थे, संध्या की विशेष विधि का ज्ञान नहीं था, तो हमारे आचार्य श्री ने कहा कि सब बालक नेत्र बन्द कर **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** मंत्र का जप करें, यह जीवन की आधार शक्ति का मूल मंत्र है। सभी देव-देवी श्री विष्णु की लीला के अधीन हैं और आज भी जब मन अशांत होता है, कार्य में बाधाएं आती हैं कोई मार्ग नहीं मिलता तो मैं हाथ मुंह धोकर एक दीपक जला कर शांत भाव से बैठ कर एक माला उपरोक्त मंत्र का जप करता हूँ, अपने आप एक मार्ग दिखने लगता है।

विष्णु साधना का पुरश्चरण बारह लाख मंत्रों का और पुरश्चरण के पश्चात् इसके शतांश बारह हजार मंत्र का हवन विधान है।

सर्वोपरि साधना : विष्णु साधना

- विष्णु साधना आधार शक्ति की साधना है, जिससे पूर्व जन्म कृत दोष ओर वर्तमान जन्म के दोष दूर होते हैं।
- विष्णु साधना से व्यक्तित्व में तेजस्विता आती है, जीवन में नैतृत्व करने की क्षमता प्राप्त होती है।

- विष्णु साधना कर्म प्रधान साधना है, साधक कर्मशील कर्तव्यशील बनता है और अपने बलबूते पर आगे बढ़ने हेतु क्रियाशील होता है।
- विष्णु साधना शक्ति की साधना है। साधक को वह सुदर्शन चक्र शक्ति प्राप्त होती है, क्योंकि जहां विष्णु है वहां शक्तिरूपी लक्ष्मी का आवास होता ही है।
- विष्णु साधना पूरे परिवार की साधना है और ग्रह शांति पारिवारिक उन्नति, पुत्र पौत्र प्राप्ति, सहयोग और सुख की साधना है।

साधना का मार्ग संक्षिप्त नहीं है और जब भी साधना करें, तो पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न करें। उसी रूप में साधना से पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। आगे जो विधान दिया जा रहा है उसके पांच भाग हैं, न्यास भी हैं, उन्हें उसी रूप में सम्पन्न करना है।

साधना समय

श्री विष्णु साधना केवल श्राद्ध पक्ष को छोड़ कर कभी भी शुभ मुहूर्त में रविवार को प्रारंभ की जा सकती है। पुरुषोत्तम मास (17.6.15 से 16.7.15) में इस साधना को सम्पन्न कर सकते हैं। पूर्ण सिद्धि बारह लक्ष मंत्रों की है, जिसका साधक अपने कार्य अनुसार निश्चित कार्यक्रम से जप सम्पन्न कर सकता है। हर रविवार को यह पूजा विधान अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। विष्णु मंत्र को चैतन्य मंत्र माना गया है, इसी कारण विष्णु साधना में सफलता प्राप्त होती ही है।

साधना सामग्री (विष्णु महायंत्र, 45 कमल बीज, वैजयंती माला)

इस साधना में मूल रूप से **'विष्णु महा यंत्र'** आवश्यक है जिसे एक लकड़ी के पट्टे पर पीला वस्त्र बिछा कर स्थापित करें और पूरे अनुष्ठान में उसी रूप में स्थापित रहने दें, इसे हटाना ही नहीं है। इसके अतिरिक्त अबीर, गुलाल, कुंकुम, केसर, चन्दन, मौली, सुपारी तथा अर्पण हेतु प्रसाद आवश्यक है।

इस साधना क्रम में विष्णु की सभी स्वरूपों का पूजन किया जाता हैं वह पूजन करते हुए **'विष्णु कमल बीज'** चन्दन में डुबो कर अर्पित करना है। इस हेतु काफी मात्रा में चंदन घिस कर पहले से ही रख लेना चाहिए।

साधना विधान

श्री विष्णु की साधना में विनियोग, साधना तथा पंचावरण पूजा का विशेष विधान है। सभी दिशाओं में स्थित विष्णु स्वरूपों का पूजन किया जाता है अतः इसे इसी रूप में सम्पन्न करना है। दाहिने से शरीर के अंगों को स्पर्श करना है, अर्पण भी दाहिने हाथ से किया जाता है, यह विशेष ध्यान रहे।

विनियोग

अस्य श्री द्वादशाक्षरमंत्रस्य प्रजापति ऋषिः गायत्री छन्दः वासुदेवः परमात्मा देवता, सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

इसे पढ़ कर भूमि पर जल गिरा दें।

ऋष्यादिन्यास

ॐ प्रजापति ऋषये नमः शिरसि,
गायत्री छन्दसे नमः मुखे,
वासुदेव परमात्मा देवतायै नमः हृदि,
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, नमः तर्जनीभ्यां नमः,
भगवते मध्यमाभ्यां नमः,
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

नमः शिरसे स्वाहा, भगवते शिखायै वषट्, वासुदेवाय कवचाय हुं, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट्।

ध्यान

विष्णुं शारद चन्द्रकोटि सदृशं शंखं रथांङ्गगदाम्।
अम्भोजांदधतं सिताब्जनिलयं कान्तया जगन्मोहनम्।।
आबद्धांगदहारकुण्डलमहामौलिं स्फुरत्कंकणम्।
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं वन्दे मनीन्द्रैः स्तुतम्।।

भावार्थ—हाथों में कोटिशरद्चन्द्रधवल शंख, चक्र,

गदा, पद्म लिये, सिर पर मुकुट, कानों में कुण्डल, गले में हार एवं उदार कौस्तुभमणि, बाहों पर केयूर एवं कलाई पर चमचमाते करभूषण कंकण धारण किये हुए, अपनी कमनीय कांति से विश्वविमोहन करने वाले, ऋषिमुनि, अभिवन्दित, श्री वत्सांक, परम महत्वद्योतक वक्षस्थल पर श्वेत वामावर्त (चिह्न विशेष), श्वेत कमलनिवासी, मुनीन्द्रों के द्वारा संस्तुत भगवान विष्णु का मैं वन्दन करता हूँ।

पीठ शक्ति पूजन

अपने सामने जो यंत्र स्थापना के लिये पीठ बनाई गई है, उस पर वस्त्र बिछा कर सबसे पहले पीठ पूजन किया जाता है, और यह पूजन पूर्व दिशा से प्रारंभ करते हुए आठ दिशाओं तथा अंत में पीठ के मध्य दिशा का पूजन किया जाता है। यह क्रम निम्न प्रकार से होगा जिसके अंतर्गत प्रत्येक पीठ शक्ति का ध्यान कर उस दिशा में पुष्प चढ़ाएं -

ॐ विमलायै नमः, ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ योगायै नमः, ॐ सत्यायै नमः, ॐ उत्कर्षिण्यै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ प्रहृयै नमः, ॐ ईशानायै नमः, ॐ अनुग्रहायै नमः (मध्य में)।
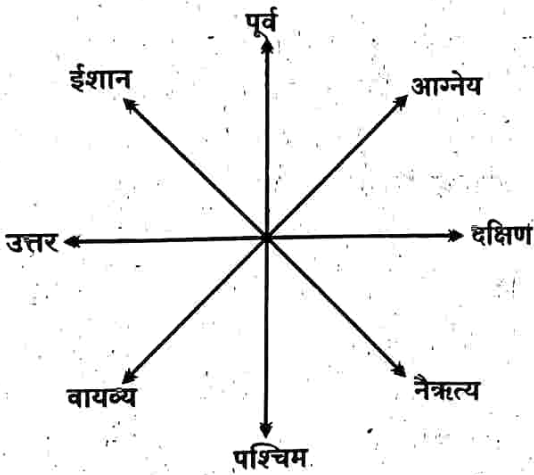
अब यंत्र स्थापना प्रारंभ होती है, हाथ में पुष्प लेकर उसे चन्दन में डुबो कर पीठ के मध्य में आसन स्थापित करें ओर निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र को पुष्प के इस आसन पर स्थापित करें -

।। ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपीठात्मने नमः।।

अब पुनः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय का पाँच बार उच्चारण करें, तथा यह ध्यान करें कि श्री विष्णु देव यंत्र स्वरूप में स्थित हैं और उन्हें पुष्प अर्पित करते हुए आवरण पूजा के लिए आज्ञा प्राप्त करें।

आवरण पूजा–

श्री विष्णु यंत्र के चार कोणों में उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम चार आवरण पूजा तथा यंत्र प्रवेश द्वार की ओर पंचम आवरण पूजा सम्पन्न होती है, साधक को इसी क्रम में मंत्र बोलते हुए एक तुलसी पत्र तथा एक विष्णु कमल बीज चंदन में डुबो कर अर्पित करना है।

प्रथमावरण पूजा

ॐ हृदयाय नमः

ॐ नमः शिरसे स्वाहा

ॐ भगवते शिखायै वषट्

ॐ वासुदेवाय कवचाय हुं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट्।

तत्पश्चात् अंजलि में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पुष्पांजलि चढ़ाएं–

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।। पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

द्वितीयावरण

ॐ वासुदेवाय नमः वासुदेव श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)

ॐ संकर्षणाय नमः संकर्षण श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)

ॐ प्रद्युम्नाय नमः प्रद्युम्न श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)

ॐ अनिरुद्धाय नमः अनिरुद्ध श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)

ॐ श्री शान्त्ये नमः शान्त्य श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)

ॐ श्रीयै नमः श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)

ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वती श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)

ॐ रत्यै नमः रति श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।। पूजिताः, तर्पिताः सन्तु।

यह द्वितीयावरण की पूजा है।

तृतीयावरण पूजा–

ॐ केशवाय नमः केशव श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ नं नारायणाय नमः नारायण श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ मों माधवाय नमः माधव श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ भं गोविन्दाय नमः गोविन्द श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ गं विष्णवे नमः विष्णु श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ वं मधुसूदनाय नमः मधुसूदन श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ तें त्रिविक्रमाय नमः त्रिविक्रम श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ वां वामनाय नमः वामन श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ सुं श्रीधराय नमः श्रीधर श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ दें हृषीकेशाय नमः हृषीकेश श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ वां पद्मनाभाय नमः पद्मनाभ श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ यं दामोदराय नमः दामोदर श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणामलवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।
पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

यह तृतीयावरण की पूजा है।

चतुर्थावरण–

ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्र श्री।
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ रं अग्नये नमः अग्नि श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ यं यमाय नमः यम श्री।
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋति श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ वं वरुणाय नमः वरुण श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ यं वायवे नमः वायु श्री।
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ कुं कुबेराय नमः कुबेर श्री।
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ हं ईशानाय नमः ईशान श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ आं ब्रह्मणे नमः ब्रह्म श्री।
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्त श्री
(पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।
पूजिता तर्पिताः सन्तु।

यह चतुर्थावरण की पूजा है।

पंचमावरण–

ॐ वं वज्राय नमः।
ॐ दं दण्डाय नमः।
ॐ पं पाशाय नमः।
ॐ गं गदायै नमः।
ॐ पं पद्माय नमः।
ॐ शं शक्तये नमः।
ॐ खं खड्गाय नमः।
ॐ अं अंकुशाय नमः।
ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः।
ॐ णं चक्राय नमः।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्।।
पूजिताः तपिताः सन्तु।

यह कहकर पंचमावरण की पूजा समाप्त करें।

अब धूप इत्यादि देकर नमस्कार कर शांत भाव से बैठ कर **'वैजयन्ती माला'** से निम्न मंत्र का जप करना चाहिए–

मंत्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

जप की संख्या साधक की इच्छा पर निर्भर करती है। वैसे पूर्ण सिद्धि प्राप्ति एवं दर्शन प्राप्ति हेतु इस द्वादशाक्षर मंत्र का 12 लाख मंत्र जप करना चाहिए। वर्तमान में सामान्य साधकों द्वारा इतने अधिक मंत्र जप सम्भव न होने पर साधक सवा लाख मंत्र जप का संकल्प लेकर अनुष्ठान सम्पन्न करें तो उसे सफलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री–570/-

अभिमन्यु के पराक्रम की आधारभूत दीक्षा

भगवान श्रीकृष्ण प्रणीत

गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा

.....जिसे अभिमन्यु की मां, सुभद्रा ने प्राप्त किया था

इतिहास का महत्वपूर्ण पृष्ठ! अर्जुन का राजभवन है, भगवान श्रीकृष्ण पधारे हुए हैं, स्वागत के लिए सुभद्रा उपस्थित है, हाथोंमें जल पात्र लिए वासुदेव श्रीकृष्ण का पद प्रक्षालन करने के लिए। पूर्ण श्रद्धा एवं आदर से सुभद्रा भगवान श्रीकृष्ण को भोजन कराती है और सेवा-सुश्रुषा करती हैं। भगवान श्रीकृष्ण उसके निर्मल हृदय से प्रसन्न होकर बोले–'सुभद्रा! तुम एक अत्यन्त तेजस्वी बालक की माता होने का गौरव प्राप्त करोगी। तुम्हारे गर्भ से जन्म लेने वाला बालक इतिहास में अपना नाम अंकित कर कुलगौरव को बढ़ायेगा।'

ऐसा कहकर भगवान श्रीकृष्ण ने अपना वरद हस्त सुभद्रा के सिर पर रख कर उसे आशीर्वाद दिया और प्रस्थान कर गए। समय बीता, बालक ने जन्म लिया, जन्म से ही वह शस्त्र विद्या एवं वेदादि ऋचाओं में पारंगत था, उसे कुछ भी सीखने में थोड़ा ही समय लगता था। उसके कौशल से सभी मुग्ध थे। काल का चक्र घूमा और महाभारत का युद्ध प्रारम्भ हो गया–एक तरफ पाण्डव और दूसरी ओर दुर्योधन, दु:शासनादि सौ कौरव, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह सदृश अनेक महारथी। काफी प्रयास और सैन्य बल होने के बावजूद भी कौरवों के पक्ष के योद्धाकाल कवलित हो रहे थे, जबकि इधर पांचों पाण्डव सकुशल थे।

एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि अर्जुन उपस्थित नहीं थे, यह बात कौरवों को पता चली, वे तो ऐसे ही संयोग की तलाश में थे। कौरवों ने 'चक्रव्यूह' की रचना की–यह सेना की एक ऐसी संरचना थी, जिसे भेद कर आगे जाने और विजय प्राप्त करने की विद्या अर्जुन के अलावा अन्य किसी को ज्ञात न थी। उधर पाण्डवों के खेमे में खलबली मची हुई थी, क्योंकि युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव इनमें से कोई भी उस भयंकर चक्रव्यूह को भेदने में असमर्थ थे, अन्दर प्रविष्ट होते ही पराजय निश्चित थी। पाण्डव हतप्रभ थे, तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा –'युधिष्ठिर! आज युद्ध के लिए अभिमन्यु जाएगा।'

युधिष्ठिर बोले–'प्रभु! आप यह कैसा आदेश दे रहे हैं

अभिमन्यु तो अभी बालक ही है, वह कैसे उन अश्वत्थामा, दुर्योधन, दु:शासन जैसे योद्धाओं के चक्रव्यूह को भेद सकेगा?'

कृष्ण पुन: बोले–'युधिष्ठिर देर न करो! अभिमन्यु को बुलाओ, उसे बालक न समझो, वह चक्रव्यूह भेदने की क्रिया जानता है।' अभिमन्यु ने पहुंचते ही भगवान कृष्ण को एवं युधिष्ठिर को दण्डवत प्रणाम किया। युधिष्ठिर बोले–'पुत्र, भगवान कृष्ण का आदेश है, कि आज तुम्हें युद्ध के लिए जाना होगा, परन्तु क्या तुम चक्रव्यूह भेदन की क्रिया जानते हो?'

अभिमन्यु बोला–'तात! आप निश्चिन्त रहें, मैं अकेले ही युद्ध के लिए पर्याप्त हूं। **जब मैं गर्भ में था, तो एक रात्रि को पिताजी (अर्जुन) मां को चक्रव्यूह की संरचना के बारे में विस्तार से बता रहे थे, चक्रव्यूह के सात द्वार होते हैं, एक के बाद एक करके वे सभी द्वारों को भेदने की युक्ति समझा रहे थे। तब मैं गर्भ में से सारी बातें स्पष्ट सुन रहा था, वे बातें मुझे अभी भी स्मरण हैं। सातवें द्वार के भेदन के बाद मां को नींद आ गई थी, जिससे आगे की बात मैं सुन न सका था।'** युद्ध प्रारम्भ हुआ और कौरवों का चक्रव्यूह ध्वस्त होने लगा, अभिमन्यु एक के बाद एक द्वार भेदता ही जा रहा था, उसके इस अद्भुत रणकौशल व ज्ञान से कौरवों के हौसले पस्त हो चुके थे। सातों द्वार उसने ध्वस्त कर दिये परन्तु अभिन्यु को चक्रव्यूह से वापस निकलने की विधि ज्ञात नहीं थी, वह उसे गर्भ में सुन न सका था, जिसकी वजह से उसे वीरगति प्राप्त हुई, परन्तु तब तक संध्या हो चुकी थी और उस दिन के युद्ध का समापन हो चुका था। कौरवों की भारी क्षति हुई थी, मात्र एक अभिमन्यु के कारण।

मात्र एक दिन के उस रणकौशल से आज अभिमन्यु का नाम इतिहास में अमर हो चुका है। और उसकीइस विजय के पीछे थी गर्भस्थ शिशु चेतना की वह क्रिया, वह दीक्षा जो श्रीकृष्ण ने एक दिन सुभद्रा का आतिथ्य स्वीकार कर उसके सिर पर हाथ फेर कर की थी। उसकी सफलता के पीछे वह दीक्षा थी, जो श्रीकृष्ण ने सुभद्रा को आशीर्वाद स्वरूप प्रदान की थी। इस 'गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा' द्वारा ही गर्भ में पल रहे अभिमन्यु में वह धारणा शक्ति आ पाई थी, चैतन्यता आ पाई थी, जिससे वह गर्भ में रहकर मां के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता रहा था।

गर्भ के बालक की चैतन्यता

मां का गर्भ अपने आप में पूर्ण ब्रह्माण्ड है और मां का गर्भ संसार का सबसे सुकोमल, सक्षम और सुरक्षित स्थान है। **जब तक वह शिशु मृत्यु लोक में जन्म नहीं ले लेता तब तक वह ब्रह्माण्ड से जुड़ा होता है,** क्योंकि उसमें निवास कर रही आत्मा ब्रह्माण्ड के ही किसी कोने से आई होती हैं हो सकता है, वह देव लोक से आया बालक हो, हो सकता है, वह पितृ लोक से आया बालक हो, हो सकता है कि वह किसी और लोक से आया हुआ बालक हो, जिस लोक से भी वह बालक आया हुआ है, उस लोक से उसका सीधा सम्पर्क और साहचर्य रहता है। यह सम्पर्क में रहने की क्रिया इसलिए होती है, कि उसका सारा शरीर ब्रह्माण्डमय होता है। वह केवल कानों से ही नहीं सुन पाता, वह केवल दो नेत्रों से ही नहीं देख

गर्भस्थ शिशु तीव्रता से चेतना ग्रहण करता है, इसी कारण दुष्ट आत्माएं, दुष्ट शक्तियां गर्भस्थ शिशु पर प्रभाव डालने का सबसे अधिक प्रभाव करती हैं। जिस शिशु को गर्भ में ही गुरु द्वारा प्रदत्त रक्षा स्वरूप गर्भस्थ शिशु चेतना दीक्षा प्राप्त हो जाती है, उस शिशु पर बुरी शक्तियां अपना कोई प्रभाव नहीं डाल पाती। गुरु द्वारा प्रदत्त शक्तिपात अभेद्य रक्षा कवच के समान कार्य करता है।

पाता, उसके सारे शरीर के हजारों-हजारों रोम छिद्र अपने आप में कान होते हैं, और प्रत्येक छिद्र अपने आप में परिपक्व स्वरूप होता है, इसलिए गर्भ का शिशु अपने आप में ज्यादा समर्थ होता है, किसी भी ज्ञान को ग्रहण करने में ज्यादा सक्षम होता है, वह किसी भी क्षेत्र में आसानी से पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

बाहरी जीवन में जो ज्ञान प्राप्त करने में बीस वर्ष लगते हैं, वह ज्ञान गर्भ में पल रहा शिशु मात्र बीस दिन में ही धारण कर सकता है। और फिर उसमें विस्मृति की क्रिया नहीं होती अर्थात् जो एक बार सुन लिया, समझ लिया वह शिशु के मानस पर हमेशा के लिए अंकित हो जाता है।

मां के संस्कारों व दोषों का गर्भस्थ शिशु पर प्रभाव

गर्भ का बालक तो ब्रह्मस्वरूप और आत्मस्वरूप होते हुए शुद्ध बुद्ध चैतन्य अवस्था में रहता है, उसका ब्रह्माण्ड से तादात्म्य होता है, परन्तु जिस गर्भ में वह पल रहा है, उसमें भी कई प्रकार के संस्कारगत दोष व्याप्त होते हैं, जिनका सम्बन्ध शिशु की जननी से होता है। गर्भ धारण करने वाली स्त्री के विकार, पूर्व जन्म दोष, इह जन्म दोष, छल, प्रपंच, असत्य आचरण, क्रोध, ईर्ष्या आदि वृत्तियों का प्रभाव शरीर के अंगों पर भी पड़ता है, जिससे गर्भाशय भी अछूता नहीं रहता। इन्हीं विकारों व संस्कार जनित दोषों के कारण शिशु को वह वातावरण मिल नहीं पाता जिससे वह चैतन्यता को बनाए रख सके। गर्भ दोष के कारण उसकी चेतना जाग्रत और प्रभावी होने के विपरीत सुप्त हो जाती है। परिणाम यह होता है, कि उसका (आत्मा के स्तर पर) मां से सम्पर्क कट जाता है। वह बाहर की आवाजें सुन नहीं पाता, गर्भ के बाहर के संसार को नहीं देख पाता और यदि देख भी पाता है, सुन भी पाता है, तो वह उन ध्वनियों को, दृश्यों को अधिक समय तक धारण नहीं कर पाता, विस्मृत कर देता है। अर्थात् जन्म लेने पर उसे कुछ याद नहीं रहता।

गर्भ को चैतन्य किया जा सकता है

पूर्ण पुरुष को पैदा करने के लिए यह आवश्यक है, कि मां के गर्भ को चैतन्यता प्रदान की जाए। जब शिशु गर्भ में होता है, तभी मंत्र क्रिया के माध्यम से 'पुंसवन क्रिया' सम्पन्न की जाती है। पुंसवन संस्कार शास्त्र का एक विधान है और सोलह संस्कारों में से एक संस्कार है। पुंसवन का तात्पर्य है कि गर्भ को एक ताकत दी जाए, एक क्षमता दी जाए....और इतनी चैतन्यता प्रदान की जाए, कि जन्म लेने वाले बालक के समस्त नेत्र और कर्ण जाग्रत हो सकें। पुंसवन के साथ ही बालक को चैतना भी प्रदान की जाती है। यह संस्कार माता, पिता नहीं दे सकते, यह तो गुरु ही प्रदान कर सकते हैं। गर्भस्थ बालक को यह चेतना गुरु के आशीर्वाद से ही प्राप्त हो सकती है या फिर गुरु प्रदत्त दीक्षा द्वारा ही ऐसा सम्भव है। **'गर्भस्थ बालक चैतन्य दीक्षा'** को गुरु दीक्षा प्राप्त कोई भी माता अपने शिशु के लिए प्राप्त कर सकती है। इस दीक्षा के फलस्वरूप माता के संस्कार जनित दोषों का प्रभाव गर्भ में पल रहे शिशु पर नहीं पड़ता और वह शिशु अपनी चैतन्यता को बनाए हुए गर्भ में ही बहुत कुछ ज्ञान व सुसंस्कार अर्जित कर लेता है।

गर्भस्थ चेतना प्राप्त शिशु व अन्य शिशुओं में अंतर

इसके बाद होने वाली सन्तानें कोई सामान्य नर या

गर्भ में ही ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया

शुकदेव का उदाहरण हमारे सामने है, वह मां के गर्भ में पूरे इक्कीस महीने तक रहा और अपनी मां को समझाता, मां जो कुछ कहती वह सुनता।

गर्भ में से ही उसने पूछा-'क्या मैं पूर्ण परिपक्व और ज्ञानवान बन गया हूँ?'

उसके पिता वेदव्यास ने कहा-'तुम पूर्ण सक्षम हो, मैंने जो कुछ तुम्हें ज्ञान देना चाहा वह तुम्हें दिया है।'

तब वह गर्भ से बाहर आया और जन्म लेने के बाद तुरन्त जंगल की ओर रवाना हो गया-पूर्ण ज्ञान और चेतना के साथ, पूर्णता के साथ। वह ज्ञान जो गर्भ से बाहर आने के हजार वर्षों के बाद भी नहीं प्राप्त हो सकता था, वह उसने गर्भावास में ही प्राप्त कर लिया। कालान्तर में शुकदेव को व्यास पीठ को सुशोभित करने का सुयोग भी इसी दीक्षा के प्रभाव से मिला था।

सीमन्तोन्नयन संस्कार का साकार रूप है–'गर्भस्थ शिशु चेतना दीक्षा'। जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने सुभद्रा को यह दिव्य दीक्षा प्रदान की, जिसके फलस्वरूप अभिमन्यु जैसा तेजस्वी बालक उत्पनन हुआ। इस संस्कार दीक्षा में सद्गुरु उस जीव को दीक्षा प्रदान करते हैं, जो सुख-दुख, रोग-व्याधि से परे है, जो स्वयं एक विशुद्ध आत्मा है, जिसे अपने पूर्वकालिक जन्मों का ज्ञान है। उस गर्भस्थ शिशु को इस तेजस्विता से युक्त करना जिससे वह संसार में सूर्य की भांति प्रखर हो सके, साथ ही उसमें संसार रूपी महाभारत में विजय प्राप्त करने के गुणों का प्रादुर्भाव हो सके। सद्गुदेव की ऐसी महान कृपा जिन्हें प्राप्त होती है, वे धन्य हैं, वे ही बालक सच्चे शिष्य-शिष्या बन कर गुरु को अपने भीतर पूर्ण रूप से समाहित कर सकते हैं। संसार में परम तत्व गुरु तत्व ही है और इस ज्ञान बीज का रोपण मां के गर्भ में स्थित शिशु में पूर्ण शुद्धता के साथ सम्भव है।

नारी नहीं अपितु अत्यन्त मेधायुक्त विलक्षण शिशु होते हैं, जो कालान्तर में सुयश को प्राप्त होते हैं। गर्भ में ही सद्गुरु प्रदत्त मंत्र शक्ति व आशीर्वाद से शिशु की कुण्डलिनी जाग्रत अवस्था में रहती है, जिससे वह जन्म लेने के बाद ही अन्य शिशु से अलग दिखने लगता है। उसकी आदतें, प्रवृत्तियाँ अन्य बालकों से हटकर होती हैं। वह जल्दी ही किसी भी बात को समझ लेता है, उसकी बुद्धि कुशाग्र होती है, तथ आत्मविश्वास भी ऐसे बालकों में अद्भुत रूप से होता है विद्यालय में ऐसे बालक कीर्ति एवं ख्याति प्राप्त करते हैं। पुरुषार्थ की इनमें कमी नहीं होती है, ये बालक बड़े होकर स्वयं तथा अपने कुल का नाम ऊंचा करते हैं।

वास्तव में 'गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा' तो हर मां को प्राप्त करनी ही चाहिए, क्योंकि बालक के जीवन निर्माण के लिए जो प्रयास माता-पिता को करना पड़ता है, उस कठोर परिश्रम की अपेक्षा गर्भावस्था में प्रदान की गई यह चेतना अधिक श्रेयस्कर प्रभावी होती है। शिशु के जीवन निर्माण के लिए माता-पिता की ओर से किया गया यह दूरगामी एवं दूरदर्शितापूर्ण कार्य है।

दीक्षा के उपरान्त आवश्यक तथ्य

इस विशेष दीक्षा के पश्चात् शिशु के पिता को नित्य कम से कम चार माला गुरु मंत्र का जप करना ही चाहिए और अपने आचार-विचार शुद्ध रखते हुए पत्नी के साथ मृदु व्यवहार करना चाहिए।

माता को चाहिए कि नित्य गुरु मंत्र के साथ ही साथ निम्न मंत्र का नित्य जप करे एवं साथ ही साथ नित्य एक बार **गर्भस्थ शिशु चेतना दीक्षा** की सीडी जो कि सद्गुरुदेव की आवाज में है ध्यानपूर्वक श्रवण करे।

मंत्र

।। ॐ ह्रीं मम सुतस्य श्रीकृष्ण
जन्म ह्रीं ॐ।।

इस दीक्षा को प्राप्त करने के बाद जब तक शिशु गर्भ में रहे, तब तक माता को शुद्ध आचार-विचार का पालन करना चाहिए। उसके आचार-विचारों एवं आस-पास के वातावरण का शिशु पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है। यदि वातावरण संगीतमय हो, तो बालक की जन्म से ही संगीत में रुचि होती है, यदि पिता गणित या विज्ञान में रुचि रखते हों, उस प्रकार की चर्चाएं करते हों, तो बालक पर उसका भी प्रभाव पड़ता है। यदि घर में सात्विक, शिष्ट वातावरण होता है, साधनामय वातावरण होता है, तो बालक पर भी वातावरण की रश्मियों का प्रभाव पड़ता है। माता को चाहिए कि वह सुन्दर और श्रेष्ठ साहित्य का पठन करे। यदि माता-पिता निरन्तर यह चिन्तन भी करते हैं, कि हमारा शिशु एक सफल चिकित्सक बने, तो भी उस चिन्तन को गर्भस्थ शिशु ग्रहण करता है, और जन्म से ही उसके मानस में यह बात अंकित हो जाती है कि उसे एक उच्च कोटि का चिकित्सक बनना ही है। वह स्वयं ही उसके लिए प्रयासरत होकर सफलता को प्राप्त करता है। जीवन निर्माण का यह श्रेष्ठतम पक्ष है।

प्रामाणिक - सिद्धिदायक, जयप्रदायक चक्र

मोती शंख

मोती शंख के सम्बन्ध में लिखना अथवा उसके गुणों और प्रभाव की प्रशंसा केवल कुछ पृष्ठों में तो सम्भव ही नहीं है, लक्ष्मी के हाथ में स्थित यह शंख देवी का सबसे महत्वपूर्ण आभूषण है, श्रीयंत्र की साधना तो सभी करते हैं, लेकिन जो मोती शंख की साधना करता है और अपने कार्य स्थल, व्यापार स्थल, घर अथवा भण्डार में मोती शंख स्थापित कर ले तो लक्ष्मी का वहीं स्थायी वास हो जाता है।

आज मैं सत्तर से भी ज्यादा उम्र का हो गया हूँ और जब मैं मात्र ग्यारह वर्ष का था, तभी मैंने संन्यास की दीक्षा ले ली थी,उसके बाद मेरे जीवन का अधिकांश हिस्सा संन्यास की मर्यादाओं का पालन करने और हिमालय स्थित उच्चकोटि के संन्यासियों के साथ समय बिताने के साथ-साथ ज्ञान प्राप्त करने का रहा है।

जब पूज्य गुरुदेव ने मुझे दीक्षा दी, तो उन्होंने सबसे पहले यह कहा था, कि तुम्हें भारत की दुर्लभ और श्रेष्ठ सामग्रियों पर शोध करना है और यह ज्ञात करना है कि इन सामग्रियों पर किस प्रकार से साधना की जाए, किस विधि से अनुष्ठान सम्पन्न किया जाये और क्या इस प्रकार की विधियों से लाभ होता है या नहीं, इन सारे तथ्यों की प्रामाणिक जानकारी ही तुम्हारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए और अपना पूरा जीवन इसी पर समर्पित करो।

गुरु की आज्ञा का पालन करना मेरे जीवन का प्रमुख लक्ष्य रहा है और गुरु दीक्षा के दिन से आज तक मैं उन दुर्लभ वस्तुओं पर प्रयोग करता रहा हूं और इन प्रयोगों में मुझे आश्चर्यजनक अनुभव तथा सफलताएं प्राप्त हुई हैं।

मैंने सियारसिंगी, हत्थाजोड़ी, एकाक्षी नारियल, श्वेतार्क गणपति और ऐसी सैकड़ों देव दुर्लभ वस्तुओं के बारे में जानकारी प्राप्त की, इनसे सम्बन्धित जितने भी प्रामाणिक ग्रंथ थे उनको खंगाल डाला, जहां जहां से भी उनसे सम्बन्धित साधनाएं उपलब्ध हो सकती थी, उन साधनाओं को प्राप्त किया और ऐसी हजारों हस्तलिखित पुस्तकों को नोट किया, जिनमें इस प्रकार की सामग्री तथा सम्बन्धित अनुष्ठान विधि उपलब्ध थी।

यद्यपि भारतवर्ष में दक्षिणावर्ती शंख का विशेष महत्व जनसाधारण में व्याप्त है, परन्तु मोती शंख अपने आपमें दुर्लभ और महत्वपूर्ण शंख है, इसकी चमक मोती के समान होने के कारण ही इसे मोती शंख कहा जाता है, यह

एक गोल आकार का सुन्दर, सुरम्य शंख होता है, जो अपने आप में कई विशेषताएं समेटे हुए है।

यह शंख छोटे बड़े कई साइजों में उपलब्ध होता है यह प्रकृति का वरदान है जो मनुष्यों को सहज ही प्राप्त है।

मैंने दक्षिणावर्ती शंख पर ही कई अनुष्ठान किये हैं और उनमें मुझे आशातीत सफलताएं मिली हैं, परन्तु मोती शंख में यह विशेषता है कि इस पर प्रयोग करने में साधारण गृहस्थ को भी विशेष सफलता प्राप्त हो जाती है, इस शंख की विशेषताओं के बारे में इतने लम्बे समय के अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि यह शंख लक्ष्मी का दूसरा स्वरूप ही है और प्रत्येक गृहस्थ को अपने घर में इस प्रकार का शंख रखना चाहिए, क्योंकि न मालूम कब इससे सम्बन्धित प्रयोग किसी साधु से प्राप्त हो जाए या किसी ग्रंथ में पढ़ने को मिल जाय और प्रयत्न करने पर इस प्रकार का शंख मिलना कठिन ही होता है

मैं आगे के पृष्ठों में कुछ विशेष प्रयोग इस शंख पर दे रहा हूं, मुझे विश्वास है कि वे प्रयोग गृहस्थ साधकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी और सार्थक होंगे।

आयुर्वेदिक प्रयोग

आयुर्वेदिक की दृष्टि से भी इस शंख का विशेष महत्व है, इस शंख की संरचना ही कुछ इस प्रकार से है, कि इसमें जल रखने पर उस जल में शंख के संयोग से कुछ विशेष प्रतिक्रिया हो जाने से वह जल विशेष प्रभावयुक्त हो जाता है–

1. रात्रि में इस शंख में जल भर रख दें तथा प्रात: काल इस जल को निकाल कर शरीर पर लगावें तो स्वत: ही चर्म रोग समाप्त हो जाते हैं।
2. इसी प्रकार इस शंख में बारह घंटे जल भर कर वह जल यदि शरीर पर पाये जाने वाले सफेद दाग पर लगावें और ऐसा कुछ समय तक करें तो धीरे-धीरे ये सफेद दाग समाप्त हो जाते हैं और नैसर्गिक शरीर से मेल खाती हुई चमड़ी वहां प्राप्त हो जाती है।
3. रात्रि को इस शंख में जल भर कर रख दें तथा प्रात:काल इस जल में कुछ गुलाब जल मिला कर अपने बालों में लगावें तो धीरे-धीरे सफेद बाल काले हो जाते हैं और स्थाई रूप से काले रहते हैं, इसी प्रकार वह जल भौहों पर या दाढ़ी पर लगाने से वहां के भी बाल काले हो जाते हैं।
4. यदि पेट में तकलीफ या आंतों में सूजन हो अथवा आंतों में किसी प्रकार का जख्म हो तो इस प्रकार बारह घण्टे तक इस शंख में रखे हुए जल का एक चम्मच नित्य पान करें तो धीरे-धीरे आंतों का जख्म मिट जाता है और पेट से सम्बन्धित रोग समाप्त हो जाते हैं।
5. लगभग बारह घंटे तक रखा हुआ जल दूसरे सामान्य जल में मिलाकर यदि प्रात: काल आंखों पर वह जल छिड़का जाय तो आंखें निरोगी, स्वस्थ और तन्दुरुस्त हो जाती हैं, तथा यदि कुछ समय तक इसका नियमित अभ्यास करें तो आंखों पर लगा हुआ नजर का चश्मा उतर जाता है और आँखें सामान्य स्वस्थ हो जाती हैं।

धार्मिक प्रयोग

धार्मिक दृष्टि से भी इस शंख को लक्ष्मी का अत्यन्त प्रिय आभूषण बताया है और एक प्रकार से लक्ष्मी का ही प्रति रूप माना गया है, अत: जिसके घर में पूजा स्थान में यह शंख रहता है उसके घर में निरन्तर लक्ष्मी का वास बना रहता है।

1. यदि प्रात: काल स्नान करते समय इस शंख में रखा गया थोड़ा सा जल लेकर वह पानी में मिला कर स्नान करें तो शरीर पुण्यवान और कान्तिमय होता है।
2. यदि इस प्रकार के शंख को कारखाने में स्थापित किया जाय तो स्वत: ही उनकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है, और आर्थिक उन्नति होने लगती है, इस शंख को विशेष रूप से दारिद्रय निवारक कहा जाता है, और इसके रहने से उसके व्यापार में वृद्धि होती रहती है।

दैहिक प्रयोग

1. मेरा ऐसा अनुभव है कि यदि प्रातःकाल स्नान कर शरीर को पोंछ कर इस शंख को अपने चेहरे पर हल्के हल्के रगड़े तो धीरे-धीरे चेहरे की झुर्रियां मिट जाती हैं और चेहरा कांतिमय बन जाता है।
2. जिनको अपने चेहरे की सुन्दरता को यथावत बनाये रखने की इच्छा हो या जो अपने चेहरे को कान्तियुक्त बनाये रखना चाहता हों उन्हें इस प्रकार का प्रयोग अवश्य ही करते रहना चाहिए।
3. यदि इस शंख को पूरे शरीर पर हल्के हल्के फेरा जाय और कुछ दिनों तक ऐसा प्रयोग किया जाय तो अवश्य ही पूरा शरीर मोती की तरह स्वस्थ, सुन्दर एवं लावण्यमय बन जाता है।
4. कभी-कभी आंखों के नीचे काले-काले से दाग बन जाते हैं, जिससे चेहरे की सुन्दरता समाप्त हो जाती है, यदि इस शंख को नित्य प्रातःकाल उठकर आंखों के नीचे धीरे-धीरे फेरा जाय और इस प्रकार कुछ दिनों तक करें तो अवश्य ही ये दाग समाप्त हो जाते हैं, ऐसा अनुभव है।

अनुष्ठान

इस शंख पर कई प्रकार के अनुष्ठान सम्पन्न किये जाते हैं पर मेरा मूलतः अनुभव है कि लक्ष्मी प्राप्ति से संबंधित तथा वशीकरण से सम्बन्धित अनुष्ठान इस पर पूर्ण सफल और प्रभावकारी होते हैं। मैं दो अनुभूत प्रयोग नीचे दे रहा हूं।

1. जीवन में सफलता प्राप्ति का प्रयोग

यदि घर में कलह हो या पति-पत्नी में मतभेद हो या पत्नी चाहती हो कि उसका पति उसके अनुकूल रहे या कोई व्यक्ति किसी अन्य को अपने अनुकूल में करना चाहता हो या किसी शत्रु को मित्रवत करना चाहता हो तो ऐसे सभी कार्यों में नीचे लिखा प्रयोग उपयोगी हो सकता है।

यह प्रयोग किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है, प्रातःकाल उठ कर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस **'मोती शंख'** को रख दें और इस पर कुंकुम आदि लगा दें, इसके बाद एक घृत का दीपक इसके सामने रख कर **'स्फटिक माला'** से निम्न मंत्र की एक माला फेरें। इस प्रकार तीस दिनों तक नित्य नियमपूर्वक करें तो निश्चय ही वह
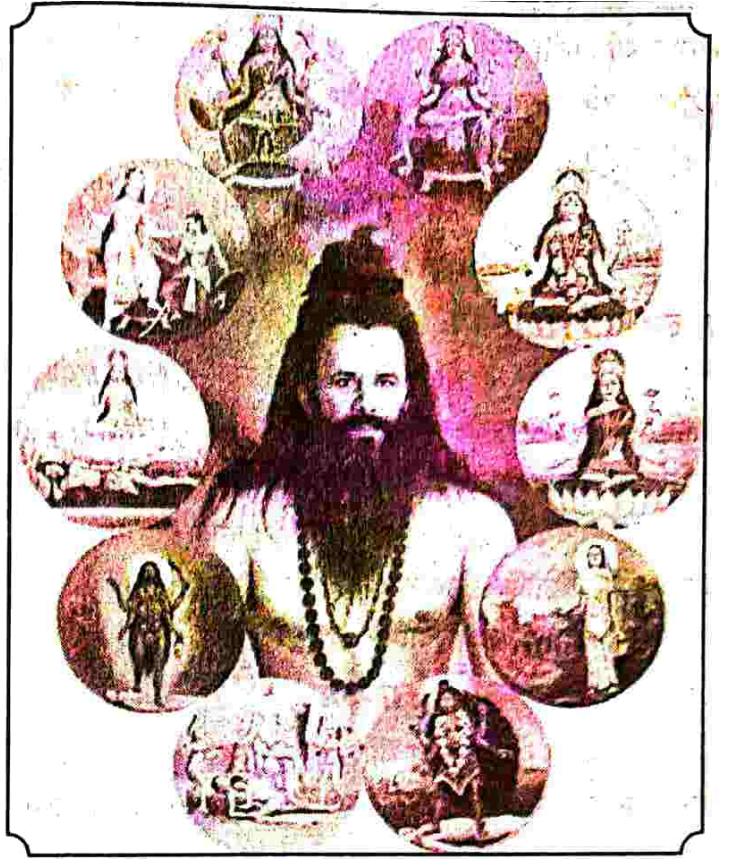
अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लेता है, इस प्रकार के प्रयोग में नित्य मात्र दस-पन्द्रह मिनट लगते हैं और ऐसा प्रयोग करने पर व्यक्ति मनोवांछित सफलता प्राप्त कर लेता है।

मंत्र

।। ॐ क्रीं अमुकं मे वशमानय स्वाहा।।

यह मंत्र अपने आप में विशेष शक्ति समेटे हुए है, इसकी एक विधि यह है कि मोती शंख एक पात्र में अपने सामने रख दें और चावल के साबुत दाने अपने सामने किसी पात्र में रख दें इस बात का ध्यान रखें कि चावल के दाने खण्डित न हों।

इसके बाद उपरोक्त मंत्र पढ़ कर एक दाना मोती शंख के मुंह में डाल दें, इस प्रकार नित्य 108 दाने 108 बार मंत्र पढ़ कर डाल दें।

मंत्र में जहां 'अमुक' लिखा हुआ है, वहां उस पुरुष या स्त्री का नाम उच्चारण करें। जब माला पूरी हो जाय, तब वह शंख एवं चावल एक कपड़े में बांधकर वहां से उठाकर सुरक्षित स्थान पर रख दें।

दूसरे दिन भी इस प्रकार 108 बार मंत्र पढ़ कर चावल के दाने चढ़ायें, इस प्रकार जब 30 दिन तक प्रयोग कर लें तो वे चावल के दाने किसी सफेद कपड़े में बांधकर अपने

सन्दूक या किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें, ऐसा करने पर वह व्यक्ति उसके अनुकूल होता है और वह जैसा चाहता है, उसी प्रकार से कार्य सम्पन्न होगा।

साधना सामग्री मोती शंख- 210/-

स्फटिक माला- 300/-

2. लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग

यह शंख लक्ष्मी प्राप्ति, आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि आदि में भी विशेष रूप से सहायक है कर्जा उतारने में तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावयुक्त है।

जो व्यक्ति इस प्रकार का प्रयोग चाहता है या अपने जीवन में पूर्ण आर्थिक उन्नति एवं व्यापार वृद्धि चाहता है, उसे यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

प्रयोग

किसी बुधवार को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने एक पात्र में **'मोती शंख'** को रख दें और उस पर केसर से स्वस्तिक चिह्न बना दें, इसके बाद निम्न मंत्र जप करें, मंत्र जप में **'स्फटिक माला'** का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

मंत्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं दारिद्र्य विनाशिन्यै धनधान्य समृद्धिं देहि देहि नमः।।

इस मंत्रोच्चारण के साथ एक-एक चावल इस शंख के मुंह में डालते रहें, इस बात का ध्यान रखें कि चावल टूटे हुए न हों इस प्रकार नित्य एक माला फेरें, यह प्रयोग भी 30 दिन का है, जो अपने आपमें अचूक और प्रभावयुक्त है।

पहले दिन की माला समाप्त होने के बाद उसमें अर्पित अक्षत एक पात्र में रख दें और दूसरे दिन भी उसी प्रकार मंत्र जप करते हुए उसमें एक-एक मंत्र के साथ एक-एक चावल के दाने डालते रहें।

तीस दिन के बाद यह प्रयोग समाप्त होने पर चावलों सहित इस शंख को सफेद कपड़े में बांध कर अपने घर में पूजा स्थान में रख दें या कारखाने फैक्ट्री या व्यापारिक स्थल में स्थापित कर दें, यह शंख साधक के पास जब तक रहेगा, तब तक उसके जीवन में आर्थिक अभाव नहीं होगा, तथा निरन्तर आर्थिक व्यापारिक उन्नति होती रहेगी, यह भी स्पष्ट है कि ऐसा प्रयोग करने पर शीघ्र ही व्यक्ति कर्जे से मुक्ति पा लेता है, और सभी दृष्टियों से उन्नति करता रहता है। **बाद में आप बुधवार के दिन उपरोक्त मंत्र की एक माला करते रहें।**

दीपावली के दिन भी इस शंख का पूजन किया जा सकता है और जिस प्रकार लक्ष्मी की पूजा होती है उसी प्रकार इसका पूजन किया जाना चाहिए।

वस्तुतः यह शंख अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ एवं प्रभावयुक्त है तथा ऐसे विरले ही सौभाग्यशाली होंगे जिनके घर में इस प्रकार का दुर्लभ महत्वपूर्ण शंख पाया जाता होगा, पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि इस प्रकार का शंख तभी सफलता देने वाला हो सकता है जब वह प्राण संजीवनी क्रिया से सिक्त मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो।

वस्तुतः यह शंख प्रत्येक साधु-संन्यासी और गृहस्थ के लिए उपयोगी है और मैंने इस पर कई प्रयोग सम्पन्न किये हैं, आगे फिर कभी इस शंख पर किये गये प्रयोगों को विवरण देने का प्रयत्न करूंगा।

साधना सामग्री-510/-

नकसीर

नाक से खून निकलने पर आम बोलचाल की भाषा में इसे 'नकसीर' कहा जाता है। नकसीर का केवल एक ही लक्षण दृष्टिगोचर होता है यह है नाक से रक्त निकलना। इस रोग का कारण भी अनियमित आहार-विहार ही हैं भोजन में बहुत ज्यादा मिर्च-मसाले, खट्टे, तीक्ष्ण, चटपटे, गरिष्ठ पदार्थों का सेवन एवं तेज गर्मी में धूप में घूमना, शराब आदि का सेवन भी कारण है। वंशानुक्रम के कारण यह भी हो सकता हैं।

- ☆ नकसीर आने पर नथूनों में दो-दो बूँद नींबू का रस टपकाने से नाक से रक्त गिरना तुरन्त बन्द हो जाता है।
- ☆ नकसीर आने पर प्याज का रस नाक में डालें।
- ☆ हरे धनिये का रस सूँघाने एवं पत्तियों को पीसकर सिर पर लेप करने से गर्मी के कारण नाक से बहने वाला रक्त बन्द हो जाता है।
- ☆ ठण्डा पानी सिर पर धार बाँधकर डालने से रक्त स्राव बन्द हो जाता है।
- ☆ दूध में शक्कर मिलाकर केले के साथ लगातार १० दिन तक सेवन करें, लाभ होगा।
- ☆ तुलसी का रस नाक में टपकायें, लाभ होगा।
- ☆ रोगी की गर्दन को पीछे झुकाकर लिटायें।
- ☆ जिन्हें बारम्बार नकसीर आती हो उनके लिए आंवला बेहद लाभदायक है। आंवले का भोजन में प्रयोग करें चाहे मुरब्बा बनाकर खायें। सूखे आंवलों को रात में भिगोकर उस पानी से सुबह सिर धोयें।

(वैद्य की सलाह लेकर उपयोग करें)

जगदीश्वर विष्णु स्तोत्र

'जगदीश्वर' जो सम्पूर्ण जगत के पालनकर्ता हैं, जिनकी इच्छा से समस्त चराचर जगत गतिशील है, जों पूर्ण पुरुष हैं, जिन्होंने अपने वक्षस्थल में 'श्री वत्स' धारण किया हुआ है और चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म लिए हुए हैं, क्षीर सागर में शेष नाग की शैय्या पर विराजमान हैं, सृष्टि के पालनकर्त्ता हैं, लक्ष्मी जिनकी सेवा में निरंतर अग्रसर रहती हैं, जिनके आश्रय में जाकर निर्बल से निर्बल प्राणी भी स्वयं को बली अनुभव करता है, उन जगतव्यापी जगदीश्वर को भगवान विष्णु भी कहा गया है। ऐसे जगदीश्वर की साधना के फलस्वरूप व्यक्ति अपने जीवन में आध्यात्मिक स्थिति में तो उच्चता प्राप्त कर ही लेता है, श्री सम्पन्न होने के कारण उसे भौतिक पूर्णता भी प्राप्त होती है।

जगदीश्वर विष्णु ध्यान

उद्यत्-प्रद्योतन-शत-रुचिं तप्त-हेमावदाभम्।
पार्श्व द्वन्द्वे जलधि-सुतया विश्व धात्र्या च जुष्टम्।।
नाना रत्नोल्लसित-विविधाकल्पमापीत वस्त्रम्।
विष्णुं वन्दे वर कमल कौमोदिकी चक्र पाणिम्।।

मूल पाठ

ॐ आदाय वेदाः सकलाः समुद्रान्निहत्य शङ्ख रिपुऽत्युदग्रम्।
दत्ताः पुरा येन पितामहाय, विष्णुं तमाद्यं भज मत्स्य-रूपम्।।
दिव्यामृतार्थं मथिते महाब्धौ देवासुरैर्वासुकि-मन्दराद्यैः।
भूमेर्महा-वेग-विघूर्णितायास्तं, कूर्ममाधार-गतं-स्मरामि।।
समुद्रकाञ्ची सरिदुत्तरीया, वसुन्धरा मेरु-किरीट-भारा।
दंष्ट्राग्रतो येन समुद्धृता भूस्तमादि-कोलं शरणं प्रपद्ये।।
भक्तार्ति-भङ्ग-क्षमया धिया यः, स्तम्भान्तरालादुदितो नृसिंहः।
रिपुं सुराणां निशितैर्नखाग्रैर्विदारयन्तं न च विस्मरामि।।
चतुस्समुद्राऽऽभरणा धरित्री, न्यासाय नालं चरणस्य यस्य।
एकस्य नान्यस्य पदं सुराणां, त्रि-विक्रमं सर्व-गतं नमामि।।
त्रि- सप्त-वारं नुपतीन्निहत्य, यस्तर्पणं रक्त-मयं पितृभ्यः।
चकार दोर्दण्ड-बलेन सम्यक्, तमादि-शूरं प्रणमामि रामम्।।

कुले रघूणां समवाप्य जन्म, विधाय सेतुं जलधेर्जलान्तः।
लंकेश्वरं यः शमयां चकार, सीता-पतिं तं प्रणमामि भक्तया।।
हलेन सर्वानसुरान्निकृष्य, चकार चूर्णं मूषल-प्रहारैः।
यः कृष्णमासाद्य बलं बलीयान्, भक्त्या भजे तं बलभद्र-रामम्।।

पुरा सुराणामसुरान् विजेतुं, सम्भावयंश्चीवर-चिह्न-वेशम्।
चकार यः शास्त्रममोघ-कल्पं, तं मूल-भूतं प्रणतोऽस्मि बुद्धम्।।
कल्पावसाने निखिलैः खुरैः स्वैः संघट्टयामास निमेष-मात्रात्।
यस्तेजसा स्वेन ददाह भीमो, विष्ण्वात्मकं तं तुरगं भजामः।।
शंखं सु-चक्रं सु-गदां सरोजं, दोर्भिर्दधानं गरुडाधिरूढम्।।
श्रीवत्स-चिन्हं जगदादि-मूलं तमाल-नीलं हृदि विष्णुमीडे।।
श्रीराम्बुधौ शेष-विशेष तल्पे, शयानमन्तः स्मित शोभि वक्त्राम्।
उत्फुल्ल-नेत्राम्बुजमम्बुदाभमाद्यं श्रुतीनामसकृत स्मरामि।।

फल-श्रुति

प्रीणयेदनया स्तुत्या जगन्नाथं जगन्मयम्।
धर्मार्थ-काम मोक्षाणामाप्तये पुरुषोत्तमम्।

।।श्रीविष्णु-स्तवः सम्पूर्णम्।।

अति भयंकर शंखासुर राक्षस को मार कर असुरों द्वारा समुद्र में प्रक्षिप्त सभी वेदों को निकालकर पितामह ब्रह्मा को समर्पित करने वाले 'मत्स्यावतार' उस आद्यशक्ति विष्णु को नमन करता हूँ।

दिव्यतम अमृत को प्राप्त करने के लिए सुर और असुरों द्वारा वासुकि नाग और मन्दराचल पर्वत के द्वारा समुद्र मंथन से विचलित पृथ्वी को स्तम्भित करने वाले 'कूर्मावतार' भगवान की मैं वन्दना करता हूँ।

समुद्र जिसकी करधनी है, नदी रूपी उत्तरीय धारण की हुई, सुमेरु पर्वत को मुकुट बना कर पहनी हुई वसुमति पृथ्वी को दांत के अग्रभाग पर धारण किये हुए 'शूकर अवतार' भगवान विष्णु का मैं ध्यान करता हूँ।

भक्त प्रह्लाद के कष्ट को दूर करने के लिए स्फटिक के स्तंभ को विदीर्ण करके प्रकट हुए देवों के शत्रु हिरण्यकश्यप को नखों के अग्रभाग से चीर डालने वाले 'नृसिंहावतार' भगवान विष्णु को मैं नमन करता हूँ।

चारों समुद्रों से विभूषित विस्तृत पृथ्वी पर चरण स्थापन के लिए जिसे स्थान नहीं मिला, स्वर्ग में भी द्वितीय चरण रखने के लिये जिसे जगह नहीं मिल पाई, उस 'वामनावतार' भगवान को मैं प्रणाम करता हूँ।

जिसने अपने भुजबल से इक्कीस बार अनेक उद्दंड क्षत्रिय राजाओं को मारकर अपने पितरों को तृप्त किया, उन आदि वीर 'परशुराम' को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

पावन रघु कुल में जन्म लेकर समुद्र में पुल बांध कर तथा लंका में जाकर रावण का वध करके सीता को प्राप्त करने वाले 'भगवान राम' की भक्ति भाव से वन्दना करता हूँ।

भगवान श्रीकृष्ण की शक्ति से बल प्राप्त करके, हल से खींच कर मूसल प्रहार से अपने समस्त शत्रुओं का संहार करने वाले 'वीरवर बलराम जी' को मैं प्रणाम करता हूँ।

जिसने असुरों को परास्त करने के लिए चीवर-वेश धारण किया था तथा दिव्यतम शास्त्र ज्ञान को देवताओं में प्रचारित किया, उस मूलभूत 'बुद्धावतार' को मैं नमन करता हूँ।

जिसने कल्प के अंतिम समय में अपने तीखे खुरों के अग्रभाग से समस्त पृथ्वी को खोद डाला तथा सारे संसार को अपने तेज से भस्म करके नष्ट करने वाले भगवान 'हयावतार' को मैं प्रणाम करता हूँ।

चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये हुए, जिनका वक्षस्थल श्री वत्स चिन्ह से सुशोभित है, गरुड़ पर विराजमान, समस्त जगत के आदि पुरुष, श्याम वर्ण 'भगवान विष्णु' को मैं नमन करता हूँ।

फलश्रुति

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए परम पुरुष उस परमेश्वर को इस स्तुति द्वारा प्रसन्न करें।

शिष्य धर्म

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी देवताओं की साधना करने की अपेक्षा, गुरु साधना को ही सभी सफलताओं की कुंजी समझता है।

★ गुरु का पद अत्यंत गूढ़, दुर्लभ एवं देवताओं के लिए भी अप्राप्य है तथा गुरुत्व तो गंधर्वों, किन्नरों, शिव के गणों द्वारा भी प्रपूजित होता है। देवता भी गुरुत्व के प्रभाव के कारण विभिन्न लोकों में जाकर पुण्यों का उपभोग करते हैं। वह गुरुत्व शाश्वत और जन्मादि क्रियाओं से परे है। इसलिए शिष्य को सदैव गुरु चरणों में तन-मन-धन तीनों प्रकार से समर्पित बने रहना चाहिए।

☆ **यह शरीर मल-मूत्र, दुर्गन्ध, लार, थूक, माँस-मज्जा, हड्डी के अलावा कुछ नहीं हैं, इसीलिए इस शरीर पर गर्व न करते हुए या शरीर से उपार्जित यश, ख्याति पर गर्व न करते हुए श्रीगुरु चरणों में उपस्थित होना ही शिष्य की सार्थकता हैं। तभी वह गुरुत्व के रहस्य से परिचित हो सकता हैं।**

★ सद्गुरु का विग्रह (या चित्र) शिव के विग्रह के समान है, गुरु का चिंतन शिव चिंतन है, गुरु आरती जगदीश्वर की आरती है, गुरु पूजन ही इष्ट पूजन है और गुरु में ही सभी देवी-देवताओं का वास है, ऐसा उच्च चिंतन धारण करने में ही शिष्य का कल्याण है।

☆ **सद्गुरु के चरण कमल का एक रज-कण भी संसार सागर से पार उतार सकने में पूर्ण सक्षम है, गुरु चरणों की धूलि ही सर्वस्व प्रदान करने में समर्थ है, शिष्य को मन में इसी प्रकार का भाव रखना चाहिए।**

★ शिष्य जब भी गुरु के निकट जाए तो हर क्षण सतर्क रहे, सजग रहे, क्योंकि गुरु के देह से नि:सृत होने वाली रश्मियां भी शिष्य के ताप-त्रय का हरण करने में पूर्ण-सक्षम होती है। उनके दर्शन करते समय जितना ही शिष्य प्रबुद्ध और सजग रहेगा, उतना ही कृतार्थ होता चला जाएगा।

☆ ब्रह्मरंध्र अर्थात सहस्रार के मध्य में स्थित चन्द्र मण्डल में श्वेत कमल पर विराजमान सद्गुरुदेव के दोनों चरण कमलों का शिष्य को ध्यान करना चाहिए। इससे उसके ताप-संताप समाप्त होते हैं तथा कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होती है।

★ गुरु मंत्र और गुरु साधना का अनुष्ठान करने से हृदय शनै: शनै: पावन हो जाता है, मृत्यु भय एवं अन्य सांसारिक भय समाप्त हो जाते हैं, प्रत्येक शिष्य को गुरु मंत्र का अनुष्ठान एवं गुरु साधना अपने जीवन में करनी ही चाहिए।

✧ समर्थ और योग्य गुरु का मतलब है - उसको सिद्धियां प्राप्त हों, ऐसा सामर्थ्य प्राप्त हो, जोआपको ले जा सके अपने साथ और सिद्धाश्रम को दिखा सके, उन योगियों को दिखा सके, उनके पास बिठा सके।

✧ **प्रत्येक युग में प्रत्येक परिस्थिति में सिद्धाश्रम के योगी अलग-अलग नामों से, अलग-अलग रूपों में पृथ्वी तल पर अवतरित हुए हैं और आम लोगों की तरह रहकर ही उन्होंने जीवन यापन किया है, चाहे वे कृष्ण हो या राम हो या शंकराचार्य।**

✧ सिद्धाश्रम के योगियों ने अपने जीवन में कोई विशिष्टता नहीं रखी, क्योंकि समाज का भाग बनकर ही समाज को चेतना दी जा सकती है, परंतु यदि ऐसे युग पुरुष को पहिचान न सके, ऐसे सद्गुरु के पास न पहुंच सके, तो यह युग का ही दुर्भाग्य है।

✧ ईश्वर ने तुम्हारा जन्म एक विशेष उद्धेश्य के लिए किया है, क्योंकि भगवान एक घास का तिनका भी बेकार में पैदा नहीं करता. . .और तुम्हें भी यदि ईश्वर ने जन्म दिया है, तो जरूर उसके पीछे कोई हेतु है, कोई कारण है, कोई चिंतन है।

✧ **मैं तो तुम्हें आवाज दे रहा हूँ युगों-युगों से, मैं तो तुम्हें बुला रहा हूँ जन्म-जन्म से, मैं तो निमंत्रण दे रहा हूँ दोनों भुजाएं फैलाकर तुम्हें सीने से लगाने के लिए, दिल में पूरी तरह उतार देने के लिए।**

✧ **मैं तो काफी समय से आवाज दे रहा हूँ निमंत्रण दे रहा हूँ तुम्हें, स्वीकृति दे रहा हूँ, अपने पास आने की, आकर मिलने की, मिलकर एकाकार हो जाने की, एकाकार होकर समर्पित हो जाने की, और समर्पित होकर अपने अस्तित्व को मिटा देने की।**

✧ जीवन में तुम्हें रुकना नहीं है, निरंतर आगे बढ़ना है और इस आगे बढ़ने में जो आनन्द है, जो तृप्ति हैं, वह जीवन का सौभाग्य है।

✧ समुद्र तो बांहे फैलाए खड़ा रहता है, नदी वेग में आती है . .. और बीच में रुकावट आती है, पर वह नदी रुकती नहीं, गांव आते हैं, तो गांव को बहा देती है। समाज, किनारों के अंदर नदी कोबांधने की कोशिश करता है, तो नदी उन किनारों को तोड़ देती है। नदी तो तेजी से भागती है, अपने प्रियतम से मिलने . . .और जिस क्षण समुद्र में लीन हो जाती है, बिल्कुल शांत हो जाती है, तब उसकी लहरों से संगीत फूट पड़ता है, जिसे साधना और शिष्यता की पूर्णता कहा है, ब्रह्म की उपलब्धि कहा है।

✧ जीवन के रास्ते पर अत्यंत पेचींदी पगडण्डियां हैं, पर मैं तुम्हें इनसे अलग हटाकर प्रेम की नाव में यात्रा करने के लिए कह रहा हूँ, तुम्हें प्रेम के सागर में हिचकोले खाने को कह रहा हूँ, वहां जाने की बात कर रहा हूँ, जहां प्रेम का अनन्त ज्ञान है।

✧ प्रेम तो एक उत्फुल्ल सुवास है, एक सुगंध है, प्रेम तो एक छल-छल बहता हुआ झरना है, जिसके नीचे स्नान करने से पूरे तन-मन को मस्ती की हिंलोरे सी आकर के एक फुहार सी पड़कर के भिगो देती है।
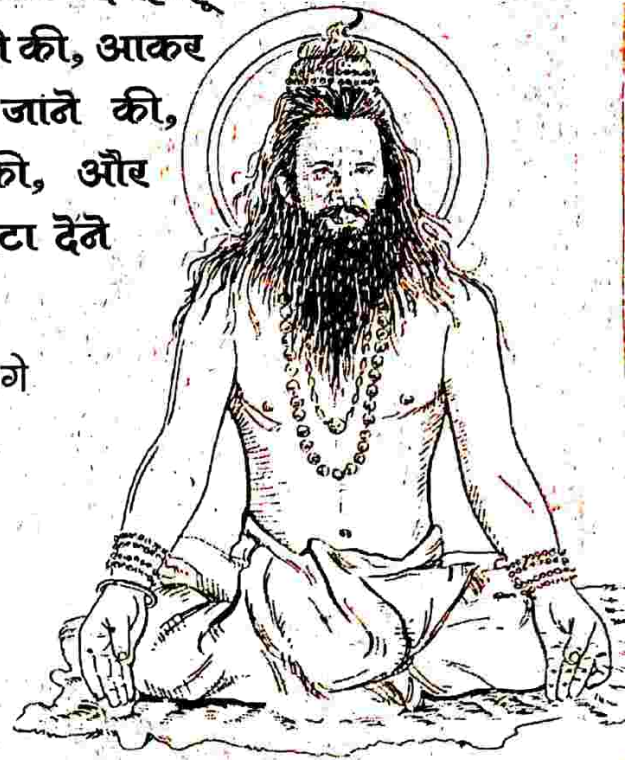
मृत्यु के अधिपति यमराज को धर्मराज भी कहा जाता है क्योंकि रोग, शोक, दु:ख, भय, पीड़ा और मृत्यु का धर्म के अनुसार निर्णय करने वाले प्रधान यमराज ही है, इन्हीं विपदाओं के रहते कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है, मानसिक बाधा के प्रभाव स्वरूप उसके जीवन की शक्तियों का ह्रास होता है, अत: जहां देवताओं का पूजन मनन आवश्यक है, वहीं धर्मराज यमराज की पूजा भी अत्यंत आवश्यक है।

विभिन्न प्रकार के शारीरिक, मानसिक तथा दैहिक रोगों की उत्पत्ति के कारणों में व्यक्ति द्वारा किये गये उसके पूर्व जन्म के कर्म तथा वर्तमान जन्म के कर्म प्रधान रहते हैं वर्तमान जन्म के कर्म पर तो नियंत्रण किया जा सकता है, लेकिन पूर्व जन्म में किये गये कर्मों के कारण इस जन्म में जो दुर्भाग्य, बाधा, पीड़ा झेलनी पड़ती है उस पर नियंत्रण कैसे किया जाए?

मंत्र महोदधि ग्रंथ में लिखा है कि -

पाथः संयुतमेघसन्निभतनुः प्रद्योतनस्यात्मजो,
नृणां पुण्यकृतां शुभावहवपुः पापीयंसां दुःखकृत।
श्रीमद्दक्षिणदिक पतिर्महिषगोभूषांभरालङ्कृतो,
ध्येयः संयमनीपतिः पितृगणस्वामी यमो दण्डभृत।।

अर्थात जल से भरे हुए बादल के समान श्याम शरीर वाले, सूर्य के पुत्र, श्रेष्ठ कार्य करने वाले मनुष्यों के जीवन को उत्तम फल देने वाले, दुराचारियों को दु:ख देने वाले, दक्षिण दिशा के स्वामी, भैसे की सवारी पर आरूढ़, विभिन्न प्रकार के श्रेष्ठ आभूषणों से सुशोभित, पितृगणोंएवं नरकपुरी के स्वामी, दण्डधारी यमराज को प्रणाम।

यह स्पष्ट है कि यमराज सूर्य के पुत्र हैं, अत: यमराज की पूजा करने से सूर्य पूजा का भी फल प्राप्त होता है। सूर्य मनुष्य के व्यक्तित्व के स्वामी प्रधान देव हैं, जिनके चारों ओर सभी ग्रह परिक्रमा करते हैं। ऊपर लिखित मंत्र धर्मराज यमराज का ध्यान मंत्र है।

धर्मराज साधना

यह तो स्पष्ट है कि सभी प्रकार की बाधाओं, रोग, शोक का मूल कारण मनुष्य के कर्म हैं और उनका निर्णय करने का अधिकार केवल धर्मराज यमराज को ही है, अत: धर्मराज यमराज को ही है, अत: धर्मराज यमराज की पूजा एवं

साधना करने से मनुष्य को शरीर, मन, कार्य की दृष्टि से पूर्णता प्राप्त होती है, विभिन्न रोग पूर्ण नियंत्रण में रहते हैं।

आप जो कार्य करते हैं, उनका प्रभाव आपके परिवार पर भी पूर्ण रूप से पड़ता है, अत: धर्मराज यमराज की साधना पूरे परिवार के लिए अत्यंत आवश्यक है, 'रहस्य तंत्रम ग्रंथ' में कहा गया है कि –

मृत्युंजयेन पुटितं धर्मराजस्य मंत्र जयेत।
सर्वोपद्रव सन्त्यक्तो लभते वांछितं फलम।।

अर्थात जो व्यक्ति मृत्युंजय मंत्र से सम्पुटित धर्मराज मंत्र का जप एवं साधना करता है, वह सब उपद्रवों से मुक्त हो कर वांछित फल को प्राप्त करता है।

शारीरिक व्याधि से अधिक पीड़ा कारक मानसिक व्याधि है, जिसके कारण से मनुष्य हर समय चिंतित रहता है और उसके जीवन में उन्नति नहीं हो पाती है, मानसिक व्याधियों का मूल कारण पारिवारिक अशांति, राजकीय बाधा, सभी कार्यों में निरंतर रुकावट, विभिन्न प्रकार की शारीरिक पीड़ाएं होती हैं, अत: मन को श्रेष्ठ कर लेने से शरीर श्रेष्ठ हो जाता है और इस कार्य के लिए धर्मराज साधना हर दृष्टि से उपयुक्त है।

इस साधना के फलस्वरूप वर्तमान समय के दु:खों का समाधान तो प्राप्त होता ही है, आने वाले समय में भी आने वाली बाधाओं के निवारण में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती है।

जो व्यक्ति भय को जीत लेता है, वह संसार को जीत सकता है तथा धर्मराज साधना है जिसका पूर्ण फल प्राप्त होने पर सभी कार्य निरंतर सफल होते रहते हैं।

साधना समय

सभी साधनाओं के लिए कुछ विशेष समय तथा दिन निर्धारित किये जाते हैं, जिसके कारण साधना का पूर्ण लाभ प्राप्त हो सके, पूरे वर्ष में कोई भी साधना किसी भी समय सम्पन्न की जा सकती है, लेकिन निश्चित समय पर साधना प्रारभ करने से उसका फल कई गुना अधिक प्राप्त होता है, यमराज सूर्यपुत्र होने के कारण इस साधना को रविवार को ही प्रारंभ एवं सम्पन्न करना उचित है। यह साधना विवस्वत सप्तमी (23.07.15) से या किसी भी रविवार से प्रारम्भ की जा सकती है।

साधना विधि

इस विशिष्ट साधना हेतु विशेष सामग्री की आवश्यकता रहती है, और इस सामग्री **11 गोमती चक्र, 11 हकीक पत्थर तथा एक ऋतु फल** आवश्यक है। यदि तरबूज का फल प्राप्त हो सके, तो अत्यंत उत्तम रहता है, इसके अलावा काजल, धूप, दीप, नैवेद्य, कुंकुम, लाल चंदन, पुष्प इत्यादि पहले से लाकर रखें।

सर्वप्रथम स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में रात्रि को बैठे, लकड़ी के एक बाजोट (चौकी) पर लाल वस्त्र बिछाकर काजल से एक त्रिकोण बनायें। फिर त्रिभुज के तीनों कोनों पर 3 गोमती चक्र एवं 3 हकीक पत्थर रखें। सबसे नीचे त्रिकोण के नीचे पर दो गोमती चक्र तथा दो हकीक पत्थर रखें। ये दोनों यमराज के द्वारपाल हैं, त्रिकोण के मध्य में एक ऋतुफल रखें।

इस साधना को रात्रि को ही सम्पन्न करना आवश्यक है, साधना के समय तेल का दीपक तथा धूप अवश्य जलायें, उपरोक्त तिथि को अथवा किसी भी रविवार को साधना प्रारंभ करने से पहले संक्षिप्त रूप से गुरु पूजन करें, और उसके पश्चात साधना सामग्री ऊपर दिये गये विवरण के अनुसार रखकर धर्मराज यमराज साधना प्रारंभ करें, साधना प्रारंभ करते समय निम्नलिखित मंत्र पढ़ें। यमराज का ध्यान करें, यह साधना का संकल्प है -

मम सकलापदां विनाशनाय सर्वरोगाणां प्रशमनाय श्री धर्मराज मंत्रजपऽहंकरिष्ये।

इसके पश्चात निम्न ध्यान मंत्र का जप 11 बार करें-

ध्यान मंत्र

पाथः संयुतमेघसन्निभतनुः प्रद्योतनस्यात्मजो,
नृणां पुण्यकृतां शुभावहवपुः पापीयसां दुःखकृत।
श्रीमद्दक्षिणदिक पतिर्महिषगोभूषांभरालङ्‌कृतो,
ध्येयः संयमनीपतिः पितृगणस्वामी यमो दण्डभृत।।

यदि संस्कृत में जप संभव न हो सके तो लेख के प्रारम्भ में दिये गये इसके हिन्दी अनुवाद का जप करें, प्रत्येक बार मंत्र जप के साथ ही एक गोमती चक्र पर अपने हाथ रखें, इस प्रकार सामने बाजोट पर बनाये गये प्रत्येक बिन्दु पर एक-एक बार हाथ रखकर ध्यान आवश्यक है।

प्रत्येक बार ध्यान मंत्र का जप करते हुए, मानसिक रूप से संकल्प आवश्यक है और जिस प्रकार की बाधाओं के निराकरण हेतु ये साधना की जा रही है, उन विशेष बाधाओं का नाम लेकर **'मेरा कार्य सफल करो'** यह कहना आवश्यक है। इसके पश्चात् **'काली हकीक माला'** से निम्न मंत्र की 11 माला जप वहीं आसन पर बैठ कर करें।

मंत्र

।।ॐ ह्रीं क्रों आं वैवस्वताय धर्मराजाय भक्तानुग्रहकृते नमः।।

इस मंत्र का जप नियमित रूप से ही किया जा सकता है, **सात दिन नियमित रूप से इस मंत्र का जप करने से परिणाम सामने दिखाई देते हैं।**

मंत्र समाप्ति के पश्चात् त्रिभुज के बीच में रखे हुए तरबूज को कांटे और उसमें से कुछ हिस्सा धर्मराज को अर्पित करें, यह बलि विधान है, शेष तरबूज उसी स्थान पर बैठे स्वयं ग्रहण करें।

साधना की पूर्णता के पश्चात् सब सामग्री तथा वस्त्र किसी पीपल के वृक्ष अथवा नदी में अर्पित कर दें।

उड्डीस तंत्र में लिखा है कि -

।। मृत्योर्मा नित्यं यः करोति दिने दिने तस्य रोगाः प्रणश्यन्ति दीर्घायुश्च प्रजायते।।

अर्थात् जो व्यक्ति प्रति दिन धर्मराज यमराज मंत्र का जप करता है, उसके सभी रोग नष्ट हो जाते हैं और वह समस्त सुखों के साथ दीर्घायु प्राप्त करता है, धर्मराज यमराज सूर्य के पुत्र हैं तथा शुक्र के भ्राता हैं, शुक्र मनुष्य के जीवन में ऐश्वर्य, भोग, सांसारिक सुख एवं कामनाएं देने वाला ग्रह है अतः धर्मराज यमराज की पूजा करने से शुक्र पूजा का लाभ भी प्राप्त होता है, यह भी निश्चय है कि जब दुःखों का व बाधाओं का अंत होता है तभी सुखों का प्रारंभ होता है, बाधाओं के रहते, सुखों का पूर्ण आनंद ही नहीं लिया जा सकता है।

बर्तमान युग में समय देश काल को देखते हुए यह मंत्र विधान तथा पूजा अत्यंत ही आवश्यक एवं लाभकारी है, प्रत्येक साधक को अपने कार्यों में अनुकूलता पूर्ण रूप से प्राप्त करने हेतु यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए यदि संभव हो सके तो नियमित रूप से सोते समय यम मंत्र का जप अवश्य करें।

साधना सामग्री पैकेट- 600/-

कृष्ण षोडश कला पूर्ण व्यक्तित्व थे, उन्होंने जीवन के सभी आयामों का स्पर्श कर, उसकी पूर्णता तक पहुंच कर उन्हें समाज के सामने रखा...और उन्हीं के विभिन्न स्वरूपों में से उनका करुणामयी स्वरूप भी है, और यही करुणामयी स्वरूप 'जगन्नाथ' है, जिसकी साधना से जीवन में मोक्ष की प्राप्ति होती है, वहीं...

"प्रत्येक व्यक्ति इस भौतिक शरीर रूपी रथ पर आरूढ़ है और बुद्धि उसकी सारथी है। मन चालक यंत्र है तथा इन्द्रियाँ घोड़े हैं, इस प्रकार मन तथा इन्द्रियों की संगति से यह आत्मा सुख या दुःख की भोक्ता है" और इन सुख-दुःख के बन्धनों से मुक्त होना निःसन्देह कठिन है, किन्तु इस "जगन्नाथ साधना" के द्वारा इनसे विरक्ति प्राप्त होती है तथा अद्वैत अवस्था को प्राप्त करने पर मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है।

मन को समस्त प्रकार की दुश्चिन्ताओं सेशुद्ध करने के लिए यह परम शक्तिशाली एवं दिव्य विधि है, क्योंकि भगवान जगन्नाथ की साधना कर मनुष्य उन सब वस्तुओं के प्रति अनासक्त हो जाता है, जो मन को भ्रमित करने वाली होती हैं। मन को उन सारे कार्यों से विरक्त कर लेने पर ही मनुष्य सुगमता पूर्वक वैराग्य प्राप्त कर सकता है। वैराग्य का अर्थ है, पदार्थ से विरक्ति और मन का आत्मा में प्रवृत्त होना.... और यह 'जगन्नाथ साधना' से ही सम्भव है।

जग के नियन्ता, जग के पालनकर्त्ता अर्थात **'श्रीकृष्ण'**, जिनका एक करुणामयी स्वरूप जगन्नाथ भी है, 'जगन्नाथ' अर्थात् जग के नाथ, जिन्हें **'जगत गुरु'** भी कहा गया है, और उसी प्रेममयी, करुणामयी प्रतिमूर्ति के साक्षात् दर्शन, पूजा-आराधना करना जीवन का परम सौभाग्य कहलाता है।

श्री जगन्नाथ जहाँ अपने इस स्वरूप में भक्तों के

समक्ष विद्यमान हैं, उस स्थल को 'जगन्नाथ पुरी' के नाम से जाना जाता है, जो सही अर्थों में अद्वैत भाव का आश्रय स्थल है। हजारों-लाखों की संख्या में भक्तजन श्री जगन्नाथ भगवान के दर्शन करने के लिए दूर-दूर से वहाँ आया करते हैं, क्योंकि ऐसा कहा जाता है, कि जो भी व्यक्ति वहाँ सच्चे मन से, श्रद्धा-भावना से कुछ मांगता है, उसकी वह इच्छा शीघ्र ही पूर्ण हो जाती है।

यहाँ के वातावरण में ऐसी विशेषता है, कि किसी भी व्यक्ति या साधक को यहाँ पहुंचते ही एक अजीब सी शांति महसूस होने लगती है, और वह वहाँ के वातावरण की मोहक सुगन्ध में ही कहीं खोकर ध्यानावस्था में स्वतः ही चला जाता है, उसका मन शुद्ध, परिष्कृत व अद्वैतमय बन जाता है।

जीवन में मोक्ष-प्राप्ति के लिए अद्वैत अवस्था को प्राप्त करना अनिवार्य होता है, किन्तु व्यक्ति स्वयं इस स्थिति को प्राप्त करने में असमर्थ है। कहा जाता है, कि एक बार द्वारिका में माता रोहिणी, रुक्मिनी, सत्यभामा तथा अन्य पटरानियों के साथ विश्राम कक्ष में बैठी हुई थीं, और यूं ही माता रोहिणी कृष्ण की लीलाओं से उन्हें अवगत कराते हुए हंसी-ठिठोली कर रही थीं, तभी सुभद्रा ने हंसते हुए माता रोहिणी से कहा, कि ''आप भाभियों को कृष्ण गोकुल में कैसे रहा करते थे, वह वृत्तांत सुनाइए'', यह सुनकर रोहिणी की स्मृतियाँ, जब उन्होंने कृष्ण को पालने में झुलाया था से लेकर उनके बड़े होने तक की सभी बातें पुनः उनके मानस-पटल पर अंकित हो गईं, और उनकी आँखों से अश्रुकण छलकने लगे, तभी सुभद्रा ने कहा, कि ''मेरे यह कहने से अगर आपको दुःख पहुंचा हो तो मैं क्षमा चाहती हूँ।''

माता रोहिणी ने कहा-''नहीं, मेरा मन तो उनके लीलामय स्वरूप को याद करके आनन्दित हो उठा था, इसीलिए ये आंसू निकल आए, किन्तु सुभद्रा मैं उनके स्वरूप का वर्णन अगर इन होठों से करूँगी, तो कृष्ण अपनी यादों में खो जायेंगे और दुःखी हो जायेंगे, इसलिए मैं नहीं चाहती, कि वे मेरी बातों को सुनकर व्यथित हो जाएं'', तब सुभद्रा ने माता रोहिणी को आश्वासन देते हुए कहा, कि '' आप चिन्ता न करें, आप निश्चिंत होकर उनके बारे में हमें बतायें, मैं कक्ष के दरवाजे पर खड़ी कृष्ण को देखती रहूँगी और उन्हें अन्दर न आने दूँगी।''

माता रोहिणी तब रुक्मिनी, सत्यभामा सभी को कृष्ण की अनन्त कथा, जो उनके गोकुल में बिताए सुन्दर व आनन्ददायक क्षण थे, सुनाने लगीं और सुनाते-सुनाते खुद

भी इतना डूब गईं, कि मानो वह समय ही लौट आया हो, तभी कृष्ण और बलराम भी कक्ष से बाहर आ पहुँचे, और जैसे ही अन्दर जाने लगे सुभद्रा ने उन्हें रोक दिया, और कहा-''माँ रोहिणी की आज्ञा के बिना आप भीतर प्रवेश नहीं कर सकते, और जब तक माता की अनुमति नहीं होगी, तब तक मैं आपको अन्दर नहीं जाने दूंगी'' कृष्ण और बलराम दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और वापिस मुड़कर जाने लगे, तभी कृष्ण को कुछ आवाजें कक्ष से बाहर आती हुई सुनाई दीं, उन आवाजों को सुनकर कृष्ण के पांव वहीं ठहर गए, अपनी ही जीवन लीला को सुनकर वे इतना अधिक खो गए, कि उनके अन्तःकरण से, उनके रोम-रोम से करुणा का सागर बहने लग गया।

दूर खड़े नारद मुनि इस दृश्य को बड़े आनन्द के साथ आत्मसात कर रहे थे, और गद्गद कण्ठ से कृष्ण के निकट आकर बोले, 'हे प्रभु! आप तो करुणा निधान हैं, दया के सागर हैं, प्रेम स्वरूप हैं, आप अपने भक्तों पर कृपा कर तथा जन-कल्याण हेतु अपने इसी दिव्य स्वरूप को यहाँ स्थापित कर दीजिए, जिससे आपके इस प्रेममयी, करुणामयी स्वरूप को देख सभी मनुष्य मेरी तरह ही धन्य-धन्य हो सकें, और अपने जीवन के समस्त सुखों को प्राप्त कर सकें, जो भी यहाँ आपके दर्शन हेतु आये, वह आपकी कृपा-वर्षा से आप्लावित हो सकें, और एक अपूर्व शांति प्राप्त कर सकें, लीन हो सकें आप में'', तभी से वहाँ श्री कृष्ण अपने एक अंश स्वरूप में ''जगन्नाथ पुरी'' के नाम से विख्यात हो गए।

जगन्नाथ पुरी एक दिव्य तीर्थ स्थल है, जहाँ पहुँच कर प्रभु-चिन्तन में मग्न हो साधक की समाधी भी लग जाती है, क्योंकि कृष्ण अपने प्रेममयी स्वरूप में ही वहां हर क्षण विराजमान रहते हैं, और उन्हीं कृष्ण की आराधना-साधना करना ही जीवन का अखण्ड सौभाग्य है।

जगन्नाथ साधना के माध्यम से साधक उस दिव्य

तीर्थ स्थल के पुण्य को घर बैठे ही प्राप्त कर सकता है, और साथ ही इस साधना में सिद्धि प्राप्त कर, वह उनके साक्षात् दर्शन भी प्राप्त कर सकता है।

जीवन में पूर्ण आध्यात्मिकता एवं अपने इष्ट के दर्शन हेतु 'जगन्नाथ साधना' ही श्रेयस्कर है। योगियों और ऋषियों आदि की बात तो अलग है, किन्तु गृहस्थ व्यक्ति के लिए अद्वैत स्थिति को प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है, परन्तु इस सिद्धि को प्राप्त कर, वह जीवन के समस्त सुखोपभोग को प्राप्त कर, सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए अद्वैत स्थिति को प्राप्त कर सकता है, और यही जीवन की श्रेष्ठता है, पूर्णता है, सर्वोच्चता है, जो इस सिद्धि द्वारा साधक को प्राप्त हो जाती है, क्योंकि भगवान श्री जगन्नाथ करुणा के सागर हैं, दयानिधि हैं, दुःखों को दूर कर शत्रुओं का नाश करने वाले हैं।

यह एक गुह्य साधना है, जिसका ज्ञान बहुत ही सीमित लोगों के पास है, उसी का संक्षिप्त विवरण ही इस पत्रिका में आपके सम्मुख प्रकाशित किया जा रहा है।

सामग्री : त्रिमुखी शंख, माधव प्रिया गुटिका, रोहिणी माला।

समय : प्रातः 5 बजे से 7 बजे तक।

दिन : 17.07.15 से 19.07.15 तक या अन्य किसी भी गुरुवार से शनिवार तक।

प्रयोग विधि

यह तीन दिन की साधना है। साधकों को चाहिए कि वे प्रातः 4 बजे उठकर, स्नान आदि से निवृत्त होकर, सभी साधना सामग्रियों के साथ शान्त मन से पीले आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठ जाएं, फिर अपने सामने एक छोटी चौकी पर पीला कपड़ा बिछाएं और थाली, जो स्टील की भी हो सकती है, उसमें कुंकुम या केसर से **'ॐ'** बनाएं एवं उसमें चावल की ढेरी बनाकर उस पर **'त्रिमुखी शंख'** स्थापित कर दें, फिर शंख के तीनों मुखों में पीले रंग का चावल भर दें।

इसके ऊपर मनोवांछित **'माधव प्रिया गुटिका'** स्थापित कर दें तथा **'रोहिणी माला'** को शंख के ऊपर पहिना दें, और फिर कुंकुम, धूप व दीप से गुटिका एवं शंख पूजन करते हुए बाएं हाथ से कुछ चावल लेकर दाहिने हाथ से उन्हें कृष्ण के 21 नामों का उच्चारण करते हुए उस शंख व गुटिका पर चढ़ाएं–

ॐ कृष्णाय नमः
ॐ गोपालाय नमः
ॐ गोविन्दाय नमः
ॐ जगन्नाथाय नमः
ॐ गोवर्धनाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ अच्युताय नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ दामोदराय नमः
ॐ श्रीधराय नमः
ॐ द्वारिकानाथाय नमः
ॐ द्रौपदी रक्षकाय नमः
ॐ नरोत्तमाय नमः
ॐ व्रजेश्वराय नमः
ॐ यशोदा नन्दनाय नमः
ॐ नंद-नंदनाय नमः
ॐ गोपीजन वल्लभाय नमः
ॐ अर्जुन प्रियाय नमः
ॐ योगेश्वराय नमः
ॐ श्रेष्ठाय नमः
ॐ मनोहराय नमः

यह पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् निम्न मंत्र का तीन दिन तक प्रतिदिन एक घण्टा जप करें, इस जप में माला की आवश्यकता नहीं है। माला, शंख को ही पहिनाए रखें।

मंत्र

ॐ जगन्नाथो कृष्णाय

तीसरे दिन सभी पूजन सामग्रियों को (शंख और गुटिका को छोड़ कर) शेष जल में प्रवाहित कर दें।

यह साधना अपने-आप में बहुत महत्वपूर्ण है, **यथासम्भव प्रत्येक साधक को इसे पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न करना ही चाहिए, इस साधना से साधक को अध्यात्म पथ पर बढ़ने के लिए अधिकाधिक प्रेरणा प्राप्त होती ही है, आंतरिक शक्ति का जागरण होता है। यह मुक्तिदायी साधना है एवं आत्मबल में वृद्धि करती है। साथ ही इस स्वरूप की साधना से कृष्ण के प्रत्यक्षीकरण का दिशा-निर्देश भी होता है।**

इस साधना से कृष्ण करुणामयी स्वरूप में मुक्ति प्रदान करते हैं, तथा जीवन के हर क्षेत्र में पूर्णता प्रदान कर साधक के जीवन को रसमय एवं प्रेममय बना देते हैं, क्योंकि शुष्कता जीवन का अभिशाप है, अतः यह साधना प्रत्येक साधक के लिए अपेक्षित है।

साधना सामग्री- 510/-

मट्ठे एवं छाछ द्वारा चिकित्सा

मट्ठे एवं छाछ की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि ये शरीर से विजातीय तत्वों को बाहर निकालकर नया जीवन प्रदान करते हैं एवं शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति उत्पन्न करते हैं। इनके सेवन से आँतों से संबंधित कोई रोग नहीं होता। प्रतिदिन नियमित रूप से सेवन करने से शरीर के बल, स्वास्थ्य एवं कान्ति में वृद्धि होती है। विशेषकर गर्मी के दिनों में इनके सेवन से ताजगी आती है एवं धूप और लू के हानिकारक प्रभाव से बचाव होता है।

दही का ऊपर वाला चिकना हिस्सा (मलाई) निकालकर बिलोया हुआ दही 'मट्ठा' कहलाता है।

दही में ज्यादा पानी मिलाकर मक्खन निकालने के बाद फिर पानी मिलाकर खूब पतले बनाए गए दही को 'छाछ' कहते हैं। इस प्रकार छाछ से पूरा मक्खन निकल जाने के कारण यह हल्की एवं पथ्य है।

मट्ठे एवं छाछ की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि ये शरीर से विजातीय तत्वों को बाहर निकालकर नया जीवन प्रदान करते हैं एवं शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति उत्पन्न करते हैं क्योंकि इनमें विटामिन 'सी' है, इसलिए यह त्वचा सौन्दर्य की दृष्टि से भी उपयोगी है।

मट्ठा वायु तथा पित्त को दूर करता है। गर्मी के कारण हुए दस्तों, अर्श (बवासीर) एवं संग्रहणी में बेहद लाभकारी है। छाछ के विषय में आयुर्वेद में कहा गया है कि–

यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा
नराणां भुवि तक्रमाहुः।

इसका अर्थ यह है कि जिस प्रकार स्वर्ग में देवों को सुख देने वाला अमृत है, उसी प्रकार पृथ्वी पर मानव को सुख देने वाली छाछ है।

इससे छाछ का विशेष महत्व दृष्टिगोचर होता है। छाछ हल्की, शीतल, पित्त, वायुनाशक है। चरक के अनुसार मंदाग्नि, अतिसार एवं अरुचि में छाछ अमृत के समान है एवं अतिसार, ग्रहणी, पाण्डुरोग, अर्श, प्लीहा रोग, गुल्म, विषम जवर, तृषा, लार के स्राव, शूल, मेद, कफ और वायु को दूर करने में सहायक है।

छाछ पीने से आँतों से सम्बन्धित कोई रोग नहीं होता। प्रतिदिन नियमित रूप से छाछ पीना बेहद लाभदायक होता है। शरीर की पुष्टि प्रसन्नता, बल, कान्ति की वृद्धि होती है। गर्मी में छाछ पीने से ताजगी आती है।

जैसा कि पहले भी स्पष्ट कर चुके हैं कि यह आँत के रोगों में उपयोगी है। यह आँतों को संकुचित कर उन्हें क्रियाशील बनाती है। छाछ के मल-शोधन गुण के कारण मल की उत्पत्ति एवं निष्कासन कार्य सुचारू रूप से होता हैं

संग्रहणी होने पर आंतें दुर्बल हो जाती हैं एवं वे किसी भी आहार का पाचन नहीं कर पाती, ऐसी स्थिति में छाछ आँतों को बल प्रदान करने के साथ ही आवश्यक पाचक रस उत्पन्न कर ग्रहणी की क्रिया को व्यवस्थित करती है।

छाछ आमज दोषों को दूर करती है। आम की चिकनाहट को तोड़ने के लिए आवश्यक खटाई (एसिड) छाछ उपलब्ध करवाती है जिससे धीरे-धीरे यह चिकनाहट आँतों से दूर हो बाहर निकल जाती है।

साथ ही खटाई होने के कारण यह भूख

उत्पन्न करने में सक्षम है। इसके सेवन से आहार में रुचि उत्पन्न होने के साथ ही आहार का पाचन भी ठीक होता है। पाचन क्षमता बढ़ाने के लिए छाछ अमृत है। इससे खट्टी डकारें, पेट फूलना, अफारा आदि तकलीफें दूर होती हैं

मट्ठे द्वारा चिकित्सा–

★ **खूनी एवं बादी बवासीर में–**ताजे मट्ठे के साथ सेंधा नमक, अजवाइन एवं सेका हुआ जीरा मात्रानुसार मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

★ **दस्त रोकने के लिए–**एक कप ताजा मट्ठे में चुटकी भर जायफल चूर्ण, चौथाई चम्मच शहद मिलाकर धीरे-धीरे पिलायें। इससे दस्त तो रुकता ही है, दस्त के कारण कमजोरी भी दूर हो जाती है।

★ वमन रोकने के लिए–एक कप मट्ठे में सेकी हुई एक छोटी इलायची तथा अनार के छिलके का चुटकी भर चूर्ण मिलाकर देने से लाभ होता है।

★ **मोटापा कम करने के लिए–**जौ का सत्तू, मट्ठे के साथ लगातार सेवन करने से लाभ होता है। जिन्हें जौ सत्तू नहीं भाता हो वे इसमें छोटी पीपल का चूर्ण आधा चम्मच एवं बड़ी हर्र का चूर्ण एक चम्मच मिलाकर प्रात:-सायं सेवन करें।

★ **अम्लाधिक्य–**एसीडिटी की अवस्था में ताजे मीठे मट्ठे को मिश्री एवं सौंफ के बारीक चूर्ण के साथ लेने से अम्लता कम होती है।

★ **पेशाब में जलन–**पेशाब में जलन होने पर या उसका रंग हल्का पीला या गाढ़ा पीला होने पर सफेद चंदन बुरादा एक चम्मच एक गिलास मट्ठे में मिलाकर सेवन करें; इससे पेशाब खुल जाएगा एवं शरीर की गर्मी, दाह आदि तकलीफें दूर होंगी।

★ मूत्राशय की पथरी में भी मट्ठे का सेवन एक अच्छा रोग निवारक पथ्य का काम करता है।

छाछ द्वारा चिकित्सा

★ **अजीर्ण–**छाछ में सेंधा नमक और काली मिर्च का चूर्ण डालकर पीने से अजीर्ण दूर होता है।

★ **बवासीर–**एक गिलास छाछ में नमक और एक चम्मच पीसी हुई अजवाइन मिलाकर पीने से लाभ होता है। सेंधा नमक डालकर पीयें तो अधिक लाभ होगा। सेका हुआ जीरा मिलाकर पीना भी लाभ करता है।

★ ताजे छाछ में चित्रक मूल की छाल का चूर्ण डालकर प्रतिदिन पीने से बवासीर दूर होती है।

★ गाय की छाछ में काली मिर्च, सोंठ, पीपर और बड़ी-लवण का चूर्ण मिलाकर पीने से बवासीर दूर होती है। छाछ के प्रयोग से ठीक हुई बवासीर पुन: उत्पन्न नहीं होती।

★ छाछ में इन्द्र जौ का चूर्ण मिलाकर पीने से खूनी बवासीर में लाभ होता है।

★ **मूत्रकृच्छ–**छाछ में गुड़ मिलाकर पीने से मूत्रकृच्छ ठीक होता है।

★ **अपच–**छाछ में सेंधा नमक, भुना हुआ जीरा, कालीमिर्च पीसकर मिलायें एवं सेवन करें, अपच में लाभ होगा। तली हुई भुनी एवं गरिष्ठ चीजों को पचाने में छाछ लाभदायक है।

★ **कृमि रोग–**छाछ में वायविडंग का चूर्ण मिलाकर पीने से छोटे बच्चों का कृमि रोग दूर होता है।

★ गाय के दूध की छाछ में नमक मिलाकर प्रात: पीने से भी कृमि समाप्त हो जाते हैं।

★ **आँत सम्बन्धी–**छाछ में पिसी हुई अजावइन एवं सेंधा नमक मिलाकर प्रतिदिन पीने से आँतों से संबंधित कोई रोग नहीं होता।

★ **दस्त–**आधा पाव छाछ में एक चम्मच शहद मिलाकर 3 बार नित्य पीने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

★ **मुहांसों के दाग आदि–**छाछ से चेहरा धोने से मुहांसों के दाग, कालापन एवं चिकनाहट दूर होकर चेहरे की त्वचा साफ एवं कान्तिमय बनती है।

★ **कब्ज–**छाछ में अजवायन एवं सेंधा नमक मिलाकर पीने से कब्ज दूर होती है।

★ **पाण्डु रोग–**छाछ में चित्रक मूल का चूर्ण डालकर पीने से पाण्डू रोग में लाभ होता है।

★ **रक्त शुद्धि–**गाय की ताजा फीकी छाछ पीने से रक्तवाहिनियों का रक्त शुद्ध होता है।

★ **दाद–**छाछ में ग्वारपीठे के बीज पीसकर दाद पर लगाने से दाद में फायदा होता है।

★ **मोटापा–**प्रतिदिन छाछ पीने से मोटापा कम होता है।

(उपयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

❑❑❑

'कृष्णं वन्दे जगदगुरु' जो कृष्ण सभी वैभव, सुख व सम्पदा प्रदान करने में पूर्ण सक्षम हैं, जिन्हें पूरे विश्व का गुरु कहा गया है, उन्होंने स्वयं अपने जीवन में उन्नति के लिएं, पुत्र की प्राप्ति के लिए तथा जब भी उनके सामने कोई विकट समस्या आई, तो उसका भी निराकरण करने के लिए वे भगवान शिव की ही आराधना उपासना करते थे।

संभव है यह बात श्रीकृष्ण भक्तों को अत्यधिक आश्चर्यचकित कर दे, किन्तु उपरोक्त बात अक्षरंश: सत्य है, इसकी पुष्टता **'लिंग पुराण'** में वर्णित निम्न श्लोक से होती है-

पुत्रार्थं भगवांस्तत्र तपसंसुं परं जयाम्।
आश्रम-चोवमन्योर्वै दृष्टवांस्तत्र तं मुनिम्।।

अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण पुत्र प्राप्ति के लिए तपस्या करने वन में उपमन्यु के आश्रम में जाते हैं।

तदाप्रभृति तं कृष्णं मुनयः शंसितव्रताः।
दिव्याः पाशुपताः सर्वे तस्तुः संपूत्य सर्वतः।।

उपमन्यु मुनि से श्री कृष्ण शिवमंत्रोपदेश प्राप्त कर शिवारधना सम्पन्न करते हैं, जिससे भगवान शिव प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण को वर प्रदान करते हैं।

इसी कथान की पुष्टि श्री महाभारत के अनुशासनिक पर्व द्वारा भी होती है -

द्रक्ष्यसे पुण्डरीकाक्ष महादेवं न संशयः।
अचिरेणैव कालेन यथा दृष्टो मया नहा।।

श्रीकृष्ण कहते हैं कि एक दिन मेरी पत्नी जाम्बवंती मेरे पास अत्यंत व्यथित हृदय से आयी और प्रार्थना कर कहने लगी कि आपने जिस प्रकार भगवान पशुपति की आराधना करके देवी रुक्मिणी को पुत्रवती बनने का सौभाग्य प्रदान किया, उसी प्रकार मुझे भी पुत्रवती बनने का सौभागय प्रदान करिए।

मैंने अपने पुत्र साम्ब को पाने के लिए भगवान शिव की आराधना की थी और देवी जाम्बवंती की प्रार्थना पर मैं पुनः व्याघ्रपाद मुनि के पुत्र उपमन्यु के दिव्य आश्रम में गया और उनकी अभ्यर्थना की, तब उपमन्यु मुनि ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया, कि मुझे अपने ही समान, पुत्र की प्राप्ति होगी। मुनि उपमन्यु के द्वारा शिव महिमा वर्णन सुनते हुए क्षण निमेष की भांति आठ दिन व्यतीत हो गये, फिर उन्होंने मुझे पाशुपत-दीक्षा प्रदान कर शिव साधना सम्पन्न करने की विधि समझायी।

इतना ही नहीं भगवान श्रीकृष्ण अपने सर्वप्रिय भक्त अर्जुन को भी समय-समय पर शिव के विभिन्न रूपों की

साधना सम्पन्न करवाते रहते थे। श्रीमद्भगवत गीता में अर्जुन को परमहित का उपदेश देते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं – **"भगवान शिव की साधना, जो कि स्वयं मेरा अनुभूत किया हुआ उपाय है, इसे सम्पन्न करना ही सभी बाधाओं पर विजय प्राप्ति का श्रेयस्कर उपाय है।"** अर्जुन को प्रत्येक विपत्ति से मुक्त कराने के लिए श्रीकृष्ण ने शिव साधना का उपदेश दिया।

कथा प्रसिद्ध है कि जब जयद्रथ ने अर्जुन पुत्र अभिमन्यु का वध कर दिया था, तब अर्जुन ने प्रतिज्ञा की थी, कि यदि सूर्यास्त के पहले जयद्रथ का मैंने वध नहीं कर दिया, तो मैं स्वयं चिता में प्रवेश कर जाऊंगा। उस समय भी श्रीकृष्ण ने अर्जुन से सम्पूर्ण रात्रि भगवान शिव की **पाशुपतास्त्रेय साधना** सम्पन्न करायी थी, और उस साधना के द्वारा अर्जुन को पुनः पाशुपतास्त्र प्राप्त हुआ था।

महाभारत युद्ध काल में रणक्षेत्र में जब भगवान कृष्ण से अर्जुन ने पूछा – "मेरे रथ के आगे-आगे शत्रुओं का संहार करता हुआ यह त्रिशूलधारी कौन है? तब अर्जुन की जिज्ञासा को शांत करने के लिए श्रीकृष्ण ने बताया, कि ये भगवान शिव हैं, जिनकी आराधना तुमने की है, इन्हीं के अनुग्रह से ही तुम्हारी सर्वत्र जय होती है, क्योंकि ये सदैव तुम्हारे साथ-साथ रहते हैं।

महाभारत के ही द्रोण पर्व में वर्णन मिलता है कि द्रोणाचार्य की मृत्यु के बाद उनके पुत्र अश्वत्थामा ने अत्यंत क्रोधित होकर नारायणास्त्र का प्रयोग कर दिया, जिसके कारण पाण्डव सेना जलने लगी, चारों तरफ से अग्नि की विकराल ज्वालाएं पाण्डव सेना को अपने में विलीन करने के लिए लपकने लगीं, तब भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन, युधिष्ठर, भीम, नकुल और सहदेव सहित सभी इष्टजनों को रथ से उतर कर, अपने-अपने शस्त्र फेंक कर जमीन पर नम्र भाव से खड़े हो जाने की आज्ञा दी। इस प्रकार नारायणास्त्र के कोप से भगवान कृष्ण ने उन सभी को बचा लिया।

जब नारायणास्त्र पाण्डव सेना को जला कर लोप हो गया, तब अश्वत्थामा श्रीकृष्ण व पाण्डव को सुरक्षित देख अत्यंत आश्चर्यचकित रह गया, उसे कुछ भी समझ में नहीं आया। इसका कारण जानने के लिए वह भगवान वेदव्यास के पास गया और उन्हें प्रणाम कर निवेदन किया – हे महामुनि! कृपया आप मेरी शंका का निवारण करें। क्या मेरे पिता श्री द्रोण ने मुझे अस्त्र-शस्त्र विद्या सिखाने में न्यूनता रखी थी या कलिकाल का प्रभाव प्रारंभ हो गया है, जिससे मंत्रों के सामर्थ्य में कमी आ गई है। आप कृपा कर स्पष्ट करें, कि नारायणास्त्र का प्रयोग होने पर भी कृष्ण व पाण्डव कैसे बच गए?

यह सुनकर भगवान व्यास ने अश्वत्थामा को समझाया – तुम्हारे पिता श्री द्रोण ने तुम्हें पूर्णता के साथ अस्त्र-शस्त्र विद्या का ज्ञान दिया है, उनकी शिक्षा में किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है और न ही कलिकाल के कारण मंत्रों में सामर्थ्यता कम हो गई है, यदि ऐसा ही होता, तो सभी को बच जाना चाहिए, सिर्फ पाण्डव व कृष्ण ही क्यों बचे? यह प्रश्न तुमने इसलिए पूछा क्योंकि तुम्हें कृष्ण के मूल स्वरूप का ज्ञान नहीं है।

आगे पुनः व्यास भगवान श्रीकृष्ण का परिचय देते हुए कहते हैं कि –

योऽसौ नाम पूर्णेसार्माप पूर्वजः।
अजायत च कर्यार्थ पुत्रो धर्मस्य विश्वकृतः।।
तस्मै वरानचिन्त्यात्मा नीलकण्ठः पिनाकधृक।
अर्हते देवमुख्याय प्रायच्छदृषिसंस्तुतः।

अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण के रूप में पूर्वजों के पूर्वज पद्मनयन भगवान विष्णु ही पृथ्वी पर धर्म की स्थापना के लिए अवतरित हुए हैं। इन्होंने हिमालय में निराजल, निराहार रह कर जगत्पति भगवान के विभिन्न स्वरूपों यथा – रुद्र, त्रषभ, जटाधर, विरुपाक्ष, ईशान आदि की अत्यंत समर्पित भाव से अति कठोर साधना सम्पन्न की है। श्रीकृष्ण की तपस्या से प्रसन्न होकर पिनाक धारी नीलकंठ भगवान शिव ने उन्हें वर व आशीर्वाद प्रदान किया है – हे नारायण! तुम प्रत्येक युग में देवताओं, गंधर्वों व मनुष्यों आदि में सर्वश्रेष्ठ तथा अप्रमेय बलवान होंगे, वही भगवान नारायण जो अपनी

माया के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को अपने वशवर्ती बना कर रखे हैं, भगवान कृष्ण हैं।

इस कथन द्वारा स्पष्ट होता हे कि व्यास भगवान ने श्रीकृष्ण को परम शिव भक्त के रूप में प्रतिपादित किया है।

महाशिवपुराण की ज्ञान संहिता में भी इस बात का प्रमाण मिलता है, कि भगवान श्रीकृष्ण ने अत्यंत भक्ति-भाव से शिवाराधना की थी और पूरे साधना काल में भगवान शिव के ज्योतिर्मय शिवलिंग पर नित्य 108 बिल्ब-पत्र निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्पित करते थे -

मंत्र

।।ॐ शाम्ब शिवाय पुत्र प्रदाय शं नमः।।

उनकी इस प्रकार की भक्ति देखकर अचिन्त्य स्वरूप भगवान शम्भू ने कई वर प्रदान किए। भगवान कृष्ण के द्वारा बिल्व-पत्रों से पूजित होने के कारण उस शिवलिंग का नाम ''बिल्लेश्वर शिवलिंग हुआ।

स्वयं श्रीकृष्ण महाभारत के अनुशासनिक पर्व में कहते हैं -

जब मैंने ज्योतिर्मय भगवान शिवलिंग का अर्चन किया, उस समय उन्होंनें प्रसन्न होकर मुझे निम्न वरदान प्रदान किए - धर्म में दृढ़ता बनी रहे, विश्व में मान, पद, प्रतिष्ठा, सुयश व कीर्ति प्राप्त हो मेरा (शिव का) सान्निध्य प्रति क्षण प्राप्त हो, उत्कृष्ट वैभव, सम्पन्नता, भोग व ऐश्वर्य प्राप्त हो, श्रेष्ठ पुत्र की प्राप्ति हो, युद्ध में विजय, प्रत्येक कार्य में क्षमता प्राप्त हो, उनके द्वारा प्रदत्त वरदान से मैं जगत में सुयश प्राप्त कर सका।

स्कन्द पुराण में श्रीकृष्ण ने कहा है - जो व्यक्ति भगवान शिव को छोड़ कर एकमात्र मेरा ही भजन श्रद्धा से करता है, उसे श्रेष्ठ भक्ति तो प्राप्त होगी ही, किन्तु मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकेगी, क्योंकि कैवल्य मुक्ति देने वाले एकमात्र भगवान शिव ही हैं।

इस प्रकार इस विवेचन से यह स्पष्ट होता हे कि भगवान श्रीकृष्ण परम शिवभक्त थे, यदि थोड़ा और सूक्ष्मता से विवेचन किया जाए, तो स्पष्ट होता है -

यो यद्भक्तः स एंव सः

अर्थात् स्वयं भगवान शिव, श्रीकृष्ण हैं और स्वयं श्रीकृष्ण, भगवान शिव हैं। श्रीमद्भागवद के अनुसार -

अहं ब्रह्मा च सर्वश्च जगतः कारणं मरहम्

आत्मेश्वर उपद्रष्टाम स्वयं दृगविशेषणः।।

मैं ही नारायण, ब्रह्मा व शिव हूँ। मैं ही इन तीनों रूपों में जगत का कारण हूँ, सभी में, सभी रूपों में आवेष्टित होते हुए मैं ही आत्मा, उपद्रष्टा व ईश्वर हूँ।

अतः पुत्रप्राप्ति एवं यश प्रतिष्ठा प्राप्ति की कामना से जो साधक इस मंत्र का जप करता है, उसकी कामना शीघ्रताशीघ्र पूर्ण होती है।

साधना सामग्री—पारद शिवलिंग, रुद्राक्ष माला।

समय—यह साधना किसी भी सोमवार से या आने वाले श्रावण मास में प्रारम्भ की जा सकती है। यह 11 दिन की साधना है।

साधना विधि—

साधक को चाहिए कि वह स्नान कर उत्तर की ओर मुंहकर सफेद आसन पर बैठें। सामने चौकी पर सफेद वस्त्र बिछायें एवं ताम्रपात्र में शिवलिंग स्थापित करें एवं साथ ही सद्गुरु चित्र स्थापित करें। फिर सद्गुरुदेव का एवं शिवलिंग का पूजन करें एवं अपनी मनोकामना व्यक्त करें और गुरु मंत्र की चार माला जप करें। फिर निम्न मंत्र बोलते हुये शिवलिंग पर 108 बिल्व पत्र चढ़ायें। यदि बिल्व पत्र उपलब्ध न हो सके तो सफेद पुष्प अर्पित करें फिर रुद्राक्ष माला से 11 माला मंत्र जप नित्य ग्यारह दिनों तक करें।

।।ॐ शाम्ब शिवाय पुत्र प्रदाय शं नमः।।

साधना समाप्ति पर भगवान शिव के किसी मन्दिर के बाहर बैठे हुये कम से कम पाँच असहाय लोगों को भोजन करायें। इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती है और भगवान सदा शिव की कृपा से उसकी मनोकामना पूर्ण होती है।

क्यों जरूरी है मंत्र साधना

गुरुकुल के शिष्यों ने उस दिन के सत्संग समागम में अधिष्ठाता से पूछा - देव! धन, कुटुम्ब और धर्म में से कौन सच्चा सहायक है।

अधिष्ठाता ने सीधा उत्तर न देकर एक कथा सुनाई। एक व्यक्ति था। उसके तीन मित्र थे। एक बहुत प्यारा दूसरा मध्यवर्ती तीसरा उपेक्षित। एक बार वह किसी मुसीबत में फस गया। सहायता के लिए मित्रों के पास जाने की बात उसने सोची।

घर से चल पड़ा। विपत्ति के समय मित्र ही साथ देते हैं। सबसे प्रिय मित्र के पास गया। परिस्थिति बताई और सहायता माँगी। राज दरबार तक साथ देने और सहायता के लिए चल पड़ने को कहा - परम प्रिय मित्र ने स्पष्ट इनकार कर दिया। वह घर से बाहर कहीं जाने की स्थिति में नहीं है। मध्य स्नेह वाले के पास पहुँचा और वही बात उससे कही। उसने अन्य प्रकार से सहायता करने का तो भरोसा दिलाया, पर राज दरबार तक जाने में जो खतरा हो सकता था उसे उठाने से उसने भी इनकार कर दिया। अब तीसरे मित्र की बारी थी। घनिष्ठता तो कम थी तो भी चलें उसे भी परख लें। तीसरे ने मित्रता निभाई। राज दरबार तक गया और पूरी सहायता करके उसे संकट से उबारा।

कहानी सुनाने के बाद अधिष्ठाता ने उसकी व्याख्या करते हुए कहा - **वत्स! धन वह है जिसे परम प्रिय समझा जाता है पर वह मरने के उपरान्त घर से बाहर एक कदम आगे नहीं जाता। कुटुम्ब वह है जो यथा संभव सहायता तो करता है पर उसका सहयोग भी शरीर भर के काम आता है। धर्म में पुण्य कार्य, मंत्र जप साधना ही है जो परलोक तथा पुनर्जन्म में साथ देता है। दुर्गति से बचाता है। सद्गति की चिरस्थाई सुख शांति प्रदान करता है। यद्यपि उसकी अपेक्षा की जाती है पर सच्चा मित्र सिर्फ वही है।**

यही कारण है कि सद्गुरुदेव ने भौतिक कार्यों के साथ हमेशा मंत्र साधना करने एवं त्याग पर बल दिया और कहा कि सब कुछ यही छूटने वाला है सिर्फ आपके द्वारा किये गये पुण्य धार्मिक कार्य एवं मंत्र जप सदैव आपके साथ ही रहता है और अगले जन्म में भी फलदायी होता है।

—राजेश गुप्ता 'निखिल'

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जून 2015

16. आज कोई भी साधना अवश्य सम्पन्न करें - श्रेष्ठ दिवस है। साधना में सफलता अवश्य मिलेगी।
17. आज **माँ पार्वती** का ध्यान करते हुये देवी मंदिर में लाल पुष्प चढ़ायें।
18. पीपल के वृक्ष में पुष्प एवं जल अर्पण करें।
19. प्रात: **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** का ग्यारह बार उच्चारण करके जाएं।
20. काले तिल एवं कुछ दक्षिणा का दान करें।
21. **गुरु गीता** का एक पाठ करें एवं गुरु आरती सम्पन्न करें।
22. **ॐ नम: शिवाय** का 5 मिनट जप करके जाएं।
23. आज हनुमान जी के मंदिर में गुड़ चना का भोग लगायें एवं प्रसाद बालकों में बांट दें।
24. **ॐ ह्रीं ॐ** का 51 बार उच्चारण करके जाएं।
25. केले के वृक्ष या तुलसी वृक्ष के पास एक दीपक जलायें।
26. प्रात: अपने घर के मंदिर में कपूर से दीपक जलायें और आरती करें।
27. **हनुमान बाहु** (न्यौछावर 60/-) धारण करें। शत्रु शांत रहेंगे।
28. प्रात: स्नानकर सूर्य को जल में पीले चावल डाल कर अर्घ्य दें एवं सात परिक्रमा करें।
29. **सिद्धिप्रद रुद्राक्ष** (न्यौछावर 90/-) सामने रखकर गुरु मंत्र का चार माला मंत्र जप करके धारण करें।
30. आज **हनुमान चालीसा** का एक पाठ अवश्य करके जाएं एवं आज शाम बेसन के लड्डुओं का प्रसाद चढ़ाकर बच्चों में बांटें।

जुलाई 2015

1. मार्च में प्रकाशित **भवानी स्तोत्र** का एक पाठ करके जाएं।
2. आज स्नान कर असहाय लोगों को अन्न दान करें।
3. प्रात: **गायत्री मंत्र** की एक माला मंत्र जप करके जाएं।
4. किसी भी मंदिर के पास बैठे गरीब व्यक्ति को भोजन करा दें।
5. आज **चेतना मंत्र** की एक माला मंत्र जप करना है।

   ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम
   चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नम:।
6. **पारद शिवलिंग** का दूध मिश्रित जल से अभिषेक करें।
7. आज प्रात: उठते ही अपनी दोनों हथेलियां का दर्शन करें।
8. प्रात: घर से निकलते वक्त कुछ सरसों के दाने अपने ऊपर से पांच बार घूमाकर बाहर फेंक दें।
9. प्रात: **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** का 21 बार उच्चारण करके घर से जाएं।
10. **कायाकल्प गुटिका** (न्यौछावर 150/-) धारण करें।
11. पीपल के पत्ते पर बेसन का लड्डू रखकर हनुमान मंदिर में चढ़ाएं।
12. आज **कुंकुम मिश्रित** जल से भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।
13. **शिव ताण्डव स्तोत्र सीडी** का श्रवण करें।
14. **हनुमान बाहु** (न्यौछावर 60/-) धारण करें। शत्रु शांत रहेंगे।
15. **गोमती चक्र** (न्यौछावर 31/-) का संक्षिप्त पूजन कर किसी शिवालय में चढ़ाये आर्थिक उन्नति होगी।

यह तो सत्य है कि ग्रहों का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है, यह बात महज अंधविश्वास से नहीं कही जा रही है, वरन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परीक्षण किया जाए, तो यह प्रकट हो जाता है, कि मानव के जन्म लेते ही उस पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है, जिससे जीवन का प्रत्येक पक्ष संचालित होता है, चाहे वह प्रेम का संबंध हो, धन-सम्पत्ति हो स्वास्थ्य, भाग्योदय अथवा विवाह से संबंधित हो।

यह तथ्य वैज्ञानिकों ने भी अनुभव किया है कि प्रत्येक मानव शरीर की संरचना शरीर में निहित रासायनिक तत्वों पर निर्भर करती है। इन तत्वों का निर्धारण प्रत्येक शरीर में भिन्न-भिन्न होता है और ये तत्त्व ही अपनी ग्राह्यता व लक्षण के अनुरूप विभिन्न ग्रहों की रश्मियों को ग्रहण करते हैं, फिर व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण ग्रहों के आधार पर स्वत: हो जाता है; यदि क्रूर ग्रह, शनि, राहु की प्रधानता हो, तो व्यक्ति का स्वभाव भी तद्नुरूप हो जाता है।

मैंने देखा है कि किसी भी व्यक्ति के जन्म के समय की कुण्डली को यदि सही प्रकार से बना दिया जाए, तो उस व्यक्ति का भविष्य अक्षरश: सही-सही बताया जा सकता है। मानव जीवन के कुछ पक्षों को लेकर ज्योतिषीय दृष्टि से जो मैंने अनुभव किया है, उसे प्रस्तुत कर रहा हूँ, कि किस प्रकार से ये ग्रह प्रेम संबंधों पर प्रभाव डालते हैं . . . प्रेम पर ही नहीं, धन सम्बन्धी कार्यों पर, स्वास्थ्य, भाग्योदय, विवाह और प्रेयसी के विचार पर भी।

प्रेम के क्षेत्र में मैंने दो कुण्डलियों का विवेचन किया, तो देखा कि दोनों - स्त्री और पुरुष विवाहित थे, किन्तु एक-दूसरे के सम्पर्क में आकर इस तरह से प्रणय बद्ध हो गए थे, जैसे प्रकृति इनके मिलन की योजना पहले ही बना चुकी हो; दोनों ग्रहों के प्रभाव से ही एक-दूसरे के समीप आये और इस तरह से एक-दूसरे के निकटस्थ हो गए, जैसे वे एक ही हों। दोनों की कुण्डलियों का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि दोनों का लग्नेश मंगल है और दोनों दुरधरा योग की उत्तम कुण्डलियां हैं और दोनों का ही गुरु नवमस्थ एवं उत्तम स्थिति

का सूचक है। अतः ये दोनों जब भी एक-दूसरे के प्रभाव में आते, यदि ये अलग-अलग विवाहित होते, तो भी इनका संबंध अपने जीवनसाथी से अलग हो कर परस्पर स्थापित होता।

यदि पुरुष की कुण्डली में आठवें, नवें भाव में चन्द्र तथा बुध का परिवर्तन हो तथा स्त्री की कुण्डली में पांचवें, सातवें भावों में शुक्र तथा सूर्य का परिवर्तन विचारणीय है, जो पुरुष को अष्टमेश, नवमेश के विपर्यय के कारण तथा स्त्री का सप्तमेश-शुक्र का पंचमेश नीच राशिस्थ सूर्य से विपर्यय होने के कारण अधम संबंधों, भाग्य व जीवनसाथी से संबंध में परिलक्षित होता है। इनका आपसी संबंध सामाजिक दृष्टि से औचित्य हीन है, जो इसी विपर्यय के कारण हुआ है।

यदि स्त्री की कुण्डली में सप्तम भाव का नीच सूर्य की राशि में शत्रु भावी शनि-शुक्र की युति तथा सप्तम में केतु की स्थिति परिलक्षित होती हो, इस प्रकार के ग्रहों के प्रभाव से युक्त स्त्री अपनी उपलब्धियों को केवल अपने गृहस्थ में नियोजित करती है। यदि उसका किसी के साथ प्रेम संबंध स्थापित हुआ, तो भी वह उस संबंध को मात्र अपने हितों के लिए ही बनायेगी। यही स्थिति काफी अंश तक सप्तम भाव में वृष-केतु के संदर्भ में होती है, ऐसे पुरुष भी अपनी पत्नी से रहस्य बना कर प्रेम संबंध स्थापित करते हैं। ऐसे ग्रह योग वाली प्रेयसी हमेशा ही अपने स्वार्थ के लिए ही चिंतित होगी।

इसी प्रकार से व्यक्ति के धन संबंधी कार्यों पर भी ग्रह का प्रभाव पड़ता है। ज्योतिष के प्राचीन ग्रंथों में बृहस्पति को धन का कारक माना गया है, वैसे तो बृहस्पति को सर्वाधिक शुभ ग्रह माना गया है। पराशर, वराहमिहिर, कालीदास, व्यंकटेश शर्मा आदि सभी ने बृहस्पति को धनकारक ग्रह माना है।

जबकि वास्तविकता में ऐसा नहीं है, यदि बृहस्पति उच्चभाव का है, तो वह उसका खोया हुआ धन या राज्य ही लौटाता है; युधिष्ठिर का गुरु उच्चभाव का था, अतः उसे उसका खोया हुआ राज्य ही प्राप्त हुआ, उसे अन्य किसी विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं हुई।

प्रायः यह देखने में आया है, कि जिन पुरुषों की स्त्रियां स्वस्थ नहीं रहतीं या जिन्हें पत्नी से सुख प्राप्ति में बाधायें उपस्थित होती हैं, उनकी कुण्डली में बृहस्पति की सातवीं दृष्टि शुभ नहीं रहती है तथा उनकी पत्नियां रोग्रस्त रहती हैं और उनके दाम्पत्य जीवन में बाधायें आती रहती हैं।

युवावस्था में जिन व्यक्तियों को आर्थिक संकट व्याप्त रहता है या उसका व्यवसाय स्थिर नहीं रहता अथवा वह समस्त भोग नहीं भोग पाते हैं या निरर्थक भ्रमण की स्थिति बनी रहती है, उन पर अक्सर शनि की साढ़े साती का प्रभाव रहता है। ऐसे व्यक्तियों के भाग्य पर भी प्रभाव पड़ता है तथा वे जिन कार्यों में हाथ डालते हैं, वह पूर्णतः सफल नहीं हो पाता है।

इसके विपरीत जिनका भाग्योदय आश्चर्यजनक ढंग से होता है, उनका शनि ग्रह अत्यधिक उच्च, बलवान तथा मित्र ग्रही होता है, तो शनि की साढ़े साती होने पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत साढ़े साती होने पर यदि शनि निर्बल है, तो व्यक्ति अत्यधिक कष्टों से पीड़ित रहता है।

यदि व्यक्ति आर्थिक संकट का सामना करता है, उसकी पारिवारिक स्थिति कलहपूर्ण हो, तो उसके ऊपर शनि का कुप्रभाव ही देखने में आया है। ऐसे में व्यक्ति की वाणी असंयत तथा मानहानि की आशंका निरंतर बनी रहती है।

वैवाहिक स्थितियों में ग्रहों का प्रभाव उपस्थित रहता है, जिनके हाथों में विवाह योग तो स्पष्ट होता है, परन्तु फिर भी विवाह सम्पन्न नहीं होता तो उनके ग्रहों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उनकी कुण्डली में शुक्र ग्रह पर बाधक योग बना हुआ देखा गया है।

ग्रह व्यक्ति के अनुकूल न हों, तो व्यक्ति के बने-

बनाये कार्यों को बिगाड़ सकते हैं; यदि वह सम्पन्न है, तो उसे खाक में मिला सकते हैं, एक सभ्य व्यक्ति पर यदि उसके ग्रहों का विपरीत प्रभाव पड़ने लगे तो वह दुराचारी, कृतघ्न तक बन सकता है, गृह दशा विपरीत हो, तो उसके समक्ष ऐसी कठिनाइयां उत्पन्न होने लग जाती हैं, जिनका कोई उपयुक्त कारण दिखाई नहीं पड़ता है फिर भी वे दिनों-दिन बढ़ती जाती हैं।

ग्रहों की स्थितियां यदि व्यक्ति पर कुप्रभाव उपस्थित कर रही हैं, तो 'शुक्रचार्य' ने इनके दुष्प्रभावों को समाप्त करने के विषय में एक अद्वितीय प्रयोग की व्याख्या की है, जिसके माध्यम से इन ग्रहों के प्रभाव को अनुकूल बनाया जा सकता है। ग्रहों के प्रभाव को शांत करने और इन्हीं ग्रहों के प्रभाव को अनुकूल बनाने के लिए शुक्राचार्य द्वारा निर्मित **'हेलत्व प्रयोग'** है, जिसे सम्पन्न कर आप भी इसका प्रभाव हाथों-हाथ अनुभव कर सकते हैं -

साधना विधान

★ इस साधना में आवश्यक सामग्री **'हेलत्व यंत्र'** और **'हेलत्व माला'** है।

★ यह एक दिवसीय प्रयोग है। जिसे 19.7.2015 या किसी भी मास की शुक्ल पक्ष तृतीया को करें।

★ साधक पीले वस्त्र धारण करें।

★ लाल रंग का वस्त्र बाजोट पर बिछाकर उस पर हेलत्व यंत्र स्थापित करें तथा यंत्र का पूजन करें -

नवग्रहस्मरण

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

हेलत्व माला से निम्न मंत्र की नौ माला मंत्र जप करें-

मंत्र

ॐ ह स क ल रक्षायै क्षं फट्।।

प्रार्थना

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मंगलं मंगलः
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः करोतून्नतिं
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।

निवेदन और नमस्कार

अनया पूजया सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्तां न मम।

प्रयोग समाप्ति के पश्चात यंत्र, माला तथा यंत्र पर चढ़ाये गए अक्षत व पुष्प को बाजोट पर बिछे कपड़े में बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें।

- न्यौछावर 450/-

प्रपंचों से मुक्ति

महान संत गोरखनाथ ने घोर तपस्या तथा साधना के बल पर अनेक सिद्धियां प्राप्त कर ली थीं। वह चाहते थे कि जन-कल्याण के लिए ये सिद्धियां किसी सुयोग्य संत को सौंप दी जाएं।

एक दिन गोरखनाथ जी काशी में गंगा तट पर बैठे हुए थे। उन्होंने एक दंडी संन्यासी को गंगा में अपना दंड प्रवाहित करते हुए देखा। संत उनके पास पहुंचे तथा बोले, 'महात्मन्, मैं आप जैसे योग्य संत की तलाश में था, जिन्हें साधना से प्राप्त सिद्धियां अर्पित कर सकूं। कृपया ये सिद्धियां स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करें।' संन्यासी ने बाबा गोरखनाथ के समक्ष दोनों हाथ पसार दिए। बाबा ने उन्हें सिद्धियां अर्पित कर दीं। संन्यासी ने दोनों हाथों की अंजुलियां गंगा की ओर कर कहा, 'मां गंगे, मैं बड़े भाग्य से सांसारिक प्रपंचों से मुक्ति पा सका हूं। इन सिद्धियों को भी तुम्हें समर्पित करता हूं।'

गुरु गोरखनाथ संन्यासी की विरक्ति देखकर हतप्रभ रह गए। वह बोले, 'महात्मन्, वास्तव में सच्चे संन्यासी तो आप हैं, जिन्हें दुर्लभ सिद्धियां भी आकर्षित नहीं कर पाईं तथा उन्हें जल में अर्पित करने में एक क्षण नहीं लगने दिया।'

अध्ययनशील प्रकृति रही है मेरी प्रारंभ से ही। आध्यात्मिक व तांत्रिक प्रकृति के कारण मेरा रुझान ऐसे साहित्य में प्रमुख है, जिनमें तंत्र और अध्यात्म का समन्वय होता है। अत्यधिक चिंतनशील प्रकृति का होने के कारण मेरा मस्तिष्क शोधशाला बन गया था।

अपनी इसी प्रकृति के कारण मैं अनेक लाइब्रेरियों में जाता रहता हूँ और इसी तरह मैं एक दिन ऐसे ग्रंथागार में पहुंचा, जहां बहुत सी प्राचीन पुस्तकें और हस्तलिखित पाण्डुलिपियां रखी थीं। मैं अपनी खोजी प्रवृत्ति के कारण वहां उन पुस्तकों के मध्य बैठ उनको पढ़ने लगा। वहां मेरे हाथ में अत्यंत जर्जर अवस्था में एक किताब आई, जो चाणक्य के विषय में थी, उसमें चाणक्य के आध्यात्मिक जीवन का विवरण था। चूंकि चाणक्य एक ऐसा पात्र है, जिसने आध्यात्मिक जीवन जीते हुए राजनीति और अर्थशास्त्र पर ग्रंथ लिखा, आज भी उसका लिखा ग्रंथ सर्वश्रेष्ठ है, अत:मुझमें इस किताब को पढ़ने की उत्सुकता बढ़ गई।

मैं पन्ने पलटता रहा, तो ऐसा अनुभव किया, कि वर्तमान राजनीतिक दशा और चाणक्य के काल की राजनीतिक दशा में काफी हद तक समानता है, बस फर्क है, तो सिर्फ शताब्दियों का। तब भी राजनीतिक उतार-चढ़ाव आते रहते थे और आज भी राजनीति उसी प्रकार की है। ऐसा प्रतीत हुआ कि राजनीति तो प्रारंभ से ही एक समान ही चलती आई है, बस समयानुसार पात्र बदलते रहते हैं।

चाणक्य अपने राजनीतिक जीवन में एक सफल व्यक्तित्व था, इसके पीछे उसकी तपस्या, उसका आध्यात्मिक जीवन ही था, परंतु इसके साथ वह एक सफल तथा श्रेष्ठ तांत्रिक भी था, जिसका वर्णन अत्यल्प मिलता है; ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि उस पुस्तक में जो वर्णित था, उसके अनुसार चाणक्य ने अपने संकल्प को पूर्ण करने हेतु कुछ तांत्रिक व मांत्रिक साधनाएं भी सम्पन्न की थीं।

इससे पता चलता है कि चाणक्य ने अपने राजनीतिक जीवन को सफल बनाने के लिए साधनाओं का सहारा लिया और उसने निश्चय ही अपने संकल्प को पूर्ण करने हेतु कुछ प्रयोगों को सम्पन्न किया था और प्रत्यक्ष तो नहीं, परंतु अप्रत्यक्ष रूप से उसने ही राजकार्य चलाया, चन्द्रगुप्त तो मात्र उसका शिष्य था।

मुझे ऐसा लगा, कि इस पाण्डुलिपि में कुछ विशेष क्रियाओं का वर्णन है, किन्तु पाण्डुलिपि स्पष्टत: नहीं समझ पाने के कारण मैं कुछ श्लोकों को उतार कर घर ले आया और एक श्रेष्ठ विद्वान से उनका सरलीकरण करवाया, तो पता

चला, कि यह एक तांत्रिक प्रयोग है, जिससे गति-मति का स्तंभन हो सकता है। इस स्तम्भन प्रयोग को करने से शत्रु की गति-मति बंध जाती है तथा वह पूर्णतः प्रयोगकर्ता के अनुकूल बन कार्य करने लगता है।

यह देखकर मैं चाणक्य के चरित्र पर अपनी आदतानुसार शोधरत हो गया, फिर मेरे समक्ष रहस्य की परत-दर-परत खुलती चली गई और मैं अचंभित हो चाणक्य के व्यक्तित्व को गहनता के साथ पढ़ने लगा और उसके प्रयोगों को पढ़ने पर एहसास किया, कि वास्तव में उसकी सफलताओं के पीछे उसकी बौद्धिकता के साथ-साथ तंत्र भी समन्वित था।

उसने अपने संकल्प को पूर्ण करने हेतु कई प्रयोगों का सहारा लिया और वास्तव में इतिहास साक्षी है कि उसने अपने संकल्प को पूर्ण कर दिखाया। उसने अपने शत्रुओं की यह स्थिति बना दी, कि शत्रु उसके समक्ष कुछ सोचने-समझने की शक्ति से च्युत हो जाते थे और वह निरंतर सफलता की ओर ही अग्रसर रहा।

आज भी, चाहे राजनीतिक जीवन हो या सामाजिक जीवन, प्रतिस्पर्धा तो बढ़ ही रही है। प्रत्येक व्यक्ति सफलता प्राप्त करने को लालायित है। इसके लिए यदि उन्हें गैरकानूनी तत्त्वों का भी सहारा लेना पड़ता है, तो वे हिचकते नहीं, वरन् ऐसे तत्त्वों का उपयोग कर सफलता को हर संभव प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और इस बेताबी में लोग अच्छे-बुरे का भी ज्ञान भूल जाते हैं।

परंतु चाणक्य ने इन प्रयोगों का उपयोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नहीं किया था, वरन जब देश की दशा अत्यधिक गंभीर हो गई और राज्य परिवार के सदस्य आपस में सत्ता के लिए युद्ध कर रहे थे, बाह्य देश भी इस स्थिति से लाभ उठाने की नीयत से आक्रमण करने के लिए तैयार हो गये थे, सीमाओं पर आक्रमण आरंभ हो चुका था, ऐसी विषम परिस्थितियों में चाणक्य ने साधनाओं का सहारा लिया और शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।

चाणक्य एक विद्वान व्यक्ति था, जिसने भली-भांति इन प्रयोगों को सम्पन्न किया, मात्र अपने सुख हेतु नहीं, वरन जनकल्याण की भावना से प्रेरित होकर। चाणक्य द्वारा प्रयुक्त किये गए प्रयोगों में से यह 'स्तम्भन प्रयोग' पाठकों के लिए प्रस्तुत है -

यह प्रयोग अत्यधिक तीक्ष्ण है, अतः इसे कभी हास्य के रूप में अथवा आजमाने के रूप में नहीं करें, वरन अत्यंत विषम परिस्थितियों में इस प्रयोग को सम्पन्न करें। यह प्रयोग सम्पन्न कर अपने शत्रु की गति-मति को बांधकर अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। इसके बाद जब भी शत्रु आपके सामने आयेगा, उसमें कुछ सोचने-समझने की क्षमता नहीं रहेगी और आप अपना मनोवांछित कार्य उससे सिद्ध करवा सकते हैं।

मैं पन्ने पलटता रहा,
तो ऐसा अनुभव किया,
कि वर्तमान राजनीतिक दशा और
चाणक्य के काल की राजनीतिक दशा
में काफी हद तक समानता है,
बस फर्क है,
तो सिर्फ शताब्दियों का।
तब भी राजनीतिक उतार-चढ़ाव
आते रहते थे और आज भी
राजनीति उसी प्रकार की है।
ऐसा प्रतीत हुआ कि राजनीति
तो प्रारंभ से ही एक समान
ही चलती आई है,
बस समयानुसार पात्र बदलते रहते हैं।

पाण्डुलिपि में कुछ
विशेष क्रियाओं का वर्णन है,
किन्तु पाण्डुलिपि स्पष्टतः
नहीं समझ
पाने के कारण
मैं कुछ श्लोकों
को उतार कर घर ले आया
और एक श्रेष्ठ विद्वान से
उनका सरलीकरण करवाया,
तो पता चला, कि यह
एक तांत्रिक प्रयोग है,

साधना विधान

इस प्रयोग में साधक को **'नीली हकीक माला'** तथा **'शत्रु स्तंभन यंत्र'** का प्रयोग करना है।

☆ यह प्रयोग 15.7.2015 या किसी भी अमावस्या को सम्पन्न करें। यह रात्रिकालीन प्रयोग है।

☆ साधक शुद्ध स्वच्छ पीले वस्त्र पहन कर आसन पर बैठें। गुरु पीताम्बर अवश्य ओढ़ें।

☆ लकड़ी के बाजोट पर सफेद रंग के वस्त्र को बिछावें, उस पर हल्दी और रक्त चंदन के घोल से अष्टदल कमल बनावें तथा प्रत्येक आठ दलों में निम्न आठ अक्षरों को लिखें - 'ॐ', 'ॐ', 'ग्लौं', 'ग्लौं', 'चं', 'टं', 'चं', 'टं'।
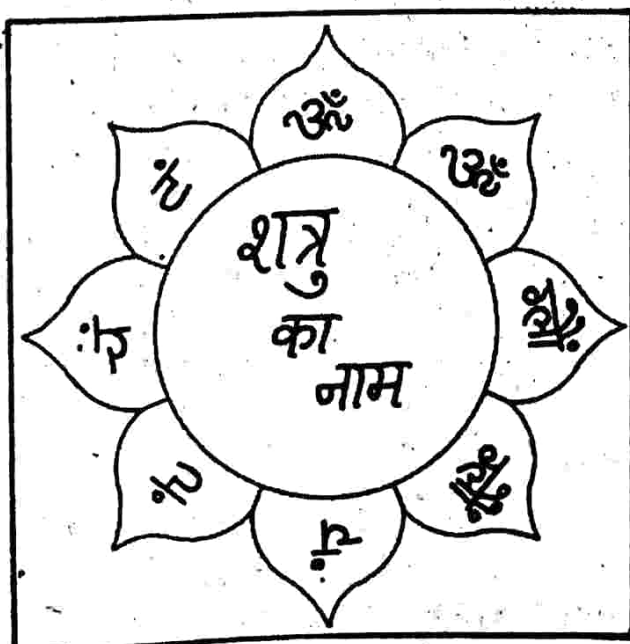
☆ अष्टदल के मध्य शत्रु का नाम लिखकर उस पर यंत्र को स्थापित करें।

☆ यंत्र का पूजन करें; पुष्प, चंदन, कुंकुम, अक्षत चढ़ावें।

☆ यंत्र के सामने तेल का दीप लगायें और सात लोहे की कीलें भी रख दें।

☆ पश्चिमाभिमुख होकर निम्न मंत्र की 51 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं कामाक्षि! मायारूपिणि सर्वमनोहारिणि स्तम्भय स्तम्भय रोधय रोधय मोहय मोहय क्लां क्लीं क्लूं कामाक्षि! कान्हेश्वरि! हुं हुं हुं।

◆ प्रयोग समाप्त होने पर पीले धागे से सभी लोहे की कीलों को बांधकर यंत्र तथा माला भी बाजोट पर बिछे कपड़े में रखकर बांध लें और किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

साधक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि मजाक के लिए या मन में दुर्भावना रखकर इस मंत्र की साधना नहीं करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति आपकी प्रगति में बाधक बन रहा है और आपको कोई दूसरा सुगम मार्ग नहीं मिल रहा है, तो उसे रोकने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें।

स्तम्भन प्रयोग पैकेट- 510/-

कल्याण

श्रीमद् रामचन्द्र–'अगर एक हाथ में घी का भरा लोटा और दूसरे हाथ में छाछ का भरा लोटा लिये जा रहे हो और रास्ते में किसी का धक्का लगे तो तुम किस लोटे को सँभालोगे?

मुमुक्षु–'घी का लोटा ही सँभालेंगे।'

श्रीमद्–'यह देह छाछ की तरह है, इसे आदमी सँभालता है; आत्मा घी की तरह है, पर उसे गिरने देता है। ऐसा नादान यह इंसान है।'

साधक के विघ्न

साधना में मिलने वाली

प्रारंभिक असफलताओं से निराश न हो एवं न ही भ्रम में पड़ें।

साधना का प्रारंभ करने वालों के लिए तथा असफल साधकों के लिए

साधना या अनुष्ठान आदि का एक क्रम, एक विशेष विधान होता है। जब तक इन सारे तथ्यों की जानकारी नहीं होती तब तक साधना में सफलता प्राप्त करना संदिग्ध रहता है, कई बार साधक कड़े प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं प्राप्त करता, इसका कारण साधक के पूर्व जन्म में किए शुभ या अशुभ कर्म हैं, कई बार हम देखते हैं कि दुष्ट व दुराचारी व्यक्ति समाज में सम्मानप्राप्त और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं। इसके विपरीत ईश्वर भक्त सभी प्रकार के दुःख भोगता रहता है।

इसके बारे में नीचे कुछ बिन्दु स्पष्ट किये हैं, जिनके माध्यम से साधक अपने पूर्व जीवन के दोष क्षय कर सब प्रकार के विघ्न दूर करके साधना में सफलता प्राप्त कर सकता है।

1. स्वास्थ्य

सबसे पहले विघ्न है स्वास्थ्य का बिगड़ना। जब तक स्वास्थ्य ठीक रहेगा तभी तक मनुष्य साधना कर सकता है, रोग पीड़ित शरीर से साधना में सफलता प्राप्त करना प्रायः असंभव है, इसलिए सोने, उठने, काम करने व खाने-पीने आदि में ऐसे नियम रखने चाहिए जिनसे शरीर का स्वस्थ रहना संभव हो, प्राकृतिक भोजन, व्यायाम तथा विशेष आसनों से स्वास्थ्य पर विशेष लाभ पहुंचता है।

2. आहार

दूसरा विघ्न आहार की अशुद्धि भी है। जिससे स्वास्थ्य तो बिगड़ता ही है, परंतु इससे मानसिक रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए हमारे शास्त्रों में आहार शुद्धि पर बहुत जोर दिया है, एक प्रसिद्ध कथन है, **'जैसा अन्न वैसा मन'** मनुष्य जिस प्रकार का अन्न ग्रहण करता है, उसके विचार, बुद्धि, कार्य कलाप भी उसी तरह के हो जाते हैं, आहार को भी तीन भागों में बांटा है - एक तो अधिक खट्टे, तीखे, मिर्च वाले अधिक कड़वे गरमागरम व अत्यंत रूखे राजसी आहार व दूसरा बासी, जूठा, अपवित्र व दुर्गन्ध युक्त, मांस मदिरा आदि तामसिक आहार तथा तीसरे न्याय और धर्म से उपजित अन्न तथा न ज्यादा खट्टा न तीखे सत कमाई से उपाजित सात्विक आहार इस आहार को ही ग्रहण करना चाहिए।

तामसिक व राजसिक पदार्थ के सेवन से काम, क्रोध, लोभ, मोह अभिमान व मत्सर आदि दोष उत्पन्न होकर शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ देते हैं, जिससे साधक अपने साधना पथ से गिर जाता है यथा संभव आहार अल्प ही करना अच्छा होता है।

3. शंका

साधक की साधना में तीसरा विघ्न शंका है, जब एक बार साधक गुरु के कहने पर एक साधना में लग जाता है तो उसे तुरंत तो सिद्धि नहीं मिल पाती।

उदाहरणतय: एक विशेष 21 दिन का अनुष्ठान है और जब पांच छ: दिन गुजर जाने पर उसे किसी प्रकार की अनुभूति नहीं होती तो साधक अपनी साधना में शंका करने लग जाता है, प्राय: देखनें में आया है कि लक्ष्मी अनुष्ठान में साधक के व्यय में वृद्धि होती है और अनुष्ठान के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर लक्ष्मी जी की अपार कृपा से सभी प्रकार से उन्नति करता है। अनुष्ठान के प्रारंभ में जब प्राकृतिक के रोष से व्यय बड़ता है तो यह शंका अच्छे-अच्छे साधकों को प्राय: हो जाती है और उनकी बुद्धि में समय समय पर यह भावना उत्पन्न हो जाया करती है, न मालूम यह देवी या देवता है भी या नहीं है तो मुझे दर्शन देंगे या नहीं। मैं जो साधना कर रहा हूँ वह ठीक है या नहीं। जो यंत्र या चित्र मैंने रखा है, वह मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित है या नहीं। ठीक होती तो अब तक कुछ न कुछ अनुभूति या लाभ अवश्य होता, हो न हो साधना में कोई गड़बड़ है और मुझे गुरुजी ने ठीक से बताया नहीं, जिससे उसके मन में शंका पक्ष और बढ़कर हावी हो जाता है, फलस्वरूप कई साधक तो अनुष्ठान पूरा करने से पहले ही छोड़ देते हैं और पूरा करते भी हैं तो पूर्ण श्रद्धा व विश्वास के साथ नहीं सम्पन्न करते हैं उन्हें किसी प्रकार की सफलता प्राप्त नहीं होती।

भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं -

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह॥

अश्रद्धा से किया हुआ हवन, दान, तप या कोई भी कर्म असत् कहलाता है, उससे न यहां कोई लाभ होता है और न परलोक में होता है।

श्रद्धा ही साधक का मुख्य बल है। श्रद्धा गुरु के प्रति, अपनी साधना के प्रति, श्रद्धा, मंत्र, यंत्र या उस देवी या देवता के प्रति दृढ़ता से बनाए रखते हुए करनी चाहिए। यथार्थ साधक को अटल भाव से साधना को सम्पन्न करना चाहिए -

इहासने शुष्कयतु मे शरीरं
त्वगस्थिमांसं प्रलयंच यातु।
अप्राप्य बोधं बहुकल्प
दुर्लभं नेवासनात कायमनश्चलिष्यते॥

इस आसन पर मेरा शरीर सूख जाय, चमड़ी, हड्डी नाश हो जाए, परंतु बहुकल्प दुर्लभ बोध प्राप्त किए बिना इस आसन से कभी नहीं उठूंगा।

जिससे साधक अपनी साधना में आगे बढ़ सके व जितना वह आगे बढ़ेगा उतना ही उसे इस बात का पता चल जाएगा कि यह सब बातें कल्पना ही नहीं अपितु ध्रुवसत्य है।

4. सद्गुरु

सद्गुरु का अर्थ कोई विशेष मनुष्य से नहीं, अपितु जो भी ज्ञान दे सके, शिष्य के जीवन को ऊंचा उठा सके, और उसके जीवन को पूर्णता दे सके, उसे सही मार्गदर्शा सके, वही गुरु कहलाने योग्य है।

यह विषय बहुत ही विचारणीय हैं, क्योंकि वर्तमान काल में सच्चे त्यागी, अनुभवी सद्गुरुओं की बहुत कमी हो गई है, यों तो आजकल गुरुओं की संख्या बहुत बढ़ गई है, जिधर देखिये गुरुओं के समुदाय में अधिकांश दम्भी, दुराचारी, परधन और परस्त्री-कामी, नाम चाहने वाले, बिना साधना के अपने आपको अनन्य भक्त, परमज्ञानी यहां तक की अपने को ईश्वर तक बतलाने वाले कपटी पाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में सद्गुरु का चुनाव करना बड़ा कठिन हो गया है।

एक अच्छे सद्गुरु का शिष्य को मिल जाना भी एक सौभाग्य की बात है शिष्य को साधना मार्ग पर प्रवृत्त करने के लिए और उसके साधना काल में आने वाली बाधाओं से सही मार्ग दिखाने व साधक के भीतर शक्ति के संचार करने के लिए सद्गुरु की अत्यंत आवश्यकता है। तंत्र पारंगत योगियों का कहना है कि सद्गुरु से दीक्षा प्राप्त करने से साधक में दिव्यता आती है तथा उसके पापों का नाश हो जाता है।

नित नये गुरु से भी साधना में बड़ी गड़बड़ी मच जाती है, क्योंकि साधना लक्ष्य एक होने पर भी मार्ग अनेक होते हैं, आज एक के कहने पर प्राणायाम शुरु किया, कल दूसरे की बात सुनकर हठयोग द्वारा साधना करने लगे, परसों तीसरे के उपदेश से नाम जप आरंभ कर दिया, चौथे दिन व्याख्यान के प्रभाव से वेदान्त का विचार करने लगे। इस तरह जगह-जगह भटकने और बात-बात में गुरु बदलते रहने से कोई भी साधना सिद्ध नहीं होती।

भगवान कृष्ण ने स्वयं गीता में कहा है -

तद विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिन॥

उस ज्ञान को तू तत्व दर्शी ज्ञानियों के पास जाकर

समझ, उनको भली भांति दण्डवत प्रणाम करने से उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से परमात्मा तत्व को भली भांति जानने वाली ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्व का उपदेश करेंगे।

यह केवल सद्गुरु द्वारा ही संभव है।

5. प्रसिद्धि

साधक के मार्ग में एक बड़ी बाधा, प्रसिद्धि की भी है। जब लोगों को पता चलता है कि अमुक साधक यह साधना करता है तो स्वाभाविक ही है कि उनके मन में साधक के लिए श्रद्धा हो जाती है, वे समय समय पर मन, वाणी, शरीर से उसका आदर, मान करने लग जाते हैं। साधक भी मनुष्य है व आदर, मान व प्रतिष्ठा प्रिय होते हैं, ज्यों-ज्यों उसे इनकी प्राप्ति होती है, त्यों-त्यों उसकी लालसा अधिक से अधिक लोगों से मिल कर सम्मान प्राप्त करने की होने लगती है। परिणाम स्वरूप वह ईश्वरी साधना से हट कर अपने सम्मान वृद्धि में लग जाता है, त्यों-त्यों उसकी साधना में न्यूनता आती हैं, त्यों त्यों उसका तेज, निस्पृहता, सरलता और ईश्वरीय श्रद्धा में भी न्यूनता आने लगती है, जिससे साधक का सत्व मुखी हृदय तमसाच्छादित होकर क्रोध, मोह और दम्भ में भर जाता है, इसलिए साधक की भलाई इसी में है, कि वह जितना है, दुनियां उसको सदा उससे कम ही जाने। बाहर से नीचे रहकर अन्दर से ऊंचा उठते जाना ही साधक के लिए कल्याणप्रद है।

6. ब्रह्मचर्य

साधना में एक विघ्न ब्रह्मचर्यता का पूरा पालन न करना भी है, साधक के शरीर में तेज और ओज हुए बिना साधना में पूरी सफलता नहीं मिलती, इसमें प्रधान आवश्यकता है, शरीर, मन, इन्द्रियों और बुद्धि के बल की और यह बल प्राप्त होता है, ब्रह्मचर्य से। अत: साधक को चाहिये कि न तो ऐसी कोई क्रिया करे न ऐसा संग ही करे तथा न ऐसे पदार्थों का सेवन ही करे कि जिससे उसका ब्रह्मचर्य का नाश हो।

विवाहित साधकों स्त्री या पुरुष को भी परमार्थ साधना के लिए यथा साध्य शीलव्रत पालन करना चाहिए। सदा यह स्मरण रखना चाहिए कि जो जितना ही ब्रह्मचर्य का पालन करेगा, वह उतना ही शीघ्र साधना में उच्च स्तर प्राप्त कर सकेगा।

हनुमान जी ने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया, जिसके प्रभाव से वे बड़े ही वीर, तेजस्वी, ज्ञानी, धीर, विद्वान व भगवान के भक्त हुए। वे योग की सिद्धियों के ज्ञाता थे। जिनके प्रभाव से वे महान से महान और सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप धारण कर लिया करते थे यह बात लंका जाते समय उन्होंने विशाल रूप धारण कर सौ योजन के समुद्र को लांघ गये तथा लंका प्रवेश करते समय सूक्ष्म रूप धारण कर लिया इस वृतांत से सिद्ध होता है।

भीष्मपितामह ने आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करने की प्रतिज्ञा ली इससे संतुष्ट होकर उनके पिता शान्तनु ने उनको वरदान दिया कि तुम्हारी इच्छा के बिना तुम्हें मृत्यु नहीं मार सकेगी, परशुराम जैसे महान अस्त्रधर त्रैलोक्य विजयी वीर भी तेईस दिन घोर युद्ध करके भीष्मपितामह से पराजित हुए, इसमें ब्रह्मचर्य पालन एक प्रधान कारण है।

7. कामना

जिस साधक का मन विषय कामनाओं से मुक्त नहीं हो जाता है। उसके भी साधना मार्ग में बड़े बड़े विघ्न आते हैं, क्योंकि कामना से ही तो क्रोध, मोह, लोभ उत्पन्न होते है और जिसके फलस्वरूप बुद्धिनाश होने से साधना का नाश कर डालती है, अतएव कामनाओं से चित्त को सदा दूर रखना चाहिए।

8. परदोष

साधक की साधना में एक दोष दूसरों में दोष देखना भी है। साधक को इस बात से कोई संबंध नहीं रखना चाहिए कि दूसरे क्या करते हैं। साधक को तो अपनी साधना में निरंतर मगन रहना चाहिए, जिससे उन्हें दूसरों में दोष देखने का समय ही न मिले। और जिन्हें दूसरों में दोष देखने की आदत पड़ जाती है, वे अपने साधना मार्ग पर स्थिर रह कर आगे नहीं बढ़ सकते साधक को हरि भक्त श्री कबीर जी के इस उपदेश पर ध्यान रखना चाहिए।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

उदाहरणतय: जब भी आप तर्जनी उंगली उठाकर दूसरों की ओर इशारा करेंगे तो मध्यमा, अनामिका व कनिष्ठिका तीनों उंगलियां आपकी ओर मुड़ जाएगी और उनके मुड़ने का अभिप्राय ही यही है कि आप एक बार दूसरों पर कुछ दोष देने से पहले तीन बार स्वयं को देखें। दोष तो अपने देखने चाहिए और उन्हीं को दूर करने का यथा संभव प्रयत्न करना चाहिए। □□□

समदोषः समग्निश्च समधातुमलक्रियः
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते॥

जिस मनुष्य के शरीर में वात, पित, कफ, जठराग्नि तथा रक्त, मांस-मज्जा, शुक्र-भेद अनुपातिक रूप से समान हों एवं मल-मूत्र, शरीर से पसीना निष्कासित होने की क्रिया नियमित हो, उसकी आत्मा और उसका मन प्रसन्न हो, तो ऐसा व्यक्ति सम्पूर्ण दृष्टि से स्वस्थ कहलाता है

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है, इसका सीधा सा अर्थ है कि मनुष्य की सब प्रकार की उन्नतियों का मूल आधार उसका स्वास्थ्य हैं यदि मनुष्य पूर्ण रूप से स्वस्थ है तो वह स्वयं ही सौन्दर्ययुक्त बना रहता है, फिर उसे किसी प्रकार के बनाव-श्रृंगार की आवश्यकता नहीं रहती। स्वस्थ व्यक्ति का मन सदैव प्रफुल्लित व तरंगित बना रहता है और वह किसी भी कार्य को पूर्ण प्रसन्नता व आत्म-विश्वास के साथ सम्पादित कर सकता है।

यदि कोई व्यक्ति, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष अपने स्वास्थ्य कीतरफ ध्यान न दे तो धीरे-धीरे उसका शरीर रुग्ण होने लगता है। असमय ही सिर के बाल सफेद होने लगते हैं, चेहरे पर कील-मुंहासे निकलने लगते हैं, शरीर बेडौल और थुलथुला हो जाता है, उस पर आक्रमण होने लगता है विभिन्न प्रकार के राजरोगों का, जैसे-हाई ब्लड प्रेशर, डॉयबिटीज, अल्सर इत्यादि। एक अस्वस्थ व्यक्ति को यदि फूलों की शैय्या पर भी सुला दिया जाए, तो उसे वह कांटों का बिस्तर ही लगता है। धीरे-धीरे वहअपने-आप को परिवार के ऊपर बोझ समझने लगता है, और शरीर व मन दोनों से ही बिखरता हुआ यह मौत की जंजीर में जकड़ने लग जाता है। **पुरातन काल से ही यह पम्परा चली आ रही है कि सूर्योदय से पूर्व ही उठकर दैनिक कार्यों से निवृत्त हो लेना चाहिए। जिससे पूरे दिन शरीर में ताजगी बनी रहती है, किन्तु आजकल तो सौ व्यक्तियों में से शायद ही दस-बीस व्यक्तियों को ही पता होगा कि सूर्योदय कब होता है।** अनियमित जीवनचर्या आज के पुरुष व स्त्रियों के दैनिक जीवन का अंग बन गयी है और इस अनियमितता का पहला शिकार होता है, 'मनुष्य का पेट' कब्ज की शिकायत होना, दस्त लगना, आंव पड़ना, गैस की परेशानी और अचानक ही पेट में दर्द उठना इत्यादि। इस प्रकार की पेट से सम्बन्धित परेशानियां तो एक आम समस्या बन गयी है।

साधारणतः प्रत्येक व्यक्ति को यह पता है, कि अधिकांश बीमारियों से छुटकारा तो पेट की तरफ ध्यान देकर ही पाया जा सकता है। वैद्य, डॉक्टर तथा प्राकृतिक चिकित्सकों के अनुसार यदि मनुष्य के पेट में किसी प्रकार की खराबी नहीं है, समय पर शौच आता है और पाचन क्रिया ठीक है तो व्यक्ति का शरीर 75 प्रतिशत निरोगी एवं स्वस्थ रहता है। भारत के अस्पतालों में 60 प्रतिशत रोगी तो पेट से सम्बन्धित बीमारियों के ही आते हैं और उनमें से भी आधे से अधिक रोगी तो कब्ज दूर हो जाने के बाद स्वस्थ हो जाते हैं

यदि हम अपना थोड़ा सा समय सिर्फ 25 मिनट ही अपने लिए रोज निकाल लें तो निश्चित रूप से स्वस्थ बने रह सकते हैं। इसके लिए सुबह जल्दी उठने की आदत डालें। दैनिक-क्रिया से निवृत्त हो कर 25 मिनट नित्य व्यायाम करें और फ़िर अपने रोजमर्रा के कार्यों में लग जाएं। यदि आपने ऐसा करना शुरू कर दिया, तो निश्चित जानिए कि आपका अस्वस्थ शरीर धीरे-धीरे स्वस्थ होने लग जाएगा और आपके जीवन में प्रसन्नता वापिस लौट आयेगी।

'जैसा भोजन वैसी बुद्धि' अतः पाचन क्रिया का पूर्ण रूप से सही रहना अत्यन्त आवश्यक है, पेट के महत्वपूर्ण भाग छोटी आंत, बड़ी आंत व मलाशय हैं और तीनों का पूर्ण स्वस्थ रहना आवश्यक है, इनकी नियमित शुद्धता से शरीर पूर्ण-रूप से स्वस्थ रहता ही है। इसके लिए बड़ी-बड़ी एलोपैथिक दवाइयां लेना निश्चित रूप से इन अंगों के लिये घातक है। ये एलोपैथिक दवाइयां पेट के रोगों को दबा देती है, यह इन्हें समूल रूप से नष्ट नहीं कर सकती है, जबकि हमारे आस-पास ऐसी हजारों घरेलू औषधियां हैं, जिनका उचित सम्मिश्रण में सेवन करने से पाचन-संस्थान पूर्ण-रूप से स्वस्थ हो सकता है, ऐसी ही कुछ विशेष बीमारियां और इनके उपचार से सम्बन्धित औषधियों का विवरण नीचे दिया जा रहा है-

१. नाभि स्थान पर उठने वाला पेट का दर्द-

ऐसा भयंकर पेट का दर्द कि जिसमें किसी भी दवा से लाभ नहीं हो रहा, रोगी दर्द से चीख रहा हो, भूख और प्यास न लग रही हो तो थोड़ा सा नारियल का तेल नाभि स्थान पर गिरा कर हाथ से धीरे-धीरे मालिश कर दें। कुछ ही देर में पेट दर्द में आराम मिलेगा।

२. गैस की समस्या-

छोटी हरड़ को मही की भावना दीजिए। मही की भावना देने के लिए आप पहले एक किग्रा. हरड़ को साफ करके छाछ (मट्ठे) में चौबीस घंटे के लिए फूलने दें, फिर दूसरे दिन मट्ठे में से निकाल कर पानी से धो लें व इसे छाया में सूखने दें, ऐसा छः से सात बार तक करें। फिर सातवीं भावना देने के बाद हरड़ को सुखा कर महीन-महीन पीस लें, फिर इसमें 250 ग्राम अजवाइन पीस कर मिला दें और स्वाद के लिए थोड़ा काला नमक मिलायें। तकलीफ होने पर एक चाय का चम्मच भरकर इस चूर्ण को फांक लें और पानी पी लें। दस मिनट के भीतर ही आराम मिल जायेगा

इसका प्रयोग आप भोजन के उपरान्त नित्य एक पाचक के रूप में भी कर सके हैं, जिससे कि गैस की शिकायत हो ही नहीं।

३. कब्ज

कब्ज दूर करने का सबसे अच्छा उपाय है, कि आप सुबह उठकर दो गिलास पानी पी लें और फिर शौच के लिए जाएं।

- चोकर युक्त आटे की रोटी बनाकर खाएं।
- कब्ज हो जाने पर बड़ी या छोटी हरड़ और मुलहटी का चूर्ण समभाग लेकर, दो छोटे चम्मच गरम जल के साथ ले लें

यदि गर्भिणी स्त्री को कब्ज की शिकायत हो जाए तो बहुत तकलीफ होती है। ऐसी अवस्था में उसे दो बड़े चम्मच

अरण्ड (रेड़ी) का तेल गुनगुने दूध में मिलाकर पिला देना चाहिए।

४. दस्त

एक पाव पानी में 15-20 ग्राम अनार के पत्ते पीस कर छान लें, और रोगी को सुबह-शाम पीने के लिए दें, इससे खूनी दस्त बंद हो जायेगी।

यदि छोटे बच्चों को दस्त आ रहा हो तो–प्राय: सर्दी लगने के कारण बच्चों को हरे रंग का दस्त होने लगता है। ऐसी अवस्था में एक जायफल लेकर उसे किसी साफ पत्थर पर चन्दन क्री तरह थोड़ा सा घिस लें। बच्चा आसानी से चाट ले, इसके लिए मिश्री की डली को भी घिस लें और उंगली से थोड़ी-थोड़ी मात्रा में सुबह-शाम चटाएं। इससे दस्त में राहत मिलेगी।

यदि गर्मी के कारण बच्चों को पतले एवं पीले दस्त आ रहे हों तो दो ग्राम सौंफ व दो ग्राम मिश्री लेकर बारीक चूर्ण बना लें और एक कप गुनगुने पानी में घोल कर छान लें। ठंडा होने पर प्रत्येक घंटे बाद एक-एक चम्मच पिलाएं, इससे फायदा होगा।

५. आंव-मरोड़–

पेट में आंव या मरोड़ होने पर निम्न चूर्ण को मुंह में रख बर चबा लें और पानी कम से कम एक घण्टे बाद पीयें।

खसखस 6 ग्राम, इलायची छोटी 5 ग्राम, मिश्री 12 ग्राम, इन तीनों को पीस कर इस चूर्ण को किसी कांच के बर्तन में बन्द करके रख दें तथा आवश्यकता पड़ने पर इसका प्रयोग करें।

६. खूनी आंव

एक छोटी गांठ सोंठ, 6 दाने छोटी हरड़ व एक ग्राम हींग लेकर इनको अलग-अलग देशी घी में तल लें। फिर 10 ग्रामं सौंफ तवे पर सूखा ही भून लें तथा 100 ग्राम सौंफ बिना भूने ले लें। इन सभी वस्तुओं में स्वाद के लिए काला नमक मिलाकर इन सब का चूर्ण बना कर रख लें। एक छोटा चम्मच चूर्ण सुबह, शाम, दोपहर तीनों समय फांक कर पानी पी लें। इसको जरूरत पड़ने पर दो सप्ताह तक प्रयोग करें। पुरानी आंव भी 1 माह तक इस चूर्ण का प्रयोग करने से दूर हो जाती हैं

इस प्रकार आप अपने शरीर को थोड़ा सा ध्यान रख कर बदले में उससे ढेर सारा आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें।)

सौन्दर्य प्रसाधन

यदि आपकी त्वचा में रूखापन हो तो आधा कटोरी बेसन में आधा कटोरी दही मिलाकर उबटन तैयार कर लें और उसमें दो बूँद बादाम का तेल मिलाकर शरीर पर लगायें। फिर कुछ देर बाद स्नान कर लें।

सौन्दर्यवर्द्धन के लिए एक चम्मच दही लेकर उसे चेहरे, गर्दन, हाथ तथा पैरों पर हल्के हाथों से मलें। कुछ देर बाद धो डालें। इस प्रकार त्वचा स्निग्ध और स्वच्छ हो जाएगी।

शरीर के खुले भागों की सफाई के लिए कच्चा दूध लेकर उसे शरीर पर उबटन की तरह लगायें। १५ मिनट बाद मलकर छुड़ा लें और स्नान कर लें।

तैलीय त्वचा के लिए एक अण्डे की सफेदी लेकर उसमें आधा चम्मच शहद तथा आधा चम्मच नींबू का रस मिलाकर फेंट लें। इसे शरीर पर लगायें। आधे घण्टे बाद मलकर छुड़ा लें और स्नान कर लें।

यदि आपके चेहरे पर झाइयाँ हैं तो सम मात्रा में गाजर तथा खीरे का रस मिलाकर लगाइए। लाभ होगा।

चेहरे पर काले धब्बे पड़ गए हों तो एक चम्मच मलाई में एक चम्मच नींबू का रस मिलाकर चेहरे पर लगायें। फिर चेहरा धो लें। इससे धब्बे दूर होंगे और चेहरे की कांति बढ़ेगी।

खीरे के रस में थोड़ा-सा दूध मिलाकर चेहरे पर लगाने से रंग साफ हो जाता है। खीरे की क्रीम बनाना हो तो एक चम्मच खीरे के रस में कुछ बूँदें नींबू के रस की व हल्दी मिलाएँ। इससे चेहरे की त्वचा में चमक आती है।

चेहरे पर झाइयाँ या झुर्रियाँ हों तो नीम की ताजी पत्तियों को पीसकर, रस चेहरे पर लगाएँ, झाइयाँ मिट जाएगी।

आलू को सिल पर महीन पीसकर मलमल के कपड़े में बाँधकर कुछ दिन लगातार आँख के ऊपर रखने से आँखों के पास की झाइयाँ मिट जाती हैं। इससे आँखों को शीतलता भी मिलती है।

लौकी के छिलके को चेहरे पर हल्के हाथों से मसल कर लगाने से चमक आ जाती है।

पालक को उबालकर उसके रस को त्वचा पर मलें। यह सभी प्रकार की त्वचा के लिए लाभप्रद होता है। इससे त्वचा का सौंदर्य बढ़ता है।

यह प्राणायाम नाड़ियों अर्थात् स्नायुमंडल की शुद्धि के लिए किया जाता है। यह बड़ा ही सरल प्राणायाम है और बहुत उपयोगी भी। मन को एकाग्र कर आप इसके क्रम को बढ़ाएं।

अनुलोम-विलोम-

नाड़ी शोधन की पहली अवस्था अलोम-विलोम है। पद्मासन में बैठें। बायीं नासिका से श्वास भरें और दायीं से छोड़े, फिर दायीं से भरें और बायीं से छोड़ें। इसी प्रकार 5-7 मिनट इसका अभ्यास करें। प्रयास करें कि जितना समय श्वास लेने में लगे, उतना ही समय श्वास छोड़ने में भी लगे और लय भी एक जैसी हो। इसका अभ्यास हो जाने के बाद रेचक का समय दोगुना कर दें।

रोगी तथा दुर्बल व्यक्ति इस प्राणायाम से विशेष लाभ ले सकते हैं। हृदय तथा श्वास रोगियों के लिए यह अति उत्तम प्राणायाम हैं जिससे मन शांत तथा नाड़ियां शुद्ध होती हैं।

विधि :

सिद्धासन, पद्मासन या सुखासन में बैठ जाएं। श्वास को शांत करें। दायें हाथ की दोनों पहली अंगुलियों को मोड़ते हुए दायीं नासिका को अंगूठे से बंद कर लें और श्वास को बायीं नासिका से भरें। चौथी एवं पांचवीं अंगुली से बायीं नासिका को बंद कर लें और कुछ क्षण आंतरिक कुंभक करे। अंगूठे को हटाकर दायीं नासिका से धीरे-धीरे श्वास निकाल दें। फिर दायीं नासिका से श्वास लें। दोनों नासिकाएं बंद करें। फिर बायीं नासिका से श्वास बाहर निकाल दें। यह नाड़ीशोधन प्राणायाम की एक आवृत्ति हुई।

इसे तीन-चार बार प्रतिदिन करते हुए अभ्यास को बढ़ाएं। उतनी देर श्वास रोकना है, जितनी देर आप आराम से रोक सकें और जब सांस छोड़ें, तो छोड़ने की गति धीमी हो। जब आपका यह अभ्यास पक्का हो जाए तो श्वास का क्रम बना लें। यदि श्वास लेने में 4 सेकंड लगें, तो 8 सेकेंड तक श्वास रोकें और 8 सेकंड में ही श्वास को बाहर निकालें। यानि एक, दो और दो (1:2:2) का अनुपात। इस अनुपात को 1:4:2 तक बढ़ाएं। श्वास रोकने में शक्ति नहीं लगानी है।

नाड़ी शोधन प्राणायाम में विशेष ध्यान देने योग्य बाते हैं पूरक, कुंभक और रेचक की क्रियाओं में एक विशेष अनुपात का होना तथा रेचक करते समय नासिका से अधिक दूरी पर श्वास का अनुभव न होना।

Koumaari Tantra Sadhana

A Sadhana for every householder!

To lead the life of a family man is a great Sadhana in itself. A family man has so many responsibilities and duties that it is not simply possible for him to leave all work and try Sadhanas. For him it is not possible to be fully devoted to the Guru and serve him always. As soon as he wakes up in the morning he starts to think about his family and even at night he is not able to sleep peacefully because of the worries of the family life. The cause of worries of the family life. The cause of worries might be bad health of spouse, studies of the children, the aging parents or his own job or business. It is then not right to expect him to go to Shamshaan or a funeral ground in order to accomplish Sadhanas. Neither can he be expected to travel to some Shakti Peetth (special pwoerful shrines of the Goddess Shakti) in special moments and experience the divinity there through Sadhanas. He is so much busy in the family life that he does not have the time to think of other things.

The question then arises what a family man should do? Which worship or Sadhana should be try that does not clash with his family responsibilities? Which are the Sadhanas which could be tried even with one's spouse or living in the society? Which Sadhanas should he do in order to attain to success in family life, peace of mind, respect in the society and to get rid of worries and tensions?

Power of Shakti

One cannot deny the amazing power of Shakti that is present in each woman. It is only through this power that a man could attain to totality in life. Imagine that a person has returned home having worked all day and is very tired. If he hears the sweet loving words of his wife then he forgets all the worries of the day and he feels fresh and active. But if the same wife starts to nag him then he feels as if life has become a hell for him.

Maximum literature has been dedicated to women. Poems, stories, songs have mostly been devoted to women. A lover always keeps thinking of his beloved. He remains eager to have a glimpse of his beloved. There is no dearth of lovers who have even sacrificed their lives for their love. In every country one can find tales of great lovers.

It is the power of women that makes creation in the world possible. One cannot imagine Ram without Sita, Krishna without Radha, Shiva without Parvati and Vishnnu without Laxmi or Narayan without Bhagwati.

Koumaari Sadhana

Sadhanas have been performed from the very early ages. Some rituals in fact have become a part of the human life. But very few people are aware of the reason behind these rituals or how these rituals should be performed correctly.

It is a ritual in almost the whole of India to offer food to nine unmarried girls on the ninth day of Navratri. In India an unmarried girl is called

Kumaari and she is worshipped in order to attain to peace and success in family life. The ancient texts elucidate this fact even better. In the Uttar Khand chapter of Rudrayamal Tantra it is stated that any unmarried girl of any caste or creed can be offered food. Koumaari is in fact a Goddess who bestows knowledge and divine powers. The text Kubjikaa Tantra states that a girl of the age 8 to 13 is called Kulajaa and she is considered divine and worshipped.

According to the text Baal Tantra a Sadhak of Kumari gains immense powers and is able to even please Lord Shiva and gain any divine boons from Lord Mahadev.

Koumaari Sadhana is very simple and easy. It brings about the desired result very soon. Through this Sadhana a Sadhak can win favours for his family, please all gods and gain boons from them and improve on his fortune and become prosperous. Through this Sadhana not just the bad karmas of the present birth but also of the past birth can be neutralised. A house in which Koumaari Sadhana is performed becomes pure and sacred. It is stated in Rudrayamal Tantra — If a person with a weak mind, with a bad luck tries Koumaari Sadhana then he could attain to victory and success and lead a comfortable and pleasure life.

Koumaari worship could be accomplished in two ways. First in a divine mood and the other in an angry or fierce mood. Through the first mode the Sadhak gains peace, boons of Tantra and Mantra and the Sadhak gains divine powers too.

If tried in a fierce mood one gains wealth and true knowledge. The Goddess Koumaari becomes pleased with the Sadhak and brings a sort of revolution in his life. According to the text Vrihnneel Tantra such a Sadhak never has to face tension, quarrels, problem from spirits in his life.

Koumari Sadhana is the worship of Mother Goddess Parvati. She is the epitome of all Sidhis or divine powers. In Koumaari there is the residence of Baal Bheirav another form of Lord Shiva. Hence through this Sadhana one is able to please not only Goddess Saraswati but also Lord Bheirav.

This Sadhana could be tried on the ninth day of any fortnight of any month. This year during the festival of Gupt Navratri the ninth day i.e. 25.7.2015 is a very auspicious time for this Sadhana. On this day Sadhak should surely try this Sadhana that instils beauty, peace and prosperity. One should repeat Sadhana on seven consecutive ninth days of subsequent fortnights.

Sadhana procedure

For the Sadhana one needs a **Koumaari Yantra, Neelaashma rosary,** a fresh flower garland, flowers and rice grains.

The special feature of this Sadhana is that it is best done if the husband and wife together sit in the Sadhana. Wear beautiful and fresh clothes. make the place of Sadhana pure and clean. Light a lamp of pure ghee. Before starting the Sadhana pray to Goddess Koumaari to present herself and bless you. a woman too should wear the choicest clothes and put a mark of vermilion on the forehead.

Both should take water in the right hand and

chant thus —

Amuk Phal Praatayemukkarmannyak Devyaah Preetyate Kumaareem Poojanam Karishye.

Here in place of Amuk speak out your wish e.g.. Birth of a child, defeat of some foe, gain of wealth etc. Having pledged thus let the water flow to the ground.

In Sadhanas one should not hesitate in speaking out the hidden wishes. When taking the above pledge speak out the wish clearly. When trying this Sadhana one should be determined and the level of success depends on one's determination.

Take water in the left palm and with the fingers of the right hand sprinkle the water on the whole body. Then meditate on the form of the Goddess Koumaari. For this chant the following Dhyaan Mantra five times. Each time offer a flower on the Yantra. In the end offer garland.

Dhyaan Mantra

Om shankh-kundendu Dhavalaam Dwibhujaam Vardabhayaam. Chandra-madhya-mahaambhoj Haav-bhaav-viraajitaam. Baal Roopaam Cha Treilokya-sundareem Var-varnnineem. Naanaa-lankaar-namraangimbhadra Vidyaa-prakaashineem. Chaaruhaasyaam Mahaanandhridyaam Shubhdaam Shubhaam.

Then offer water, flowers, rice grains, incense, ghee lamp, betel nut, sweets and betel leaf to the Goddess. Each time chant **Ayeim Hreem Shreem Hoom Hasouh Kul Kumaaryei Namah Jalam Samarpayaami.** In place of Jalam chant Pushpam, Akshtaan, Dhoopam, Deepam, Poongi Phalam, Neivedyam and Taamboolam respectively.

Then place the right hand on the Yantra and offer prayers to the goddess who has a fair complexion, blue radiance, divine form, bright eyes and red clothes.

Koumaari has sixteen forms. Pray to each chanting thus.

Om Ayeim Sandhyaayei Namah
Om Ayeim Saraswatyei Namah
Om Ayeim Trimoortyei Namah
Om Ayeim Kaalikaayei Namah
Om Ayeim Subhagaayei Namah
Om Ayeim Umaayei Namah
Om Ayeim Maalinyei Namah
Om Ayeim Kubjikaayei Namah
Om Ayeim Kaalsankarshinnyei Namah
Om Ayeim Aparaajitaayei Namah
Om Ayeim Rudraannyei Namah
Om Ayeim Bheiravyei Namah
Om Ayeim Mahaalakshmyei Namah
Om Ayeim Peetth-naayikaayei Namah
Om Ayeim Shetragyaayei Namah
Om Ayeim Charchikaayei Namah

The most important thing is that through Koumari Sadhana one can also please Lord Baal Bheirav. Hence it is necessary to worship Baal Bheirav.

For this place a betel nut representing Baal Bheirav and chant the Mantra ***Om Kulkumaari-kaayei Saparivaar Baal Bheiravaayei Namah*** 11 times. Offer vermilion, flowers and rice grains on Baal Bheirav.

Then with **Neelaashma rosary** chant five rounds of following Mantra. Anyone the husband or wife can turn the beads of the rosary.

Ayeim Hreem Shreem Kleem Hoom Hasouh Kulkumaarikaayei Namah Swaahaa.

When the Mantra chanting is over walk around the place of worship, worship the Guru and sing Aarti of Guru. Then offer food to nine unmarried girls. Also offer them gifts.

A whole book could be written on the boons that could be had through Koumaari Sadhana. In Rudrayamal Tantra it is said —

Through this Sadhana one can gain eloquence, divine powers or Siddhis, victory in each step of life, blessing of Lord Shiva, blessings of all gods, success in all tasks, blessing of the Goddess herself, fame and wealth.

If the Mantra chanting is accomplished on each Navami or ninth day of every fortnight and food offered to unmarried girls then surely one could attain to success in life.

Sadhana articles — 450/-

□□□

Among the Jains the most avidly worshipped deity is Chakreshwari and not without reason. The powerful divine goddess protects her worshippers and sadhakas from all dangers and also ensures that there remains no paucity in their lives. Her blessings mean wealth galore and success in business ventures. And what more besides providing financial security for her worshippers she even helps them attain to amazing levels of success in the spiritual field.

According to jain scholars if a Sadhak tries the Sadhana of goddess Chakreshwari with full faith, determination and devotion then without doubt the Goddess is pleased and she showers all worldly and spiritual boons on him.

Specially if one is facing with failure in business or one is jobless then this Sadhana comes as a great boon. After accomplishing it within no time one attains to success in the desired field and financial speaking there remains no paucity whatsoever. However the first and foremost requirement for success in the Sadhana is unmoving faith.

This Sadhana that is being presented here is a very ancient ritual that has stood the test of time over the ages. It has been tried by hundreds of Sadhaks and has never known to have failed as yet. Even if there is some lapse on the part of the Sadhak there sure accrues some result, for the kind goddess never overlooks even the slightest spark of devotion.

The Sadhana is of three days. It should be done early in the morning before sunrise. The best day to start it is any **Monday of the bright fortnight of the lunar calendar**.

For the Sadhana have a bath and wear fresh white clothes. Sit on a white worship mat facing the East. Cover a wooden seat with yellow cloth. Then with vermilion write hreem on it. On this inscription place the **Chakreshwari Yantra**.

Then chant one round of the Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Sadhana. Thereafter light a ghee lamp before the Yantra. Worship the Yantra by offering vermilion, rice grains and yellow flowers on it.

Then concentrating your gaze on the Yantra contemplate on the form of the Goddess Chakreshwari chanting the following Mantra.

Shree Chakre Bheeme Lalit Var Bhuje Leelayaa Laalayantee.

Chakram Vidyutprakaasham Jwalit Shat Shikhe Vei Khagrendraadhiroodde.

Tattvei Rud Bhootbhaasaa Sakal Gunnnidhe Mantra Roop swakaante.

Kotyaa Dityaa Prakaashe Tribhuvan Vidite Traahi Maam Devi Chakre.

Then with a ***Hakeek rosary*** chant 35 rounds of the following Mantra of Goddess Chakreshwari who in the Jain Tantra is believed to be the fulfiller of all wishes.

Om Ayeim Shreem Chakre Chakra Bheeme Jwal Jwal Garud Prishti Samaaroodde Hraam Hreem Hroom Hroum Hrah Swaahaa.

Do this daily for three consecutive days. After each day's chanting, place the rosary on the Yantra. On the fourth day drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Soon you shall see wonderful opportunities coming your way that could help you make it big and earn more wealth than you could have ever imagined. Even if there are some delays do not lose heart and have patience. Keep your faith unmoved and without doubt soon you shall taste success.

Sadhana Articles — 450/-

It is a strange paradox that man who considers himself supreme among all beings is nothing but a slave to the circumstances. Instead of becoming capable of transforming things in his favour he easily gives in to the various pressures and adjusts himself to situations. And thus he becomes fated to lead an ordinary life that has nothing new in it. Most of his desires remain unfulfilled and he becomes nothing more than a straw that is carried away by the strong current against its will.

But if we go through human history we shall find that only those men and women have been honoured and remembered who dared to stand up against challenges and who came out victorious even while struggling against all odds. Life means struggle and problems but the real pleasure is in overcoming the same and emerging triumphant in every ordeal that life has to offer.

No matter which field in life you choose problems are bound to emerge. These could be in the form of enemies, ailments, tough situations or obstacles in your work. Any of these could make one fill up with despair and fear leaving one incapable of making the right decisions or facing the challenges of life.

However if a person is replete with divine energy then he would never accept defeat before any person or situation. He feels so filled with confidence and will power that he sees no obstacle as insurmountable. Instead of bowing to adversities he keeps endeavouring to attain to victory over even the most dangerous ordeals. It is only then that he is able to fulfill all his wishes and attain to true joy and a sense of fulfillment in life.

Presented here is a wondrous Sadhana that could help you achieve victory in every sphere in life. It is an ancient Sadhana once gifted to Lord Ram by his Guru Vishwamitra. When Ram was unable to defeat Ravan in spite of using the most powerful weapons he prayed to his Guru and sought guidance. Vishwamitra appeared and suggested that Lord Ram should try Kriyamaan Vijay Sadhana after accomplishing which a person becomes definitely victorious. Any person facing dangers, enemies, problems in life that seem insurmountable could try this Sahana.

In the night of a Monday after 10 pm have a bath and wear red clothes. Sit facing South on a red mat. Cover a wooden seat with red cloth. Write down your problems on a piece of paper with red ink. first of all pray to the Guru and chant one round of Guru Mantra. Then light eleven mustard oil lamps on the wooden seat in a straight row. Before each lamp make a mound of black sesame seeds. On each mound place a Kriyamaan. Thus one needs **eleven Kriyamaans.**

On a separate mound of sesame place the **Vijay Yantra.** Offer vermilion and rice grains on the Yantra. Then start chanting the main Mantra. One has to chant 11 rounds with **Trellokya Vijay Rosary.** Before each round pick up a Kriyamaan and speak out one of your problems. Keep it clutched in the left fist. Thus you can seek solution to 11 problems. **The Mantra to be chanted is.**

Om Ayeing Hreeng Vijayaayei
Hreeng Ayeing Phat.

After completion of one round touch the kriyamaan to the Yantra and then to the respective lamp and pray for the solution to that particular problem. Place the Kriyamaan on the respective mound. do this each time you complete one round.

After Sadhana tie all the Kriyamaans, rosary and Yantra in a red cloth and drop the bundle in a river or pond the next day. Within a few days the results shall be obvious to you. In the future if you face any problem chant the Mantra 108 times before the picture of Sadgurudev.

Sadhana Articles — 600/-

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34,
फोन : 011-27352248, 11-27356700

RNI No. **RAJ/BIL/2010/34546**
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2013-2015

Printing Date : 15-16 May, 2015
Posting Date : 21-22 May, 2015

माह : जून एवं जुलाई माह में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
01-02-03 जून
14-15-16 जुलाई

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
- - -
17-19-24 जुलाई

प्रेषक -
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
फोन : 0291-2433623, 2432209
0291-2432010